VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

PT 365

संस्कृति

Classroom Study Material

(May 2018 to February 2019)

www.visionias.in
+91 8468022022

DELHI | JAIPUR | PUNE | HYDERABAD | AHMEDABAD | LUCKNOW

विषय सूची

1. नृत्य एवं संगीत (Dances & Music) 4

1.1. लोक एवं जनजातीय नृत्य 4
1.2. भारत का पहला संगीत संग्रहालय 5
1.3. घुमोट: गोवा का धरोहर वाद्ययंत्र 6

2. चित्रकला एवं अन्य कला शैलियाँ (Paintings & other Art Forms) 7

2.1. तंजौर चित्रकला 7
2.2. मिथिला पेंटिंग्स 8
2.3. बगरू ठप्पा छपाई 8
2.4. ऐपण 8
2.5. तोलु बोम्मालट्टा 9

3 मूर्तिकला और वास्तुकला (Sculpture and Architecture) 11

3.1. कोणार्क सूर्य मंदिर 11
3.2. खजुराहो मंदिर 11
3.3 साँची का स्तूप 12
3.4. बादशाही अशूर्खाना 13
3.5. भारत का राष्ट्रीय युद्ध स्मारक 14
3.6. राष्ट्रीय महत्व के स्मारक 15
3.7. वर्ल्ड कैपिटल ऑफ आर्किटेक्चर 15
3.8. माई सन टेम्पल कॉम्प्लेक्स 16

4. भाषा एवं साहित्य (Languages and Literature) 18

4.1.शिलप्पादिकारम 18
4.2. मैथिली भाषा 18
4.3. दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा 19

5. यूनेस्को द्वारा कृत पहलें (Initiatives of UNESCO) 20

5.1. यूनेस्को ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क स्टेटस 20
5.2 37वां यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल 21

6. पर्व (Festival) 23

6.1. संस्कृति कुम्भ 23
6.2. विश्व शांति अहिंसा सम्मेलन 24
6.3. अंबुबाची मेला 25
6.4. बेदीनखलम महोत्सव 25
6.5 बतुकम्मा उत्सव 26
6.6. नोंगक्रेम नृत्य उत्सव 26
6.7. हॉर्नबिल महोत्सव 27

VISION IAS

6.8 .अट्टुकल पोंगल.....28
6.9. मकरविलक्कु पर्व.....28

7. ऐतिहासिक घटनाएं (Historical Events).....30

7.1. पीटरमारित्जबर्ग स्टेशन घटना.....30
7.2. पाइका विद्रोह.....31
7.3. साधारण ब्रह्म समाज.....31
7.4. हाइफा का युद्ध.....32
7.5. मॉन्टेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार.....33
7.6. आज़ाद हिंद सरकार.....33

8. व्यक्तित्व (Personalities).....35

8.1. गुरु नानक देव जी.....35
8.2. संत कबीर.....36
8.3. स्वामी विवेकानंद.....37
8.4. श्री सतगुरु राम सिंहजी.....38
8.5. रामानुजाचार्य की प्रतिमा.....39
8.6. सरदार वल्लभभाई पटेल.....39
8.7. सर छोटू राम.....40
8.8. आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी.....41

9. प्राचीन भारत (Ancient History).....43

9.1. वाकाटक राजवंश.....43
9.2. हड़प्पा सभ्यता से संबंधित 'युगल की कब्र' की प्राप्ति.....43

10. सरकारी पहलें / योजनाएं एवं संस्थाएं (Government Initiatives / Schemes & Institutions).....45

10.1. एक विरासत अपनाएं.....45
10.2. सेवा भोज योजना.....46
10.3. प्रसाद योजना.....46
10.4. गांधी सर्किट.....47
10.5. भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद.....48
10.6. पर्यटन पर्व, 2018.....48
10.7. सांस्कृतिक विरासत युवा नेतृत्व कार्यक्रम.....49

11. विविध (Miscellaneous).....50

11.1 हाल ही में प्रदान किए गए भौगोलिक संकेतक.....50
11.2. भारत रत्न.....51
11.3. शांति का नोबेल पुरस्कार 2018.....52
11.4. अंतर्राष्ट्रीय गांधी शांति पुरस्कार.....53
11.5. इंदिरा गाँधी शांति पुरस्कार.....53
11.6. सियोल शांति पुरस्कार 2018.....53

VISION IAS

11.7. मैग्सेसे पुरस्कार.....54
11.8. फिलिप कोटलर प्रेसिडेंशियल अवार्ड.....54
11.9. आंध्र प्रदेश और तेलंगाना के राजकीय चिन्ह.....54
11.10. बाबाबूदन स्वामी.....55

1. नृत्य एवं संगीत (Dances & Music)

1.1. लोक एवं जनजातीय नृत्य

(Folk & Tribal Dance)

सुर्ख़ियों में क्यों?

गणतंत्र दिवस समारोह के दौरान कुछ प्रसिद्ध लोक एवं जनजातीय नृत्यों का प्रदर्शन किया गया।

प्रदर्शित नृत्यों की सूची

- **कराकट्टम लोक नृत्य: तमिलनाडु**
  - यह तमिलनाडु का एक प्राचीन लोकनृत्य है, जो **वर्षा की देवी मरिअम्मन** की स्तुति में किया जाता है।
  - नर्तक **अपने सिर पर** एक **जल कलश (करगम)** का संतुलन बनाए रखते हैं। पारम्परिक रूप से इस नृत्य को दो प्रकारों में वर्गीकृत किया जाता है यथा- **अटा करगम** और **शक्ति करगम। अटा करगम** में सिर पर अलंकृत कलशों के साथ नृत्य किया जाता है और यह आनंद एवं प्रसन्नता का प्रतीक है। इसका प्रदर्शन मुख्यत: दर्शकों के मनोरंजन हेतु किया जाता है। **शक्ति करगम** का निष्पादन आध्यात्मिक भेंट के रूप में केवल मंदिरों में किया जाता है।
- **टाकला लोक नृत्य: महाराष्ट्र**
  - यह स्थानीय जनजातीय समूहों के मध्य 'टाकला' सब्जी के आदान-प्रदान से संबंधित है।
- **कोली लोक नृत्य: महाराष्ट्र**
  - इसे मत्स्यन व्यवसाय में शामिल महिलाओं द्वारा निष्पादित किया जाता है।
- **गुजरात का मिश्रा रास**
  - रास मुख्यत: **डंडिया रास** के रूप में प्रसिद्ध है और यह गुजरात के लोकप्रिय लोक नृत्यों में से एक है।
  - मिश्रा रास/गोप रास इस नृत्य शैली के प्रकार हैं।
    - इसका प्रदर्शन पुरुषों और महिलाओं दोनों द्वारा किया जाता है।
    - यह जाति या व्यवसाय के किसी भी मानदंड पर आधारित नहीं है।
    - इसका मूल भगवान कृष्ण के रास से संबंधित लोक-कथाओं एवं दंतकथाओं में निहित है।
- **अरुणाचल प्रदेश का मोनपा**
  - यह मोनपा जनजाति का एक पारम्परिक लोक नृत्य है। यह जनजाति अरुणाचल प्रदेश के पश्चिम कामेंग एवं तवांग जिले के कुछ भागों में निवास करती है।
  - यह नृत्य लोसर महोत्सव के दौरान किया जाता है जो इस जनजाति के नव वर्ष का प्रतीक है।
- **गंगटे** लोक नृत्य, अरुणाचल प्रदेश
  - इसका प्रदर्शन पुरुषों एवं महिलाओं दोनों द्वारा किया जाता है तथा यह प्रकृति से घनिष्ठता का उत्सव है।
- **त्रिपुरा का ममिता**
  - इसे ममिता उत्सव के अवसर पर प्रदर्शित किया जाता है जो त्रिपुरी लोगों द्वारा फसल कटाई के उपलक्ष्य में मनाया जाता है।
- **सिक्किम का तमांग सेलो**
  - यह सिक्किम का एक पारम्परिक लोक नृत्य है, जिसे राज्य के **तमांग समुदाय** द्वारा संरक्षण प्रदान किया गया है।
  - इस नृत्य के साथ तमांग लोगों के एक पारम्परिक संगीत वाद्ययंत्र **दम्फू** का वादन किया जाता है।
  - इस नृत्य का प्रदर्शन दशैं या **दशहरा उत्सव** के दौरान किया जाता है।
- **अन्य प्रदर्शित नृत्य: असम का सतोइया नृत्य, जम्मू और कश्मीर का फूसिम लोक नृत्य, उत्तराखंड का हुड़का छुड़का आदि।**

संबंधित तथ्य

कर्नाटक की झांकी वर्ष 1924 में बेलगावी (भूतपूर्व बेलगाम) में आयोजित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 39वें अधिवेशन पर आधारित थी। ज्ञातव्य है कि इस अधिवेशन की अध्यक्षता महात्मा गाँधी द्वारा की गई थी। यह कांग्रेस का एकमात्र अधिवेशन था जिसकी अध्यक्षता महात्मा गाँधी ने की थी।

VISION IAS

1.2. भारत का पहला संगीत संग्रहालय

(India's First Music Museum)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- भारत का पहला संगीत संग्रहालय **थिरुवयारु (तमिलनाडु)** में स्थापित किया जाएगा, जो **संत त्यागराज** का जन्म स्थान है।
- **त्यागराज आराधना संगीत महोत्सव** का आयोजन भी थिरुवयारु में किया जाता है जो संपूर्ण विश्व से संगीत की प्रतिभाओं को आकर्षित करता है।

संत त्यागराज

- संत त्यागराज **कर्नाटक संगीत की त्रिमूर्ति** (अन्य दो मुथुस्वामी दीक्षितार और श्यामा शास्त्री हैं) में से एक है और उनकी रचनाओं में प्रेम, प्रार्थना और अपील का उद्गार है।
- वह त्रिमूर्ति में से सर्वाधिक प्रसिद्ध संगीतकार थे और **भक्ति उनकी रचनाओं का प्रमुख विषय था।**
- उनका दृढ़ विश्वास था कि **नादोपासना** (भक्ति और चिंतन को साधने के लिए संगीत का अभ्यास) केवल तभी **व्यक्ति को मोक्ष की ओर ले जा सकती है, जब इसे भक्ति के साथ सम्बद्ध किया जाए।**
- इन्होंने बिना किसी इच्छा के निःस्वार्थ साधना में महारत प्राप्त की और यह **निष्काम भक्ति** थी। वह भगवान राम के प्रबल भक्त थे और उनकी अधिकांश कृतियाँ राम की प्रशंसा में हैं।
- इन्होंने मुख्यतः **तेलुगु** में रचना की थी।
- इन्होंने **'नरस्तुति' (हित या लाभ के लिए लोगों की प्रशंसा)** का विरोध किया। यह हिंदू चिंतन में अंतर्निहित उस दर्शन और सिद्धांत का अनुसरण था जो शिक्षा और ज्ञान का अवमूल्यन नहीं होने देता।
- यह सिद्धांत **'गुरुकुलवास'** की पुरानी प्रणाली के लिए उत्तरदायी था - जिसमें शिष्य गुरु के सानिध्य में रहकर शिक्षा ग्रहण करता था और गुरु का उद्देश्य ज्ञान प्रदान करना होता था न कि धन प्राप्ति।

त्यागराज आराधना संगीत महोत्सव के बारे में

- इसे प्रत्येक वर्ष थिरुवयारु में प्रसिद्ध संगीतकार संत त्यागराज को श्रद्धांजलि अर्पित करने के उपलक्ष्य में मनाया जाता है।
- इसमें सैकड़ों संगीतकार एक साथ मिलकर **त्यागराज की पंचरत्न कृतियों** का प्रदर्शन करते हैं।

भारतीय शास्त्रीय संगीत मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित है-

हिंदुस्तानी संगीत	**कर्नाटक संगीत**
इसके उद्भव को वैदिक परंपराओं से संबद्ध किया जाता है। उल्लेखनीय है कि वैदिक काल में सामवेद के मंत्रों का उच्चारण के बजाय उनका गायन किया जाता था।	यह मुख्यतः भक्ति आंदोलन के दौरान विकसित हुआ था।
यह राग आधारित होता है।	यह कृति-आधारित होता है।
इसमें तुर्की-फ़ारसी संगीत के अनेक तत्व निहित हैं।	इस पर तुर्की-फारसी का प्रभाव नहीं है।
इसमें समय की बंदिश होती है।	इसमें किसी प्रकार की बंदिश नहीं होती है।
इसमें गायन की एक से अधिक शैलियां होती हैं, जिन्हें घराना कहा जाता है।	यह एक विशिष्ट तरीके से गायन हेतु लिपिबद्ध होता है।
इसमें तबला, सारंगी, सितार, संतूर, शहनाई, वायलिन और बांसुरी का उपयोग किया जाता है।	इसमें वीणा, मृदंगम, मंडोलिन, जलतरंगम, वायलिन और बांसुरी का उपयोग किया जाता है।

VISION IAS

1.3. घुमोट: गोवा का धरोहर वाद्ययंत्र

(Ghumot: Goa's Heritage Instrument)

सुर्ख़ियों में क्यों?

घुमोट जिसे गोवा के एक धरोहर वाद्ययंत्र के रूप में सूचीबद्ध किया गया है।

घुमोट के बारे में

- यह ढोलक की भांति एक आघात-वाद्ययंत्र है, इसे **घुमट, डक्की या बुडिके** के नाम से भी जाना जाता है।
- यह कोंकणी लोगों (जिसमें मुख्य रूप से सिद्धिस, कुडुमिस और खारविस शामिल हैं) का एक लोक वाद्ययंत्र है।
- यह **गोवा कैथोलिक्स की एक संगीत शैली 'मांडो'** का एक भाग है जिसमें भारतीय और पश्चिमी संगीत दोनों के तत्वों का समावेश है।
- यह **जागोर लोक नृत्य और डलपोड** (गोवा का नृत्य गीत) का **भी एक भाग है।**
- घुमोट के एक लघु रूप का सामान्यतया **आंध्रप्रदेश की एक लोक कथावाचन परम्परा 'बर्रकथा'** में मुख्य संगत के रूप में प्रयोग किया जाता है।

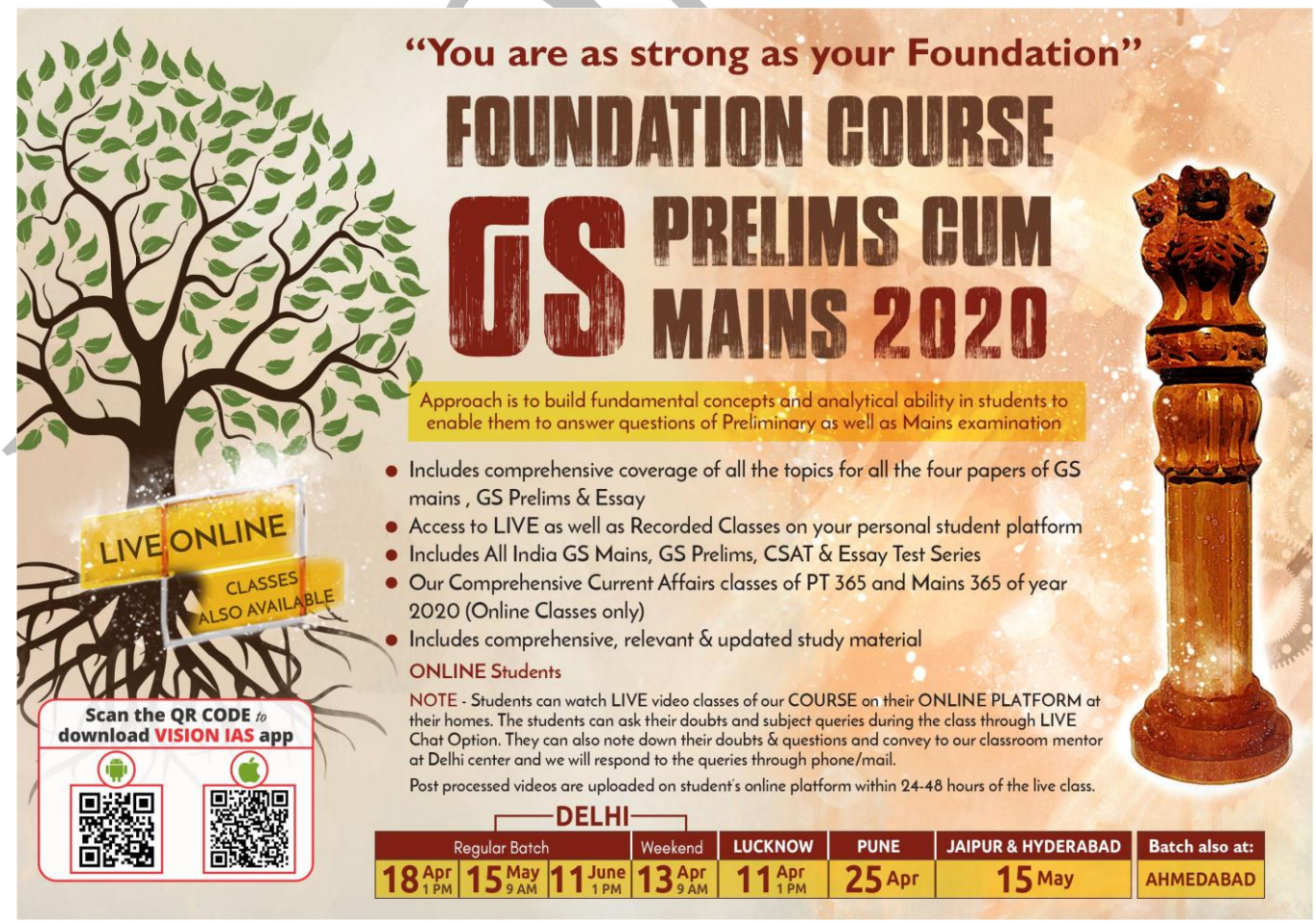

2. चित्रकला एवं अन्य कला शैलियाँ (Paintings & other Art Forms)

2.1. तंजौर चित्रकला

(Thanjavur Paintings)

सुर्ख़ियों में क्यों?

वर्तमान में रमन स्पेक्ट्रोस्कोपी का उपयोग कर यह पता लगाने का प्रयास किया जा रहा है कि तंजौर चित्रकला में प्रयुक्त सोना एवं रत्न असली हैं अथवा नहीं।

रमन स्पेक्ट्रोस्कोपी (Raman Spectroscopy)

- रमन स्पेक्ट्रोस्कोपी आणविक कंपन और क्रिस्टलीय संरचनाओं पर सूचनाएं प्रदान करने के लिए उपयोग की जाने वाली कंपन स्पेक्ट्रोस्कोपिक तकनीकों में से एक है।
- जब प्रकाश अणुओं पर पड़ता है, तो यह प्रकाश इन अणुओं द्वारा प्रकीर्णित हो जाता है।
- अधिकांश प्रकीर्णित प्रकाश में आपतित प्रकाश के समान आवृत्ति होती है, लेकिन प्रकाश के कुछ अंशों में प्रकाश और आणविक कंपन के दोलन के मध्य पारस्परिक क्रिया के कारण भिन्न आवृत्ति होती है।
- आवृत्ति परिवर्तन के साथ प्रकाश के प्रकीर्णन की घटना को रमन प्रकीर्णन कहा जाता है।

संबंधित अन्य तथ्य

- तंजौर चित्रकला **लघु चित्रकला** का एक रूप है जो 18वीं और 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में विकसित हुई थी। हालांकि, इसकी उत्पत्ति 9वीं शताब्दी के प्रारंभ में मानी जा सकती है।
- **इस चित्रकला की विशेषताओं में अर्द्ध-कीमती पत्थरों, मोती और कांच के टुकड़ों का उपयोग तथा सुदृढ़ आरेखण, छायाकरण की तकनीकें और शुद्ध एवं चटकीले वर्णों का प्रयोग शामिल हैं।**
- लघु चित्रकला में दिखने वाला **शंक्वाकार मुकुट** वास्तव में तंजौर चित्रकला की एक प्रतीकात्मक विशेषता है।
- तंजौर चित्रकला में बड़ी मात्रा में सोने का उपयोग किया जाता है, क्योंकि इसकी चमक इस चित्रकला को अधिक आकर्षक बना देती है। साथ ही इसके प्रयोग से चित्र की जीवन अवधि में भी वृद्धि हो जाती है।
- इसे **भौगोलिक संकेतक (GI)** टैग भी प्रदान किया गया है।

अन्य प्रसिद्ध लघु चित्रकला

- **पाल शैली (ग्यारहवीं से बारहवीं शताब्दी):** इस शैली के अंतर्गत लघु चित्रकला का एक उदाहरण अष्टसहस्रिका प्रज्ञापारमिता (बौद्ध धर्म) है।
- **पश्चिमी भारतीय शैली (बारहवीं से सोलहवीं शताब्दी) :** जैन साहित्य के दो अति लोकप्रिय ग्रंथ, यथा कल्पसूत्र और कालकाचार्य-कथा को बार-बार लिखा गया और चित्रित किया गया।
- **अन्य पृथक शैलियां (1500-1550 ईसवी):** इसके उदाहरणों में शामिल हैं- निमत नामा (पाककला पुस्तक); ' इस समूह में 'चौरपंचाशिका' की लघु चित्रकला, गीत गोविन्द, 'भागवत' पुराण और 'रागमाला' समेत कुल्हाकदार समूह, लौरचंद।
- **मुगल शैली (1560-1800 ईसवी):** इस युग के विभिन्न चित्रकला संग्रहों में शामिल हैं -तूती-नामा, हमज़ा-नामा, सादी का गुलिस्ताँ, रज़्म-नामा, दरब-नामा, अयार-ए-दानिश और अनवर-ए-सुनावली (जहांगीर के अधीन)
- **दक्कनी शैली (लगभग 1560-1800 ईसवी):** अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुण्डा, हैदराबाद, तंजावुर
- **मध्य भारत और राजस्थानी शैली (17वीं से 19वीं शताब्दी)**: मालवा, मेवाड़, बूंदी, कोटा, आमेर-जयपुर, मारवाड़, बीकानेर, किशनगढ़
- **पहाड़ी शैली (17वीं से 19वीं शताब्दी):** बशोली, गुलेर, कांगड़ा, कुल्लू -मंडी
- **ओडिशा (17वीं से 19वीं शताब्दी)**: गीत गोविन्द

VISION IAS

2.2. मिथिला पेंटिंग्स (Mithila Painting)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में बिहार के मधुबनी रेलवे स्टेशन को मिथिला पेंटिंग से अलंकृत किया गया है।

मिथिला पेंटिंग के विषय में

- मधुबनी/मिथिला पेंटिंग **बिहार और नेपाल के मिथिला क्षेत्र** में प्रचलित है। इसके नाम की उत्पत्ति **बिहार के मधुबनी कस्बे** से हुई है।
- इस पेंटिंग की प्रमुख विशेषता **जटिल ज्यामितिक प्रतिरूप हैं।** ये पेंटिंग्स **त्योहारों,धार्मिक अनुष्ठानों आदि सहित विशेष अवसरों की आनुष्ठानिक सामग्रियों को दर्शाने हेतु जानी जाती हैं।**
- पेंटिंग में प्रयुक्त रंग **प्राय: चटख** होते हैं और काजल एवं गेरू जैसे वर्णकों का प्रयोग काले तथा भूरे रंगों के निर्माण हेतु किया जाता है।
- इसमें सामान्यतः दोहरी रेखा के किनारों, चटख रंगों, अलंकृत पुष्प प्रतिमानों और अतिरंजित मुख सौन्दर्य के प्रयोग को शामिल किया जाता है तथा **यह बिना किसी छायांकन के एक द्विविमीय** पेंटिंग है।
- पेंटिंग्स के सृजन में समकालीन **कूचियों** के स्थान पर **टहनियों, माचिस की तीलियों और यहाँ तक की अँगुलियों का भी** प्रयोग किया जाता है।
- पेंटिंग्स गाय के गोबर और कीचड़ के मिश्रण से **ताजा पलस्तर की गई दीवारों** पर **चावल के पेस्ट एवं वानस्पतिक रंगों** के प्रयोग द्वारा की जाती हैं। वर्तमान में व्यावसायिक उद्देश्यों हेतु कागज, वस्त्र, कैनवास आदि पर चित्रकारियां की जाती हैं तथा इस कार्य में महिलाओं के साथ पुरुष भी सहभागी होते हैं।
- मिथिला चित्रकारी को **भौगोलिक संकेतक (GI) टैग** प्रदान किया गया है।

2.3. बगरू ठप्पा छपाई

(Bagru Block Printing)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- हाल ही में, पारंपरिक बगरू ब्लॉक प्रिंटिंग कला को संरक्षित करने हेतु बगरू, (राजस्थान) में तीतानवाला संग्रहालय' का उद्घाटन किया गया था।

बगरू ब्लॉक प्रिंटिंग से संबंधित तथ्य

- यह **राजस्थान के बगरू गाँव में** प्राकृतिक रंगों के साथ **छिप्पा समुदाय** द्वारा की जाने वाली छपाई की एक पारम्परिक तकनीक है।
- परंपरागत रूप से, बगरू पर मुद्रित **रूपांकनों** को गहरी रेखाओं के साथ बड़ा किया जाता है। रूपांकनों **में वन्य पुष्प, कलियाँ, पत्ते और मुद्रित ज्यामितीय प्रतिरूप शामिल हैं।**
- बगरू में मुख्यतः **लाल और काले** रंग का प्रयोग किया जाता है।

भारत की कुछ अन्य महत्वपूर्ण पारंपरिक ठप्पा छपाई तकनीकें

- **गुजरात:** अजरक प्रिंट
- **राजस्थान**: सांगानेरी, अजरक, डाबू
- **मध्य प्रदेश:** बाघ प्रिंट, भैरवगढ़ प्रिंट (बटिक)
- **आंध्र प्रदेश:** कलमकारी

कलकत्ता, सेरामपुर (पश्चिम बंगाल), वाराणसी और फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश) भी भारत में ठप्पा छपाई के महत्वपूर्ण केंद्र हैं।

2.4. ऐपण

(Aipan)

- **ऐपण परियोजना** उत्तराखंड के कुमाऊँ क्षेत्र की प्रसिद्ध कला शैली ऐपण के पुनरुत्थान के उद्देश्य के साथ आरम्भ की गई है।

VISION IAS

ऐपण के बारे और अधिक जानकारी:

- इस कला शैली में पृष्ठभूमि को लाल रंग की मृत्तिका (गेरू) से तैयार किया जाता है तत्पश्चात पिसे हुए चावल से बनाए गए एक श्वेत लेप (पेस्ट) से आकृतियों की रचना की जाती है।
- पारम्परिक रूप से इसे दीवारों और फर्शों पर बनाया जाता है।

2.5. तोलु बोम्मालट्टा

(Tholu Bommalata)

सुर्ख़ियों में क्यों ?

आंध्र प्रदेश की छाया कठपुतली नाट्य परम्परा तोलु बोम्मालट्टा पतनशील अवस्था में है।

तोलु बोम्मालट्टा से संबंधित तथ्य

- इसका शाब्दिक अर्थ है "चमड़े की कठपुतलियों का नृत्य" (तोलु-चमड़ा और बोम्मालट्टा- कठपुतली नृत्य)।
- कठपुतलियाँ आकार में बड़ी होती हैं तथा उनकी कमर, गर्दन, कंधे और घुटनों में जोड़ होते हैं।
- कठपुतलियाँ मुख्यत: एंटीलोप, स्पॉटेड डियर तथा बकरी की खाल से बनाई जाती हैं। प्रमुख (Auspicious) पात्र एंटीलोप और मृग की खाल से बनाए जाते हैं।
- इन कठपुतलियों को दोनों तरफ से रंगा जाता है। इसलिए ये कठपुतलियाँ पर्दे पर रंगीन छाया प्रदर्शित करती हैं।
- कठपुतलियाँ चलाने वाले त्रि-आयामी प्रभाव उत्पन्न करने हेतु भुजाओं और हाथों की सजीव (animated) गतिविधि के साथ रामायण और महाभारत के जुड़वां महाकाव्यों से कथाओं का आख्यान करते हैं।

भारत में कठपुतलियां :

- कठपुतली कला के प्राचीनतम सन्दर्भ पहली एवं दूसरी सदी ईसा पूर्व में रचित तमिल ग्रन्थ 'शिलप्पादिकारम' में पाए जाते हैं।
- पुतलकार कहानी का वर्णन गद्य या पद्य के रूप में करता है जबकि कठपुतलियों की प्रस्तुति दृश्य प्रभाव लाने के लिए की जाती है।
- भारत में पारंपरिक कठपुतली नाटकों की कथावस्तु पौराणिक साहित्य, दंत कथाओं और किंवदंतियों से ली जाती है।
- भारत में मुख्य रूप से चार प्रकार की कठपुतली पायी जाती है: **धागा कठपुतलियाँ, छाया कठपुतलियाँ, छड़ कठपुतलियाँ और दस्ताना कठपुतलियाँ।**
- **धागा कठपुतलियाँ:** धागा कठपुतलियों के जुड़े हुए अंग धागों द्वारा नियंत्रित किए जाते हैं, प्रसिद्ध धागा कठपुतलियों में से कुछ निम्नलिखित हैं:
  - कठपुतली, राजस्थान
  - कुनढेई, ओडिशा
  - गोम्बयेट्टा, कर्नाटक
  - बोम्मलता, आन्ध्र प्रदेश
- **छाया कठपुतली:** छाया कठपुतलियाँ चपटे आकार की होती हैं जिन्हे छाया के सृजन हेतु पर्दे के पीछे से एक तीव्र प्रकाश स्रोत से प्रदीप्त किया जाता है। कुछ प्रसिद्ध छाया कठपुतली निम्नलिखित हैं:
  - तोगलू गोम्बयेट्टा, कर्नाटक
  - तोलु बोम्मालता, आन्ध्र प्रदेश
  - **रावण छाया उड़ीसा**
  - तोलपावाकुथू वेल्लाचेट्टी, केरल
  - चमदायचे बाहुल्या, महाराष्ट्र
- **दास्ताना कठपुतली (Glove Puppetry):** दस्ताना कठपुतली को भुजा, कर या हथेली कठपुतली भी कहा जाता है। इन कठपुतलियों का सिर पेपर मेशे (papier mache), कपड़े या लकड़ी का बना होता है तथा गर्दन के नीचे से दोनों हाथ बाहर

VISION IAS

निकले रहते हैं। शेष शरीर के नाम पर केवल एक लहराता घाघरा होता है। कठपुतली संचालक के हाथों से विभिन्न प्रकार की गतिविधियों को दर्शाने के लिए इन कठपुतलियों को बनाया जाता है, जैसे- पावाकुथु (केरल)।

- **छड़ पुतली:** छड़ कठपुतली वैसे तो दास्ताना कठपुतली का अगला चरण है लेकिन यह उससे काफी बड़ी होती है तथा नीचे स्थित छड़ों पर आधारित रहती है कुछ प्रसिद्ध छड़ कठपुतलियाँ निम्नलिखित हैं:
  - पुतुलनाच कठपुतली, पश्चिम बंगाल
  - छड़ कठपुतली, ओडिशा
  - यमपुरी ,विहार

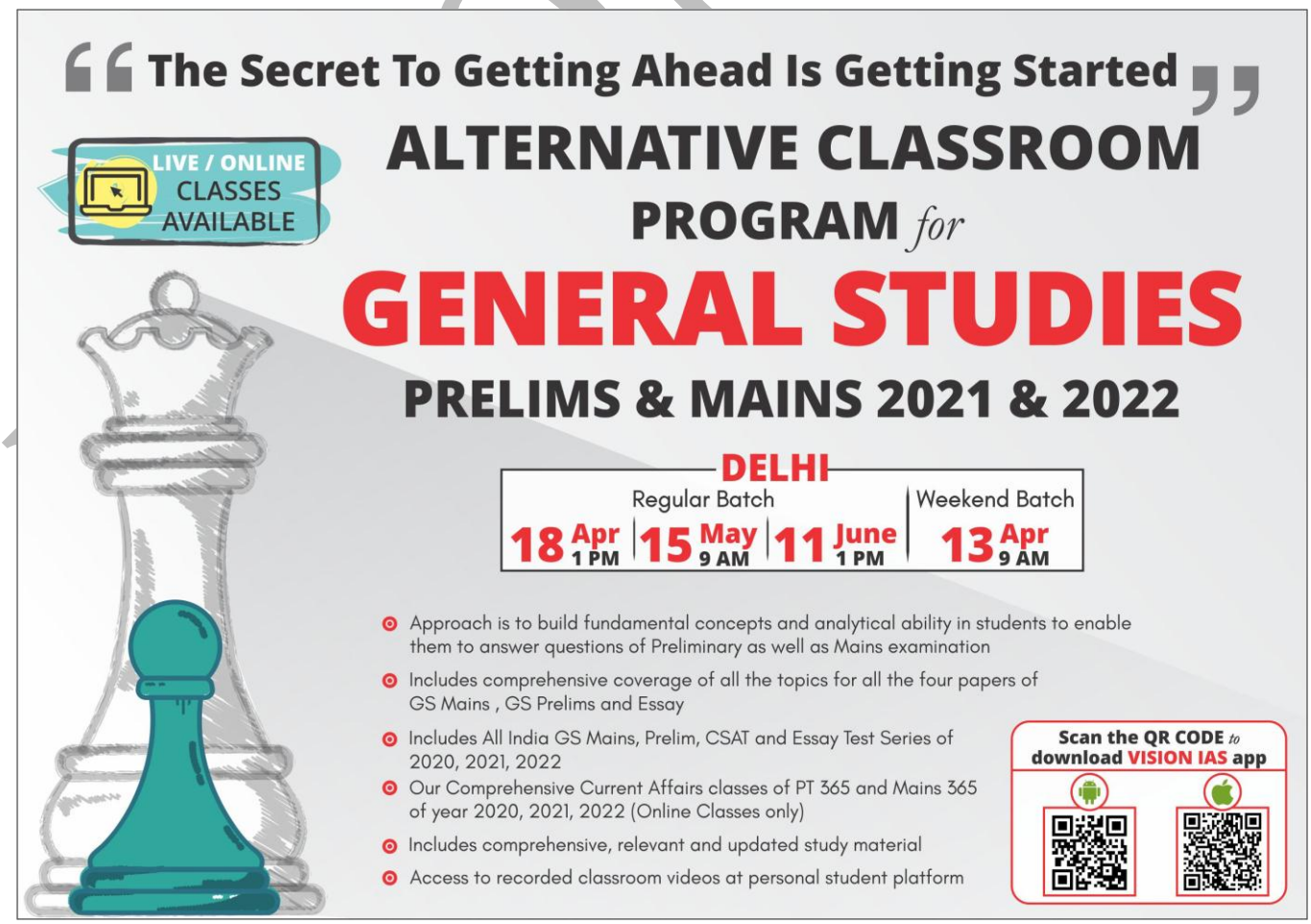

3 मूर्तिकला और वास्तुकला (Sculpture and Architecture)

3.1. कोणार्क सूर्य मंदिर

(Konark Sun Temple)

हाल ही में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा कोणार्क सूर्य मंदिर के जीर्णोद्धार में कथित रूप से अनियमितताएं पायी गईं। कोणार्क सूर्य मंदिर को 1984 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था।

भारत में स्थित अन्य सूर्य मंदिर

- दक्षिणार्क मंदिर - गया (बिहार)
- मार्तंड सूर्य मंदिर - जम्मू और कश्मीर
- मोढेरा सूर्य मंदिर - गुजरात
- सूर्य मंदिर-ग्वालियर (मध्य प्रदेश)
- सूर्य नारायण मंदिर – अरसावल्ली (आंध्र प्रदेश)
- सूर्यनार मंदिर - कुंभकोणम (तमिलनाडु)
- सूर्य मंदिर - ओसियां (राजस्थान)

कोणार्क सूर्य मंदिर के बारे में

- ओडिशा में स्थित, 13 वीं शताब्दी में निर्मित कोणार्क का सूर्य मंदिर कलात्मक भव्यता और तकनीकी निपुणता की वृहद् संकल्पना का उदाहरण है।
- गंग वंश के महान शासक राजा नरसिम्हदेव प्रथम ने इस मंदिर का निर्माण कराया था। चूंकि शासक सूर्य की पूजा करते थे, इसलिए मंदिर को सूर्य देव के रथ के रूप में निर्मित किया गया था।
- इसे 24 पहियों वाले एक भव्य रथ के रूप में निर्मित किया गया है जिसे 7 शक्तिशाली घोड़ों द्वारा खींचा जा रहा है। प्रत्येक पहिये का व्यास लगभग 10 फ़ीट है।
- यह ओडिशा शैली की वास्तुकला या कलिंग वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।
- कोणार्क, ओडिशा के स्वर्णिम त्रिभुज (अन्य मंदिर हैं - पुरी का जगन्नाथ मंदिर और भुवनेश्वर का लिंगराज मंदिर) की तीसरी भुजा का प्रतिनिधित्व करता है।
- यूरोपीय नाविकों द्वारा इस मंदिर का उपयोग नौवहन संकेतक के रूप में किया जाता था। उन्होंने इसके काले रंग और जहाज़ों को किनारे की तरफ खींच कर उन्हें नुकसान पहुंचाने वाली इसकी चुंबकीय शक्ति के कारण इसे 'ब्लैक पैगोडा' कहा।

3.2. खजुराहो मंदिर

(Khajuraho Temples)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, मध्य प्रदेश सरकार द्वारा खजुराहो मंदिर में खजुराहो नृत्य महोत्सव का आयोजन किया गया।

खजुराहो मंदिरों के बारे में

- खजुराहो का ऐतिहासिक स्मारक समूह, मध्य प्रदेश के छतरपुर में स्थित हिंदू और जैन मंदिरों का एक समूह है और यह **भारत में यूनेस्को द्वारा घोषित विश्व धरोहर स्थलों** में से एक है।
- इसका निर्माण **चंदेल राजवंश द्वारा 950-1050 ईस्वी** के मध्य करवाया गया था। यह **स्थापत्य कला की नागर शैली का आदर्श उदाहरण** और कामुक मूर्तियों (सभी मूर्तियों का केवल 10%) के लिए प्रसिद्ध है। आध्यात्मिक अनुभव के रूप में कामुक अभिव्यक्ति को समान महत्व दिया जाता है, और इसे एक अपेक्षाकृत बड़ी लौकिक संपूर्णता के भाग के रूप में देखा जाता है।
- यह **पाण्डु रंग के बलुआ पत्थर** से निर्मित है और प्रायः ऊंची जगती पर बनाया गया है। लगभग सभी मंदिरों में एक भीतरी पूजा स्थल (गर्भगृह), सभागृह या मंडप और प्रदक्षिणा पथ युक्त एक प्रवेश ड्योढ़ी है।

VISION IAS

- मंदिर के शिखर अथवा सभी अंगशिखर (उरुशृंग) वर्तुलाकार पिरामिड के आकार में मंदिर को लंबवत विस्तार प्रदान करते हुए ऊपर की ओर उठे हुए हैं। इन शिखरों का लंबवत विस्तार एक क्षैतिज धारीदार तश्तरीनुमा संरचना तक होता है जिसे आमलक कहते हैं। इसके ऊपर कलश अवस्थित होता है।
- खजुराहो के कुछ मंदिर पांच पूजा स्थलों के एक समूह के रूप में हैं जिसमें से मुख्य मंदिर के चारों कोनों पर चार मंदिर निर्मित किए गए हैं। मंदिरों की इस प्रकार की संरचना को पंचायतन शैली कहा जाता है।
- **कंदरिया महादेव मंदिर (सबसे बड़ा),** देवी जगदम्बा मंदिर, चित्रगुप्त मंदिर, विश्वनाथ मंदिर, पार्वती मंदिर, **लक्ष्मण या चतुर्भुज मंदिर (विष्णु को समर्पित);** वाराह मंदिर; चौंसठ योगिनी मंदिर (एकमात्र मंदिर जो पूरी तरह से ग्रेनाइट पत्थर से बना है और चौंसठ योगिनियों को समर्पित है) कला और स्थापत्य की दृष्टि से अत्यंत प्रसिद्ध और अध्ययन योग्य हैं।
- खजुराहो का दक्षिण-पूर्व भाग जैन मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। पार्श्वनाथ मंदिर सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इसे घंटई मंदिर भी कहा जाता है ,क्योंकि इसके स्तंभ घंटों और जंजीरनुमा अलंकरणों से युक्त हैं।

3.3 साँची का स्तूप

(Sanchi Stupa)

सुर्ख़ियों में क्यों ?

हाल ही में, केंद्रीय मंत्रिमंडल ने वियतनाम के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया है। यह समझौता ज्ञापन **सांची स्तूप और वियतनाम के फो मिन्ह पैगोडा को दर्शाने वाले** संयुक्त डाक टिकट से सम्बंधित है।

साँची का स्तूप

- यह भारत की प्राचीनतम संरचनाओं में से एक है और सम्राट अशोक द्वारा तीसरी शताब्दी ई.पू. में इसका निर्माण कराया गया था।
- ऐसा माना जाता है कि इसे शुंग सम्राट पुष्यमित्र शुंग के शासनकाल के दौरान ध्वस्त कर दिया गया था। जबकि पुष्यमित्र के पुत्र अग्निमित्र शुंग के शासन काल में इसका जीर्णोद्धार किया गया।
- **सातवाहन शासन** के दौरान, तोरणद्वार और वेदिका का निर्माण किया गया और इसे अत्यधिक अलंकृत किया गया। तोरणद्वार पर कथात्मक (जातक कथाएं) आकृतियों से अलंकरण किया गया है। इन संरचनाओं पर बोधि वृक्ष के नीचे संबोधि (निर्वाण) प्राप्त करते हुए भगवान बुद्ध के चित्र को उकेरा गया है। भगवान बुद्ध के जीवन से सम्बंधित विभिन्न घटनाओं के दृश्यों का भी अंकन किया गया है।
- जैसा कि चित्र में प्रदर्शित है कि स्तूप के मुख्य भाग हैं -अंड, हर्मिका, छत्र, प्रदक्षिणापथ, मेधि, वेदिका और तोरण।
- सांची स्तूप में चार सुंदर नक्काशीदार तोरण या द्वार हैं जो बुद्ध के जीवन और जातक की विभिन्न घटनाओं को दर्शाते हैं।
- इसे 1989 में यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल के रूप में सूचीबद्ध किया गया है।

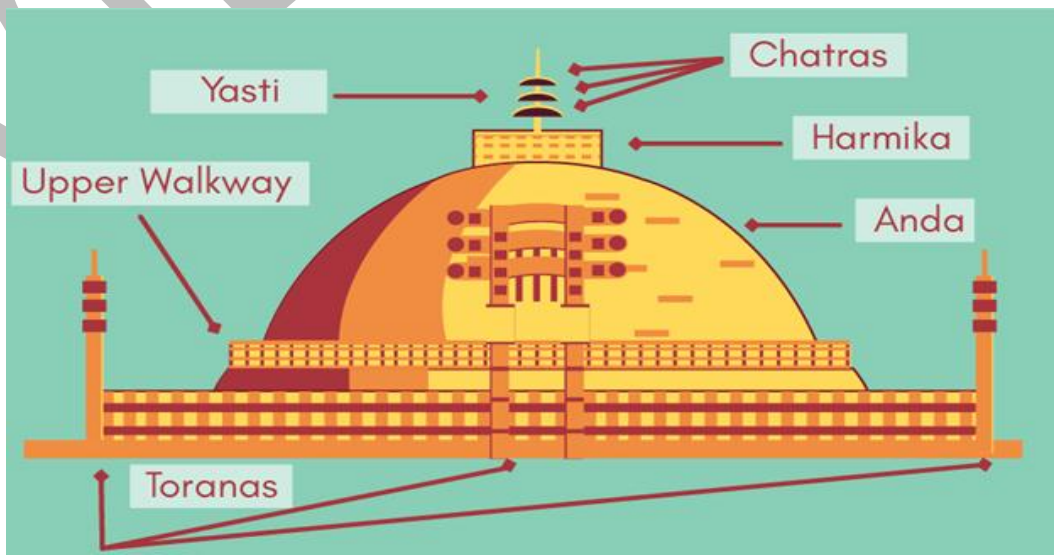

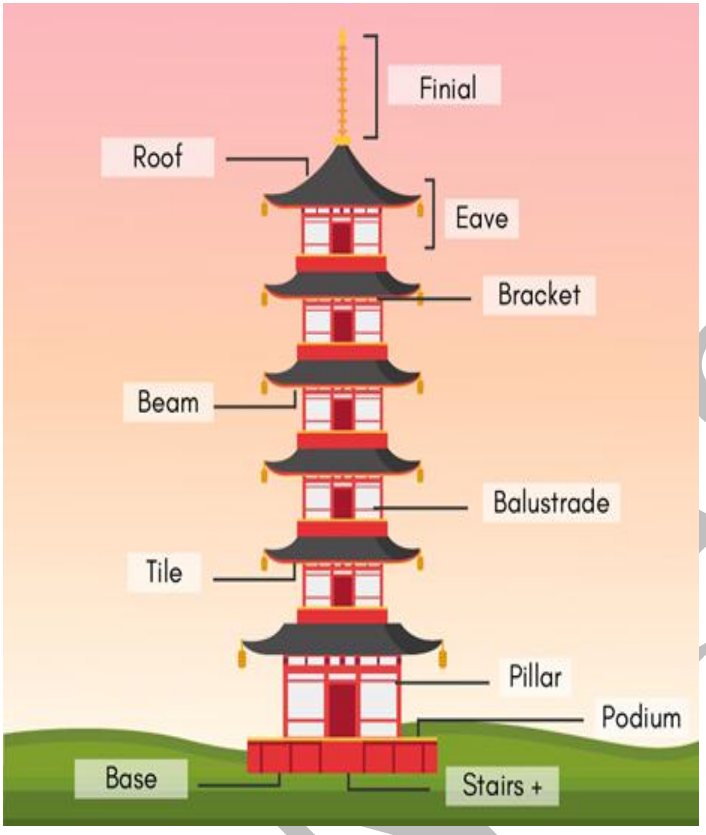

वियतनाम का फो मिन्ह पैगोडा

- यह मूल रूप से लि राजवंश (Ly Dynasty) के दौरान बनाया गया था और बाद में 1262 में ट्रान राजवंश के दौरान इसका विस्तार किया गया।
- यह **उच्च वर्गीय मन्दारियों** और ट्रान राजदरबार के अभिजात वर्ग की उपासना का प्रमुख केंद्र था और यह उनके धार्मिक जीवन को प्रेरित करता था।

स्तूप और पैगोडा में क्या अंतर है?

- सामान्यतः, भारत या दक्षिण पूर्व एशिया में "स्तूप" एक विशेष प्रकार की बौद्ध संरचना हेतु प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द है, जबकि "पैगोडा" पूर्वी एशिया में मंदिर या एक पवित्र भवन को संदर्भित करता है जिसमें प्रवेश किया जा सकता है और यह धर्मनिरपेक्ष भी हो सकता है।
- स्तूप एक अर्द्धगोलाकार गुंबद के आकार का ढांचा है जिसमें बुद्ध या बोधिसत्व के अवशेष रखे जाते हैं, जबकि पैगोडा तश्तरीनुमा संरचनाओं का समूह है।
- विशिष्ट रूप से निर्मित स्तूप के विपरीत, पैगोडा में विभिन्न स्तरों पर वास्तविक आंतरिक स्थान होता है।
- पैगोडा नेपाल, चीन, जापान, कोरिया, वियतनाम, म्यांमार, श्रीलंका आदि में प्राप्त होते हैं।

3.4. बादशाही अशूर्खाना

(Badshahi Ashoorkhana)

सुर्ख़ियों में क्यों?

तेलंगाना सरकार और आगा खान ट्रस्ट दोनों बादशाही अशूर्खाना स्मारक के जीर्णोद्धार के लिए कार्य कर रहे हैं।

बादशाही अशूर्खाना से संबंधित तथ्य

- बादशाही अशूर्खाना भारत के हैदराबाद के चार मीनार के पास एक **शिया मुस्लिम शोक स्थल** है। इसका निर्माण कर्बला के युद्ध में इमाम हुसैन के शहादत की स्मृति में करवाया गया था और इस स्थल पर मुहर्रम के त्यौहार का आयोजन किया जाता है।
- इसका निर्माण चार मीनार के निर्माण के तीन वर्ष पश्चात् अर्थात् 1611 में **मुहम्मद कुली कुतुब शाह** द्वारा करवाया गया था।

- अशूर्खाना अपने उत्कृष्ट टाइल वर्क के लिए प्रसिद्ध है जिसने चार शताब्दियों के बाद भी अपनी चमक और जीवंत रंगों को बनाए रखा है।

मुहम्मद कुली कुतुब शाह से संबंधित तथ्य

- यह गोलकोंडा के कुतुब शाही वंश के पांचवें सुल्तान थे, जिसने 1580 में राज-गद्दी प्राप्त की।
- इसने हैदराबाद शहर की स्थापना की और यहाँ वास्तुकला संबंधी एक महत्वपूर्ण इमारत **चारमीनार** का निर्माण कराया। उसने चार कमान मेहराब का भी निर्माण करवाया।
- वह तुलसीदास, मीराबाई और सूरदास के समकालीन थे उनकी कविताएँ जनसाधारण से संबंधित थी तथा प्रेम एवं रहस्यमयी अनुभवों की सार्वभौमिकता को प्रकट करती हैं।
- उसके शासनकाल के दौरान, जीन बैप्टिस्ट टैवर्नियर ने यात्रा की थी और कुतुब शाही मकबरों के परिसर में यात्रा के संबंध में लिखा। उसने लिखा कि यहां कालीन बिछाए जाते थे और जो भी अंदर जाता, उसे पुलाव परोसा जाता था।

कर्बला का युद्ध

- यह 680 ईस्वी आशूरा या मुहर्रम के 10वें दिन हुआ था। इराक के कर्बला नामक एक स्थान पर मामूली सैन्य झड़प हुई थी, जिसमें अल-हुसैन (पैगंबर के पोते) के नेतृत्व में एक छोटा दल, उम्मयद खलीफा यजीद द्वारा भेजी गई सेना द्वारा पराजित हो गया और उसकी हत्या कर दी गयी थी।
- शिया मुसलमानों (अल-हुसैन के अनुयायी) के बीच लड़ाई का दिन जो मुहर्रम के 10वें दिन हुयी थी, जो जन सामान्य के शोक का एक वार्षिक पवित्र दिन बन गया।

3.5. भारत का राष्ट्रीय युद्ध स्मारक

(India's National War Memorial)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में प्रधानमंत्री द्वारा दिल्ली के इंडिया गेट परिसर में भारत के राष्ट्रीय युद्ध स्मारक (प्रथम बार वर्ष 1960 में प्रस्तावित) का उद्घाटन किया गया।

स्मारक से संबंधित तथ्य

- यह 40 एकड़ क्षेत्र में विस्तारित है, **इसे स्वतंत्रता पश्चात् राष्ट्र की सुरक्षा में शहीद होने वाले सैनिकों के सम्मान में निर्मित किया गया है।**
- यह संयुक्त राष्ट्र शांति-स्थापना अभियानों, मानवीय सहायता आपदा राहत (HADR) और उपद्रव-रोधी कार्रवाइयों में भेजे गए भारतीय सैनिकों के बलिदान को भी श्रद्धांजलि देता है।
- स्मारक की संरचना में चार संकेंद्री वृत्त, एक केन्द्रीय प्रस्तर स्मारक स्तम्भ (15.5 मी.) तथा एक अमर ज्योति शामिल है। स्मारक की कुल लागत 176 करोड़ रूपए है।
- संकेंद्री वृत्तों को एक चक्रव्यूह (प्राचीन भारतीय युद्ध रचना) के रूप में डिजाइन किया गया है तथा इन्हें निम्नलिखित उपनाम प्रदान किए गए हैं:
  - **अमर चक्र अथवा अमरत्व का वृत्त:** अंतरतम वृत्त, इसके केंद्र में स्मारक स्तम्भ स्थापित किया गया है, जिसके शीर्ष पर एक कांस्य सिंह प्रतिमा निर्मित की गई है। **इसमें एक कोटर (hollow) बना हुआ है, जहां अमर ज्योति स्थित है।**
  - **वीरता चक्र अथवा शौर्य का वृत्त:** गंगासागर, लोंगेवाला, टिथवाल, रिज़ंगला के युद्धों और ऑपरेशन मेघदूत (1984), ट्राइडेंट (1971) को दर्शाती कांस्य भित्ति चित्रों के साथ एक आवृत दीर्घा (covered gallery) है।
  - **त्याग चक्र अथवा बलिदान का वृत्त:** रक्षा चक्र के भीतर दो वृत्त (25,942 ग्रेनाइट पट्टिकाओं से निर्मित) 16 भित्तियों से बने हैं। यह चक्र चीन और पाकिस्तान के साथ हुए युद्धों में तथा श्रीलंका में भारतीय शान्ति स्थापक बल जैसी कार्रवाइयों में वीरगति को प्राप्त हुए सैनिकों को समर्पित है।

VISION IAS

- **रक्षा चक्र अथवा सुरक्षा का वृत्त:** 600 वृक्षों से युक्त बाह्यतम वृत्त जो अनवरत (दिन-रात) राष्ट्र की क्षेत्रीय अखंडता की सुरक्षा करने वाले सैनिकों का प्रतीक है।

- पर म योद्धा स्थल में भारत के सर्वोच्च सैन्य सम्मान परमवीर चक्र के 21 प्राप्तकर्ताओं की अर्द्ध प्रतिमाएं निर्मित की गई हैं तथा उनके वीरतापूर्ण कार्यों के लघु विवरण दिए गए हैं।

3.6. राष्ट्रीय महत्व के स्मारक

(Monuments of National Importance)

सुर्खियों में क्यों?

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) ने 2018 में 6 स्मारकों को राष्ट्रीय महत्व के स्मारकों के रूप में घोषित किया है।

अन्य संबंधित तथ्य

- प्राचीन स्मारक एवं पुरातात्विक स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958 की धारा 4 के तहत, **कम से कम सौ वर्षों से विद्यमान** ऐतिहासिक, पुरातात्विक या कलात्मक महत्व के प्राचीन स्मारकों या पुरातात्विक स्थलों को **'राष्ट्रीय महत्व के स्मारक' के रूप में घोषित किया जा सकता है।**
- राष्ट्रीय महत्व के स्मारक के रूप में घोषित स्मारकों के संरक्षण और रखरखाव का कार्य ASI द्वारा किया जाता है। यह कार्य स्मारकों की संरचनात्मक मरम्मत, रासायनिक संरक्षण और उनके आस-पास पर्यावरणीय विकास के माध्यम से किया जाता है जो एक नियमित और निरंतर प्रक्रिया है।

6 स्मारक निम्नलिखित हैं:

- 125 वर्ष पुराना नागपुर (महाराष्ट्र) स्थित उच्च न्यायालय भवन,
- आगरा (उत्तर प्रदेश) में दो मुगलकालीन स्मारक
  - आगा खान की हवेली
  - हाथी खाना
- अलवर (राजस्थान) स्थित नीमराना की प्राचीन बावड़ी
- बोलांगिर (ओडिशा) स्थित मंदिरों का समूह
- विष्णु मंदिर, पिथौरागढ़ (उत्तराखंड)

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)

- **संस्कृति मंत्रालय** के अधीन **ASI**, पुरातत्वीय अनुसंधान तथा राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासतों के संरक्षण के लिए एक प्रमुख संगठन है।
- ASI का प्रमुख कार्य राष्ट्रीय महत्व के प्राचीन स्मारकों तथा पुरातत्वीय स्थलों और अवशेषों का रख-रखाव करना है।
- इसके अतिरिक्त, यह **प्राचीन स्मारक एवं पुरातात्विक स्थल और अवशेष अधिनियम, 1958** के प्रावधानों के अनुसार देश में सभी पुरातत्वीय गतिविधियों को विनियमित करता है ।
- इसके द्वारा **पुरावशेष तथा बहुमूल्य कलाकृति अधिनियम, 1972** को भी विनियमित किया जाता है।
- इसकी स्थापना 1861 में अलेक्जेंडर कनिंघम द्वारा की गई थी जो इसके प्रथम महानिदेशक भी थे।

3.7. वर्ल्ड कैपिटल ऑफ आर्किटेक्चर

(World Capital of Architecture)

सुर्खियों में क्यों?

संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) ने ब्राजील के शहर **रियो डी जेनेरियो** को वर्ष 2020 के लिए 'वर्ल्ड कैपिटल ऑफ आर्किटेक्चर' घोषित किया है।

VISION IAS

अन्य संबंधित तथ्य

- **प्रथम वर्ल्ड कैपिटल ऑफ आर्किटेक्चर के रूप में रियो डी जेनेरियो में 'ऑल द वर्ल्डस, जस्ट वन वर्ल्ड' (All the worlds. Just one world)'** थीम के तहत कई कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा और अंतर्राष्ट्रीय रूप से स्वीकृत सतत विकास के लिए **2030 एजेंडे के 11वें लक्ष्य 'सुरक्षित, लचीले और टिकाऊ शहर और मानव बस्तियों का निर्माण'** को प्रोत्साहित किया जाएगा।"
- रियो डी जेनेरियो में आधुनिक और औपनिवेशिक वास्तुकला का मिश्रण पाया जाता है जहाँ **क्राइस्ट द रिडीमर** (अर्थात् उद्धार करने वाले ईसा मसीह) की प्रतिमा जैसे विश्व प्रसिद्ध स्थल **और म्यूज़ियम ऑफ़ टुमारो (Museum of Tomorrow)** जैसी समकालीन संरचनाएं स्थित हैं।

वर्ल्ड कैपिटल ऑफ आर्किटेक्चर पहल के बारे में

- इसे 2018 में लॉन्च किया गया था जो यूनेस्को और इंटरनेशनल यूनियन ऑफ आर्किटेक्ट्स (UIA) की एक संयुक्त पहल है।
- वर्ल्ड कैपिटल ऑफ आर्किटेक्चर का उद्देश्य संस्कृति, सांस्कृतिक विरासत, शहरी नियोजन और वास्तुकला के दृष्टिकोण से गंभीर वैश्विक चुनौतियों के संबंध में वार्ता हेतु एक अंतरराष्ट्रीय मंच तैयार करना है।
- **यूनेस्को द्वारा UIA के वैश्विक सम्मेलन (World Congress) की भी मेज़बानी की जाती है।** इसका आयोजन तीन वर्षों में एक बार किया जाता है।

इंटरनेशनल यूनियन ऑफ आर्किटेक्ट्स (UIA) के बारे में

- यह UNESCO द्वारा मान्यता प्राप्त एक **गैर-सरकारी संगठन है** जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संचालित एकमात्र आर्किटेक्चरल यूनियन है।
- इसकी स्थापना 1948 में स्विट्ज़रलैंड के लुसाने में की गई थी। इसका उद्देश्य वास्तुकारों के राष्ट्रीय संगठनों के एक संघ के माध्यम से विश्व के वास्तुकारों को एकजुट करना है।

3.8. माई सन टेम्पल कॉम्प्लेक्स

(My Son Temple Complex)

सुर्ख़ियों में क्यों?

वियतनाम की हाल की यात्रा के दौरान भारत के राष्ट्रपति ने क्वांग प्रांत स्थित माई सन टेम्पल कॉम्प्लेक्स की यात्रा की।

माई सन टेम्पल के बारे में

- यह वियतनाम में स्थित, विस्मृत और आंशिक रूप से नष्ट हिंदू मंदिरों का एक समूह है, जिसका निर्माण वियतनाम के चंपा राजाओं द्वारा चौथी और चौदहवीं शताब्दी ईस्वी के मध्य करवाया गया था।
- **यूनेस्को** द्वारा इसे एक **विश्व धरोहर स्थल** के रूप में मान्यता प्रदान की गयी है।
- यहाँ **कृष्ण और विष्णु** जैसे हिन्दू देवताओं से संबंधित कई मंदिरों का निर्माण किया गया, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण **शिव मंदिर** है। (इसमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण **भद्रेश्वर मंदिर** है।)
- इन मंदिरों में मेरु पर्वत की महत्ता और पवित्रता के प्रतीक के तौर पर विभिन्न वास्तुशिल्प डिजाइन निर्मित हैं। उल्लेखनीय है कि इस पौराणिक पवित्र पर्वत को ब्रह्मांड के केंद्र में स्थित माना गया है जो हिंदू देवताओं का घर है।
- ये मंदिर पत्थर के स्तंभों एवं ईंटों से निर्मित हैं और हिंदू पौराणिक कथाओं के दृश्यों को प्रदर्शित करने वाली बलुआ पत्थर की नक्काशियों (bas-reliefs) से अलंकृत हैं।
- **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा माई सन टेम्पल में तीन मंदिर समूहों के पुनरुद्धार का कार्य** किया जा रहा है।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) द्वारा एशिया में किए जा रहे संरक्षण के अन्य प्रयास:

- **कंबोडिया स्थित अंगकोर वाट (अंकोरवाट):**
  - यह अब तक निर्मित सबसे बड़ी धार्मिक संरचना है।
  - इसका निर्माण 1113-1150 की अवधि के मध्य खमेर राजा सूर्यवर्मन द्वितीय द्वारा हिंदू देवता विष्णु के लिए किया गया था।
- **म्यांमार स्थित आनंद मंदिर:** यह एक बौद्ध मंदिर है।
- **अफगानिस्तान में बामियान के बुद्ध:** 2001 में इसे तालिबान द्वारा नष्ट कर दिया गया था।
- **कंबोडिया में ता प्रोहम (Ta Prohm) मंदिर।**
- **लाओस में वाट पाहु (Vat Phou) मंदिर।**

VISION IAS

4. भाषा एवं साहित्य (Languages and Literature)

4.1.शिलप्पादिकारम

(Silappadikaram)

सुर्खियों में क्यों?

तिरुचिरापल्ली (तिरुचि) में किलियूर के निकट पत्थलपेट्टई में ईंट के एक परित्यक्त टीले पर **नायक काल की एक दुर्लभ नृत्य पट्टिका तथा चोल काल का एक उत्कीर्णित स्तंभ** पाया गया है।

इससे संबंधित अन्य तथ्य

- इस नृत्य पट्टिका को एक शिलापट्ट पर चित्रित किया गया है, जिसमें सुरुचिपूर्ण वस्त्रों से सुसज्जित नर्तक और नर्तकियों के चार युग्मों को प्रदर्शित किया गया है। इन्हें पट्टिका में एक अनुष्ठानिक नृत्य करते हुए दिखाया गया है।
- शिलप्पादिकारम में ग्रामीणों द्वारा प्रस्तुत इस प्रकार के अनुष्ठानिक नृत्य से संबंधित उल्लेख प्राप्त होता है।
- इस स्थल पर एक गोलाकार स्तंभ भी प्राप्त हुआ है, जिसका आधार उत्कीर्णित है। आधार पर बीच-बीच में कुछ ग्रंथ लिपि के अक्षरों के साथ एक चोल कालीन तमिल अभिलेख उत्कीर्णित है।

शिलप्पादिकारम के संबंध में

- इसकी रचना संगम काल (तीसरी सदी ईसा पूर्व से चौथी ईस्वी तक) के दौरान की गई थी।
- **इलांगो आदिगल** (तमिल कवि और जैन मुनि) द्वारा रचित शिलप्पादिकारम (नुपूर की कहानी) तमिलनाडु के पांच महाकाव्यों में से एक है। अन्य महाकाव्य मणिमेखलै, जीवकचिंतामणि, वलयपति और कुंडलकेशि हैं ।
- यह महाकाव्य मुख्य नायिका कण्णगी के जीवन पर आधारित है। पाण्ड्य वंश के दरबार में घोर अन्याय के कारण कण्णगी अपने पति को खो देती है तथा वह राज्य से प्रतिशोध लेती है।
- प्राचीन काल के तीनों तमिल राज्यों यथा- चोल, पांड्य और चेर, का कथानक में उल्लेख किया गया है।
- **यह महाकाव्य, तमिल संस्कृति से संबंधित विस्तृत विवरण प्रदान करने वाले** महत्वपूर्ण काव्यों में से एक माना जाता है। यह विभिन्न धर्मों के महत्व, नगर नियोजन एवं शहर के प्रकारों तथा यूनानियों एवं अरबों के तमिल लोगों के साथ आपसी संबंधों का भी विवरण देता है।

4.2. मैथिली भाषा

(Maithili Language)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने मैथिली भाषा और उसकी लिपि के संवर्द्धन एवं संरक्षण हेतु एक समिति की अनुशंसाओं के कार्यान्वयन का निर्णय लिया है।

मैथिली से संबंधित तथ्य

- मिथिलाक्षर या तिरहुता मैथिली भाषा की लिपि है।
- यह मुख्यतः भारत (बिहार, झारखण्ड इत्यादि) और नेपाल में बोली जाती है।
- मिथिलाक्षर का प्राचीनतम स्वरूप 950 ईस्वी के सहोदरा प्रस्तर लेख में प्राप्त हुआ था।
- **विद्यापति ठाकुर** साहित्यिक भाषा के रूप में मैथिली का प्रयोग करने वाले प्रथम लेखक थे। उनकी काव्यात्मक कृतियाँ और गीत पूर्णतः भगवान शिव को समर्पित हैं।
- 14वीं शताब्दी में **ज्योतिश्वर** ने साहित्य को समग्र रूप से समृद्ध किया।
- मैथिली में उनकी कृति **धूर्त समागम** बहुत प्रसिद्ध है।
- 20वीं शताब्दी में गद्य लेखन के क्षेत्र में **बाबा नागार्जुन, रामानंद रेणु** आदि ने योगदान दिया।
- **वर्ष 1910 में मैथिली और मैथिल लोगों के विकास हेतु प्रथम मैथिली संगठन (मैथिली महासभा)** अस्तित्व में आया।
- वर्ष 2004 में 92वा संविधान संशोधन द्वारा संविधान की **आठवीं अनुसूची** में मैथिली भाषा को एक संवैधानिक भाषा का दर्जा प्रदान किया गया है।

संविधान की आठवीं अनुसूची में निम्नलिखित 22 प्रमुख भाषाएँ शामिल हैं:

- असमिया, बंगाली, बोडो, डोगरी, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मैथिली, पंजाबी, संस्कृत, संथाली, सिंधी, तमिल, तेलुगु, उर्दू, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली और ओडिया ।

VISION IAS

4.3. दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा

(Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha)

सुर्ख़ियों में क्यों?

भारत के राष्ट्रपति ने **दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा** के शताब्दी समारोह का उद्घाटन किया।

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के संबंध में

- **महात्मा गांधी द्वारा 1918 में दक्षिणी राज्यों में हिंदी के प्रचार-प्रसार के एकमात्र उद्देश्य के साथ** इसकी स्थापना की गई थी।
- हिंदी प्रचार एक आंदोलन था जिसका उदय स्वतंत्रता आंदोलन के भाग के रूप में हुआ तथा राष्ट्र की स्वतंत्रता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले नेताओं ने किसी एक भारतीय भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने की आवश्यकता महसूस की, और उस भाषा के माध्यम से लोगों को एकजुट किया और इस प्रकार राष्ट्रीय एकीकरण को तीव्र किया।
- भारत सरकार द्वारा 1964 में इस संस्थान को **राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों** में से एक के रूप में मान्यता प्रदान की गई थी।

सम्बंधित तथ्य

- हाल ही में अबू धाबी ने अरबी और अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी को न्यायालयों में प्रयोग की जाने वाली तीसरी आधिकारिक भाषा के रूप में सम्मिलित किया है। संयुक्त अरब अमीरात (UAE) के अतिरिक्त, फिजी में भी आधिकारिक भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग किया जाता है।

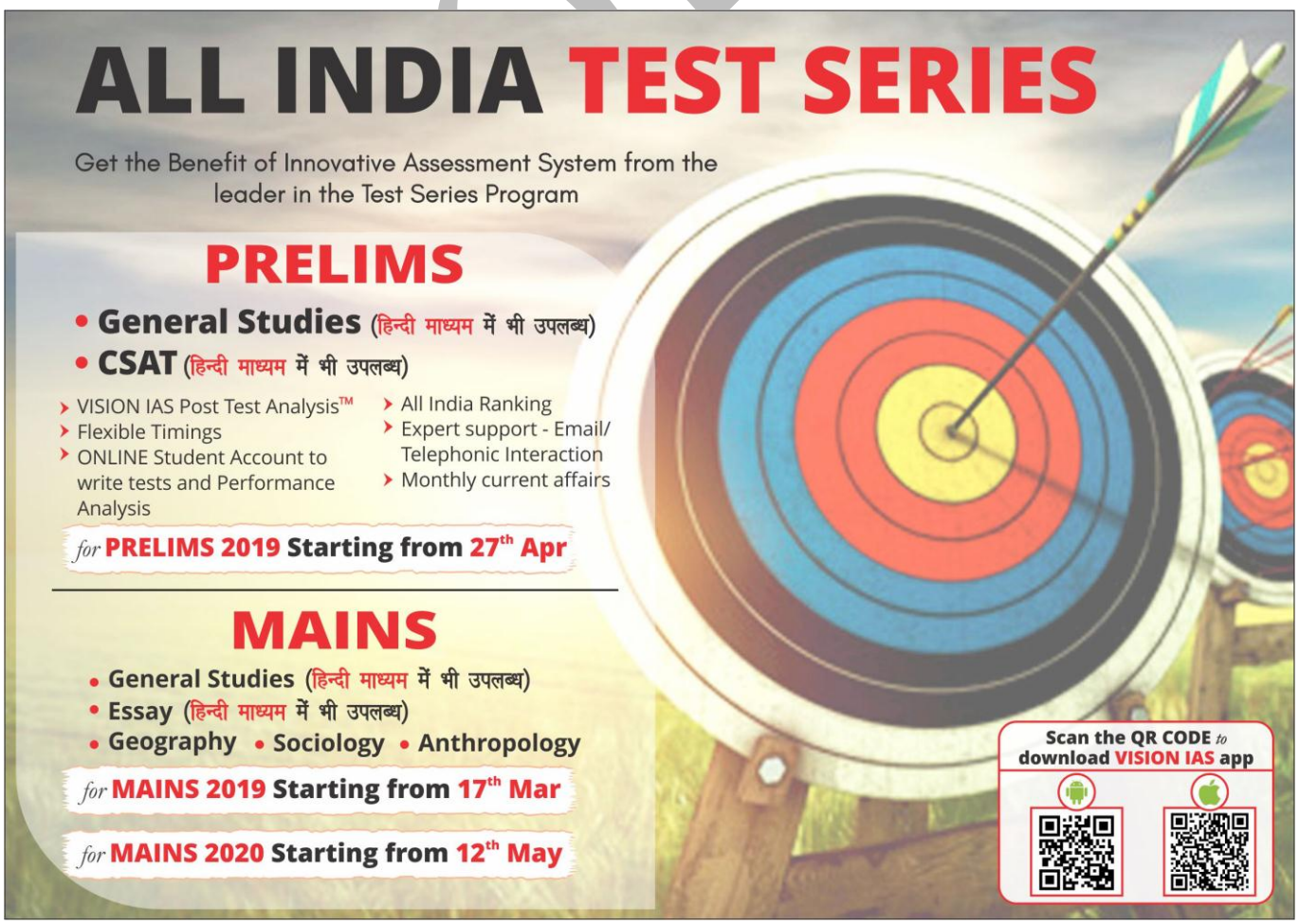

5. यूनेस्को द्वारा कृत पहलें (Initiatives of UNESCO)

5.1. यूनेस्को ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क स्टेटस

(UNESCO Global Geopark Network Status)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (GSI-Geological Survey of India) द्वारा **महाराष्ट्र एवं कर्नाटक** के कुछ विरासत स्थलों का चयन यूनेस्को ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क स्टेटस के लिए किया गया है।

यूनेस्को ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क स्टेटस क्या है?

- **यूनेस्को ग्लोबल जियोपार्क** ऐसे एकल, एकीकृत भौगोलिक क्षेत्र होते हैं जहां अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व के स्थलों और भूदृश्य को संरक्षण, शिक्षण एवं सतत विकास के एक समग्र दृष्टिकोण के माध्यम से प्रबंधित किया जाता है।
- इसका उद्देश्य पृथ्वी के संसाधनों के सतत उपयोग, जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने और प्राकृतिक आपदा से संबंधित जोख़िमों को कम करने जैसे समाज के समक्ष उपस्थित **महत्वपूर्ण मुद्दों** के संबंध में जागरूकता एवं समझ विकसित करना है।
- **ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क (GGN-The Global Geoparks Network),** विधिक रूप से गठित एक गैर-लाभकारी संगठन है। **यूनेस्को ग्लोबल जियोपार्क** के लिए इसकी सदस्यता प्राप्त करना अनिवार्य है।
- वर्तमान में, विश्व भर के **38 देशों में 140 यूनेस्को ग्लोबल जियोपार्क अवस्थित हैं।**
- किसी आकांक्षी ग्लोबल जियोपार्क की स्वीकृति के लिए उसके पास स्वयं की एक समर्पित वेबसाइट, एक कॉर्पोरेट पहचान, व्यापक प्रबंधन प्लान, संरक्षण योजना, वित्त एवं साझेदारी होना आवश्यक है।
- अभी तक भारत में इस प्रकार का कोई भी **भू-विरासत (Geo-Heritage) स्थल नहीं है जिसे यूनेस्को जियोपार्क नेटवर्क में शामिल किया गया हो।**

चयनित स्थलों के बारे में:

- **लोनार झील, महाराष्ट्र:**
  - यह विश्व की सबसे **प्राचीन उल्का निर्मित क्रेटर** है, जिसकी उत्पत्ति लगभग 50,000 वर्ष पूर्व हुई थी। यह एकमात्र झील है जिसकी **उत्पत्ति बेसाल्ट चट्टानों पर हुई** है।
  - यह एक लवणीय जल की झील है।
  - इसे **1979 में राष्ट्रीय भू-विरासत स्थल** घोषित किया गया था।
- **सेंट मैरी द्वीप एवं मालपे बीच, कर्नाटक:**
  - यह उडुपी द्वीप पर स्थित **बेसाल्ट चट्टानों से निर्मित** एक **षट्कोणीय मोज़ेकनुमा (mosaic) आकृति** है।
  - इसका **निर्माण लगभग 88 मिलियन वर्ष पूर्व** उस समय हुआ था जब मेडागास्कर से वृहत भारत पृथक हुआ था।
  - इसे **1975 में राष्ट्रीय भू-विरासत स्थल** घोषित किया गया था।

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (GSI)के बारे में

- यह खनन मंत्रालय से सम्बद्ध कार्यालय है।
- इसकी स्थापना मुख्यतः रेलवे के लिए कोयले के भंडार को खोजने हेतु 1851 में की गयी थी।
- इसका मुख्य कार्य राष्ट्रीय भू-वैज्ञानिक सूचना और खनिज संसाधन मूल्यांकन का सृजन और अपडेशन है।
- इसका मुख्यालय कोलकाता में है।
- इसने संरक्षण, संरक्षण और रखरखाव के लिए 32 भूवैज्ञानिक विरासत स्थल / राष्ट्रीय भूवैज्ञानिक स्मारक घोषित किए हैं।
- GSI या संबंधित राज्य सरकारें इन स्थलों की सुरक्षा के लिए आवश्यक उपाय करती हैं

VISION IAS

5.2 37वां यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल

(37th UNESCO World Heritage Site)

सुर्ख़ियों में क्यों?

भारत के **"मुंबई के विक्टोरियन गोथिक एवं आर्ट डेको इंसेम्बल"** वास्तुकला को **यूनेस्को** की **विश्व धरोहर सूची** में नामांकित किया गया है।

सुर्ख़ियों से संबंधित तथ्य

- भारत ने विश्व धरोहर समिति द्वारा अनुशंसित इंसेम्बल के नए नाम **'मुंबई के विक्टोरियन गोथिक एवं आर्ट डेको इंसेबल'** को स्वीकृत कर लिया है।
- यह मुंबई के **एलीफेंटा की गुफाओं** और **छत्रपति शिवाजी टर्मिनस रेलवे स्टेशन** के **पश्चात् तीसरा स्थल** है।
- वर्तमान में सम्पूर्ण भारत में **37 विश्व धरोहर स्थल** अवस्थित हैं। **महाराष्ट्र में सर्वाधिक स्थल हैं जिनकी संख्या पांच** हैं।
- भारत का **ASPAC (एशिया और प्रशांत) क्षेत्र में चीन के पश्चात् दूसरा स्थान है और विश्व में छठे स्थान** पर है।

विश्व धरोहर समिति

- यह विश्व धरोहर अभिसमय के क्रियान्वयन हेतु उत्तरदायी एक कार्यकारी निकाय है।
- इस **अभिसमय** एक अंतर्राष्ट्रीय समझौता है, जिसे यूनेस्को के सदस्य राष्ट्रों द्वारा **1972** में अंगीकृत किया गया था।
- **अभिसमय का प्राथमिक लक्ष्य, उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य वाले विश्व की प्राकृतिक** और **सांस्कृतिक विरासत की पहचान और सुरक्षा** करना है।
- अभिसमय का रणनीतिक उद्देश्य **" विश्वसनीयता, संरक्षण, क्षमता-निर्माण, संचार, समुदाय अर्थात् 'पांच Cs' (Credibility, Conservation, Capacity-building, Communication, Communities)"** पर आधारित है।
- यह अभिसमय धरोहर संरक्षण के लिए **जागरूकता बढ़ाने के उत्प्रेरक** के रूप में कार्य करता है।
- अभिसमय के तहत स्थापित **वर्ल्ड हेरिटेज फंड, विश्व धरोहर स्थलों की पहचान, संरक्षण और प्रोत्साहन हेतु** सदस्य राष्ट्रों को वित्तीय सहायता प्रदान करता है।

यूनेस्को (UNESCO)

- यह संयुक्त राष्ट्र की एक विशेषीकृत एजेंसी है जिसका मुख्यालय पेरिस है।
- इसका घोषित उद्देश्य संयुक्त राष्ट्र के चार्टर में उल्लिखित मूलभूत स्वतंत्रता के साथ-साथ न्याय, विधि के शासन और मानव अधिकारों के प्रति सार्वभौमिक सम्मान में वृद्धि करते हुए शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक सुधारों के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देकर शांति और सुरक्षा में योगदान करना है।
- 31 दिसम्बर 2018 को **संयुक्त राज्य अमेरिका और इजराइल ने UNESCO की सदस्यता का त्याग** कर दिया।

स्थलों से संबंधित तथ्य

- यह संकलन **विक्टोरिया एंड आर्ट डेको लैंड्मार्क** का विश्व में इस प्रकार का सबसे बड़ा समूह है। विश्व में विश्व धरोहर सूची में शामिल होने वाली दो वास्तुकला शैलियों का यह प्रथम समुच्चय है।
- इस इंसेम्बल में, मुख्यत: **19वीं सदी की विक्टोरियन गोथिक पुनर्जागरण की 94 इमारतें** हैं तथा **20वीं सदी के आरंभ की आर्ट डेको शैली के वास्तुशिल्प से निर्मित है जिसके मध्य में अंडाकार मैदान है।**
- विक्टोरियन कला की कुछ विशेषताएं हैं: **नुकीली मेहराब, भारी पत्थर और ईंटों का कार्य, बहुरंगी** (विभिन्न रंगों) और बृहद आकर जैसे मीनार, विशाल आधार (massive hip) और नोकदार छत।
- आर्ट डेको, जिसे **स्टाइल मॉडर्न (Style Moderne)** भी कहा जाता है, जो सजावटी कला और वास्तुकला में एक प्रकार का महत्त्पूर्ण परिवर्तन था। आर्ट डेको भवन, उनके सिनेमाघरों और आवासीय इमारतों के साथ, आर्ट डेको इमेजरी के साथ भारतीय डिजाइन को मिश्रित करता है, यह एक अद्वितीय शैली का निर्माण करते हैं जिसे इंडो-डेको के रूप में वर्णित किया गया है।

VISION IAS

भारत में विश्व विरासत स्थल

मानव निर्मित स्थल	
आगरा का किला	अजंता की गुफाएँ
साँची के बौद्ध स्मारक	चंपानेर-पावागढ़ पुरातत्त्व पार्क
छत्रपति शिवाजी टर्मिनस (पूर्ववर्ती विक्टोरिया टर्मिनस)	गोवा के चर्च और कांवेंट्स (ननों के रहने का स्थान)
एलीफैंटा गुफाएं	एलोरा गुफाएं
फतेहपुर सीकरी	जीवंत प्रतीत होने वाले चोल मंदिर
हम्पी के स्मारक समूह	महाबलीपुरम के स्मारक समूह
पट्टदकल स्मारक परिसर	राजस्थान के पहाड़ी किले
दिल्ली स्थित हुमायूँ का मकबरा	खजुराहो समूह के स्मारक
बोधगया का महाबोधि मंदिर	भारत की पर्वतीय रेलवे
क़ुतुब मीनार, दिल्ली	रानी की वाव (रानी की बावड़ी) पाटन, गुजरात
लाल किला	भीमबेटका के शैलाश्रय (गुफाएँ)
सूर्य मंदिर, कोणार्क	ताज महल
जंतर-मंतर, जयपुर	बिहार स्थित नालंदा महाविहार (नालंदा विश्वविद्यालय) के पुरातात्त्विक स्थल
ली कॉर्बुज़िए के स्थापत्य-संबंधी कार्य (चंडीगढ़ राजधानी परिसर)	अहमदाबाद का ऐतिहासिक शहर
प्राकृतिक स्थल	
ग्रेट हिमालयन राष्ट्रीय उद्यान	काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान
केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान	मानस वन्यजीव अभ्यारण्य
नंदा देवी और फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान	सुंदरवन राष्ट्रीय उद्यान
पश्चिमी घाट	**मिश्रित स्थल: कंचनजंगा राष्ट्रीय उद्यान**

VISION IAS

6. पर्व (Festival)

6.1. संस्कृति कुम्भ

(Sanskriti Kumbh)

सुर्खियों में क्यों?

संस्कृति मंत्रालय उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में संस्कृति कुम्भ **(कुंभ मेला परिसर में 29 दिनों का एक असाधारण सांस्कृतिक कार्यक्रम)** का आयोजन कर रहा है।

भारत के निम्नलिखित स्थल अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची में शामिल हैं-

- **कुटियाट्टम:** संस्कृत रंगमंच, केरल
- **मुडियट्टू:** केरल का एक आनुष्ठानिक रंगमंच
- **वैदिक मंत्रोच्चारण की परंपरा**
- **रामलीला:** रामायण का पारंपरिक प्रदर्शन
- **रम्मन:** गढ़वाल हिमालय का धार्मिक उत्सव और आनुष्ठानिक रंगमंच
- **कालबेलिया:** राजस्थान का लोक गीत और नृत्य
- **छऊ नृत्य:** सरायकेला, पुरुलिया और मयूरभंज के क्षेत्रों से 3 अलग-अलग शैलियाँ
- **लद्दाख का बौद्ध मंत्रोच्चारण:** जम्मू और कश्मीर के ट्रांस हिमालयन लद्दाख क्षेत्र में पवित्र बौद्ध ग्रंथों का सस्वर पाठ
- **संकीर्तन: मणिपुर** का एक आनुष्ठानिक गायन, वादन तथा **नृत्य**
- पंजाब की जंडियाल गुरु के ठठेरे द्वारा **पारंपरिक रूप से पीतल और तांबे से बनाए जाने वाले बर्तनों की शिल्पकला**
- **योग**
- **नौरोज**
- **कुंभ मेला (2017 में शामिल)**

कुंभ के बारे में

- कुंभ मेला विश्व के सबसे **प्राचीन और व्यापक समागमों** में से एक है, जिसमें सभी जाति, पंथ, लिंग और क्षेत्र के करोड़ों लोग शामिल होते हैं।
- यूनेस्को द्वारा वर्ष 2017 में **मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची में** कुंभ मेले को शामिल किये जाने के बाद से इसका महत्व वैश्विक स्तर पर बढ़ा है।
- कुंभ मेला पवित्र नदियों के तट पर स्थित निम्नलिखित चार हिन्दू तीर्थ स्थानों पर नियमित आवर्तन में **12 वर्षों की समयावधि में चार बार आयोजित किया जाता** है:
  - हरिद्वार (गंगा नदी के किनारे);
  - प्रयागराज / इलाहाबाद (गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम पर);
  - नासिक (गोदावरी नदी के किनारे); और
  - उज्जैन (क्षिप्रा नदी के किनारे)।
- 7वीं शताब्दी में हर्षवर्द्धन के शासनकाल में भारत आए चीनी यात्री **ह्वेन त्सांग** के वृत्तांतों के माध्यम से कुंभ मेले के इतिहास का पता लगाया जा सकता है। इस त्यौहार को आठवीं शताब्दी के संत **शंकराचार्य** ने भी लोगों के मध्य लोकप्रिय बनाया था।
- प्रयागराज में कुंभ मेला प्रत्येक 6 वर्ष में और महाकुंभ प्रत्येक 12 वर्ष में आयोजित किया जाता है। जिन्हें पहले **अर्द्ध कुंभ और कुंभ** के रूप में जाना जाता था। लेकिन इस वर्ष सरकार ने घोषणा की कि अर्द्ध कुंभ को कुंभ और कुंभ को महाकुंभ के रूप में जाना जाएगा।

VISION IAS

यूनेस्को द्वारा जारी अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची

- यह एक सूची है जिसे अमूर्त विरासत को बढ़ावा देने और उनके महत्व के संदर्भ में जागरूकता बढ़ाने में योगदान देने के लिए तैयार किया गया है। इस सूची का निर्माण **कन्वेंशन फॉर सेफगॉर्डिंग ऑफ़ दि इंटैन्जिबल कल्चरल हेरिटेज** के प्रभावी होने के बाद किया गया था।
- *सेफगॉर्डिंग ऑफ़ दि इंटैन्जिबल कल्चरल हेरिटेज* के लिए अंतर-सरकारी समिति की बैठक में सदस्य राज्यों द्वारा प्रस्तावित नामांकन का मूल्यांकन करने के बाद प्रत्येक वर्ष की सूची प्रकाशित की जाती है।
- यूनेस्को दो अलग-अलग सूचियां जारी करता है:
- **मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (ICH) की प्रतिनिधि सूची:** यह उन अमूर्त विरासत तत्वों से बनी है जो सांस्कृतिक विविधता को दर्शाती हैं।
- **तत्काल रक्षोपाय की आवश्यकता वाली अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची:** इसमें उन विरासतों को शामिल किया गया है जिनके संबंध में तत्काल रक्षोपाय किए जाने की आवश्यकता है। यह अंतर्राष्ट्रीय सहयोग जुटाने में भी सहायता करती है।

संबंधित तथ्य

- **सेफगॉर्डिंग ऑफ़ दि इंटैन्जिबल कल्चरल हेरिटेज एंड डाइवर्स कल्चरल ट्रेडिशंस**' नामक योजना का क्रियान्वयन संस्कृति मंत्रालय द्वारा किया जा रहा है।
- इसका उद्देश्य विभिन्न संस्थानों, समूहों, व्यक्तियों, संस्कृति मंत्रालय से इतर अन्य चिन्हित संस्थानों, गैर-सरकारी संगठनों, शोधकर्ताओं और विद्वानों को पुनर्जीवित एवं पुनःसक्रिय करना है जिससे वे भारत की समृद्ध अमूर्त सांस्कृतिक विरासत को सुदृढ़ता प्रदान करने, सुरक्षा करने, संरक्षण एवं बढ़ावा देने के लिए गतिविधियों/परियोजनाओं में संलग्न हो सकें।
- संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत एक स्वायत्त संगठन, **संगीत नाटक अकादमी** के माध्यम से इस योजना को क्रियान्वयित किया जा रहा है।

6.2. विश्व शांति अहिंसा सम्मेलन

(Vishwa Shanti Ahimsa Sammelan)

सुर्ख़ियों में क्यों ?

विश्व शांति अहिंसा सम्मेलन (VSAS), 2018 का आयोजन महाराष्ट्र राज्य के नासिक जिले के सतना तालुका के **मांगी-तुंगी** नामक पहाड़ी स्थल पर हुआ।

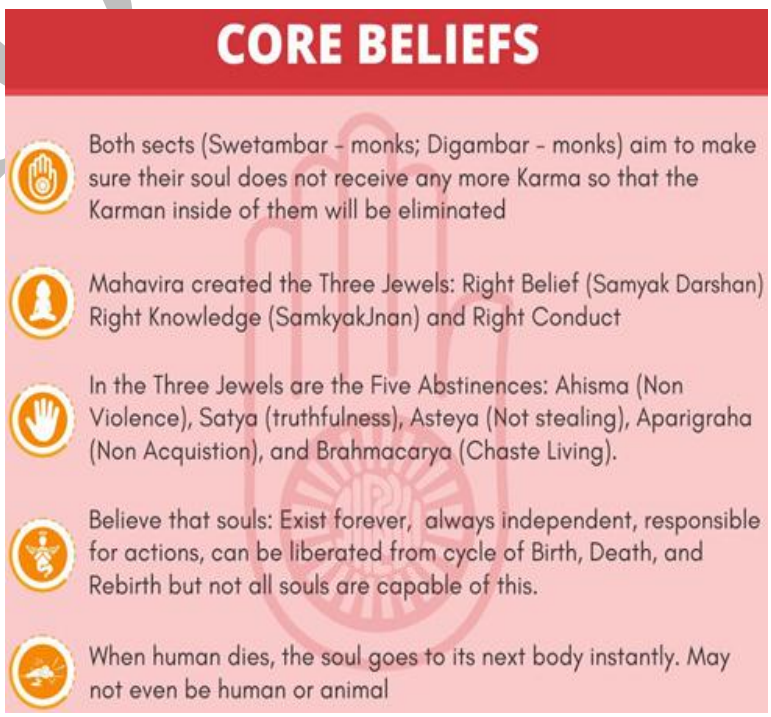

मांगी-तुंगी पहाड़ियों के बारे में:

- यह सह्याद्री श्रेणी की दो पहाड़ियाँ हैं।
- इन पहाड़ियों पर जैन धर्म से संबंधित 10 गुफा मंदिर स्थित हैं।
- ये दोनों शिखर जैन धर्म में एक विशेष महत्व रखते हैं ,क्योंकि लगभग 990 मिलियन दिगंबर जैनियों द्वारा इन पहाड़ियों पर मोक्ष की प्राप्ति की गई थी, इसलिए इस क्षेत्र को **"सिद्ध क्षेत्र"** (प्रबोधन की स्थिति की प्राप्ति का द्वार) कहा जाता है।
- **मांगी-तुंगी** पर जैन तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की 108 फीट ऊँची प्रतिमा स्थित है। यह विश्व की सबसे विशालकाय एकाश्मक जैन प्रतिमा है, जिसका निर्माण वर्ष 2006 में किया गया।

- इससे पूर्व श्रवणबेलगोला स्थित भगवान गोमतेश्वर बाहुबली (भगवान ऋषभदेव के पुत्र) की 57 फीट ऊँची एकाश्मक प्रतिमा विश्व की सबसे ऊँची जैन मूर्ति थी।

भगवान ऋषभदेव के बारे में:

- वह जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर (आध्यात्मिक गुरु) थे, उन्हें **आदिनाथ** भी कहा जाता है।
- उनके द्वारा अहिंसा के दर्शन की शुरुआत की गई।
- उनका प्रतीक चिन्ह सांड है।
- उन्हें इक्ष्वाकु वंश का संस्थापक भी कहा जाता है, जिससे भगवान राम संबंधित थे।

तीर्थंकर (ford-maker): इसे 'जिन (जीतने वाला)' भी कहा जाता है, ये वे महान व्यक्ति होते हैं, जो अपने सभी कर्मों को नष्ट करके मुक्ति प्राप्त कर चुके हैं और सभी प्राणियों के लिए प्रेरणा स्रोत बन गए हैं। एक तीर्थंकर केवल स्वयं ही मोक्ष प्राप्त नहीं करता है बल्कि वह अन्य लोगों को भी उपदेश और मार्गदर्शन प्रदान करता है, जो निर्वाण की प्राप्ति के लिए ईमानदारी पूर्वक प्रयासरत हैं।

6.3. अंबुबाची मेला

(Ambubachi Mela)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में असम के गुवाहाटी स्थित कामाख्या मंदिर में देवी के वार्षिक रजस्वला पर आयोजित किये जाने वाले चार दिवसीय अंबुबाची मेले का आयोजन किया गया।

कामाख्या मंदिर से संबंधित तथ्य

- यह गुवाहाटी (असम) में नीलांचल पहाड़ियों पर स्थित, 52 शक्ति पीठों या शक्ति अनुयायियों की पीठ में से एक है।
- यह वह स्थल माना जाता है जहां हिंदू देवी सती के जलकर भस्म होने के बाद उनके गर्भ और जननांग गिरे थे।
- कामाख्या देवी (शासक देवी) की प्रजनन क्षमता की देवी के रूप में भी पूजा की जाती है।
- इसे तांत्रिक अनुष्ठानों की प्रमुख पीठों में से एक माना जाता है

संबंधित तथ्य

एक वार्षिक नदी महोत्सव 'द्विजिंग महोत्सव' असम के चिरांग जिले में एई (Aie) नदी के किनारे मनाया गया।

6.4. बेदीनखलम महोत्सव

(Behdiengkhlam Festival)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में मेघालय के जयंतिया हिल्स जिले के जौई गाँव में बेदीनखलम महोत्सव मनाया गया।

विवरण

- बेदीनखलम एक परंपरागत त्यौहार है जो **बुआई के बाद अच्छी उपज की प्राप्ति** और प्लेग एवं अन्य बीमारियों को दूर करने के लिए मनाया जाता है। ("बेदीन का अर्थ है छड़ी के द्वारा भगाना और "खलम" का तात्पर्य है प्लेग या महामारी।)
- यह त्योहार **'पनार' (Pnars)** लोगों द्वारा मनाया जाता है जो परंपरागत मान्यता "नियामतर" (Niamtre) में विश्वास करते हैं।
- इस त्यौहार के दौरान युवा पुरुष प्रतीकात्मक रूप से बांस के डंडे से प्रत्येक घर की छत को पीटकर बुरी आत्माओं को दूर भगाते हैं।
- महिलाएं नृत्य में शामिल नहीं होती हैं और पूर्वजों की आत्माओं को बलि के रूप में भोजन प्रदान करने का महत्वपूर्ण कार्य करती हैं।
- इस त्योहार की मुख्य विशेषता **"दीन खलम"(Dein Khlam), "सिम्मलेंड" (Symlend) और "खनोंग"(Khnong)** का निर्माण है। ये गोलाकार, पॉलिशदार और ऊँचे तने के समान होते हैं।

- लोग 'रॉट्स' (रंगीन कागज और टिनसेल से सजाए गए लंबे बांस की संरचना) को बनाकर अपना कलात्मक कौशल भी प्रदर्शित करते हैं।
- उत्सव के एक भाग के रूप में, फुटबॉल के समान **डट-ला-वाकर (dat la wakor)** नामक एक खेल का भी आयोजन किया जाता है जिसमें प्रत्येक टीम द्वारा लकड़ी की गेंद के द्वारा गोल करने की कोशिश की जाती है।

जयंतिया जनजाति

- इन्हें **सिंटेन्ग और पनार** भी कहा जाता है।
- ये मेघालय के पूर्वी भाग में निवास करते हैं और ये ऑस्ट्रो-एशियाटिक मूल के हैं।
- इनका समाज **मातृसत्तात्मक** होता हैं ,क्योंकि यहाँ बच्चे अपनी पहचान या पारिवारिक उपाधि माँ से प्राप्त करते हैं।
- जयंतिया लोगों में, सबसे **छोटी बेटी संपत्ति की उत्तराधिकारी** होती है और उसी पर परिवार की देखभाल करने और उनका ध्यान रखने का दायित्व होता है।
- यह जनजाति कलात्मक बुनाई, लकड़ी की नक्काशी और बेंत एवं बांस के कार्य के लिए प्रसिद्ध है।
- इस जनजाति के पुरुष जिम्फोंग और धोती पहनते हैं जबकि महिलाएं कपड़ों के कई टुकड़ों को शरीर पर लपेटती हैं ताकि शरीर को ढकने के लिए बेलनाकार आकार दिया जा सके। त्योहारों के दौरान वे चांदी और सोने के मुकुट पहनते हैं जिसके पीछे एक चोटी लगी होती है।
- बेदीनखलम त्योहार के अतिरिक्त, लाहो नृत्य त्योहार भी जयंतिया जनजाति का एक महत्वपूर्ण त्योहार हैं।

6.5 बतुकम्मा उत्सव

(Bathukamma Festival)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- पहली बार सिडनी (ऑस्ट्रेलिया) में न्यू साउथ वेल्स की संसद द्वारा बतुकम्मा नामक नृजातीय उत्सव मनाया गया।
- पोचमपल्ली हथकरघा बुनकरों को भी इस उत्सव में अपनी साड़ियों का प्रचार करने का अवसर प्राप्त हुआ।

बतुकम्मा के बारे में

- बतुकम्मा का अर्थ है "देवी मां का जीवित होना"। यह तेलंगाना का एक विविध रंगों वाले फूलों का त्योहार है जिसे मानसून के अंत में मनाया जाता है।
- बतुकम्मा विभिन्न अनूठे सुंदर मौसमी फूलों से निर्मित सुंदर फूलों का ढेर होता है। इन फूलों में से अधिकांश में औषधीय गुण होते हैं, जिन्हें गोपुरम मंदिर के आकार की भांति सात संकेंद्रित परतों में व्यवस्थित किया जाता है।
- बतुकम्मा का अंतिम दिन, जिसे पेढा या सद्दुला बतुकम्मा के नाम से जाना जाता है, का आयोजन दशहरा से दो दिन पूर्व किया जाता है।

पोचमपल्ली साड़ी के बारे में

- यह कला मूल रूप से 18वीं शताब्दी में तेलंगाना के पोचमपल्ली नगर में विकसित हुई थी, जिसे स्थानीय रूप से **चिट-कु** कहा जाता था। इस नगर को भारत के रेशम नगर के रूप में भी जाना जाता है।
- कपड़े पर अंकित इकत शैली एवं डिजाइन (ज्यामितीय) के लिए ये साड़ियां सांस्कृतिक रूप से लोकप्रिय हैं।
- पोचमपल्ली इकत साड़ी के नाम पर GI टैग भी मिला हुआ है।

6.6. नोंगक्रेम नृत्य उत्सव

(Nongkrem Dance Festival)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, **मेघालय की खासी पहाड़ियों में स्थित स्मित गांव** में नोंगक्रेम नृत्य उत्सव मनाया गया।

नोंगक्रेम नृत्य उत्सव के बारे में

- यह एक वार्षिक नृत्य उत्सव है जो **फसल की अच्छी उपज के लिए आभार व्यक्त करने** और समुदाय के सभी लोगों की शांति एवं समृद्धि के लिए मनाया जाता है।

- यह **खासी जनजाति - हिमा खाइरिम (Hima Khyrim)** का सबसे महत्वपूर्ण त्यौहार है। इसके दौरान पुरुष, महिलाएं और बच्चे ढोल एवं बांसुरी (pipes) की धुनों पर नृत्य करते हैं।
- खासी जनजाति द्वारा समाज की मातृसत्तात्मक प्रणाली का अनुकरण किया जाता है तथा ये स्थानान्तरी कृषि (झूम कृषि) करते हैं।
- बकरी की बलि के साथ इस उत्सव की शुरुआत होती है। वास्तव में, **नोंगक्रेम शब्द** का अर्थ "बकरी की बलि का समारोह" है।
- पुरुषों द्वारा **'का शाद मस्तीह' (Ka Shad Mastieh)** नामक एक विशेष नृत्य किया जाता है जिसमें वे अपने दाहिने हाथ में तलवार रखते हैं और बाएं हाथ में एक चंवर (whisks) रखते हैं।

6.7. हॉर्नबिल महोत्सव

(Hornbill Festival)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में नागालैंड में हॉर्नबिल महोत्सव का समापन हुआ।

हॉर्नबिल महोत्सव के बारे में

- हॉर्नबिल महोत्सव नागालैंड की मूल योद्धा जनजातियों के सबसे बड़े उत्सवों में से एक है। इस महोत्सव का उद्देश्य नागालैंड की समृद्ध संस्कृति को पुनर्जीवित करना और उसकी रक्षा करना है तथा इसकी असाधारणता और परंपराओं को प्रदर्शित करना है।
- महोत्सव का नाम हॉर्नबिल के नाम पर रखा गया है, जो राज्य में सबसे अधिक सम्मानित पक्षी प्रजातियों में से एक है, जिसका महत्व विभिन्न आदिवासी सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों, गीतों और नृत्यों में परिलक्षित होता है।
- यह महोत्सव 1 दिसंबर (जो नागालैंड का गठन दिवस है) को प्रारंभ होता है और 10 दिनों तक चलता है।

नागालैंड में जनजातियाँ	इनसे सम्बंधित नृत्य / त्योहार
अंगामी नागा	मेलो फिता नृत्य
एओ जनजाति	मोत्सु त्योहार
चकसेंग जनजाति	सेकरेन्यी त्योहार
चांग जनजाति	चांग लो डांस
दिमासा जनजाति	बुशू जिबा त्योहार
खिअनिउग्म जनजाति	मिउ और त्सोकुम त्योहार
कोन्याक जनजाति	पारंपरिक हेड हन्टर्स
कूकी जनजाति	कूकी नृत्य
लोथा जनजाति	रुख्यो शरु नृत्य
फ़ोम जनजाति	मोन्यू आशो नृत्य
पोचुरी जनजाति	येंशे त्योहार
रेंगमा जनजाति	नगाड़ा त्योहार
संगतम जनजाति	मोग्मोंग त्योहार

VISION IAS

सुमी जनजाति	अंगुशु किगिले नृत्य
यिम्चुन्गेर जनजाति	मेटमन्यू त्योहार
जेलियांग जनजाति	जेलियांग नृत्य

भारत में हॉर्नबिल

भारत में हॉर्नबिल की नौ विभिन्न प्रजातियाँ पाई जाती हैं:

- **पश्चिमी घाट:** इंडियन ग्रे हॉर्नबिल, मालाबार ग्रे हॉर्नबिल, मालाबार पाइड हॉर्नबिल, ग्रेट हॉर्नबिल (केरल का राज्य पक्षी है)
- **नारकोंडम द्वीप:** नारकोंडम हॉर्नबिल (एनडेंजर्ड)
- **उत्तर-पूर्व और हिमालय के गिरिपद में पायी जाने वाली अन्य प्रजाति:** व्हाइट थ्रोट ब्राउन हॉर्नबिल, रूफस-नेक्ड हार्नबिल (वल्नेरेबल), रेथेड हॉर्नबिल, ओरिएंटल पाइड हॉर्नबिल।

6.8 .अट्टुकल पोंगल (Attukal Pongala)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- हाल ही में, तिरुवनंतपुरम (केरल) के अट्टुकल मंदिर में एक **वार्षिक 10 दिवसीय** अट्टुकल पोंगल उत्सव का आयोजन किया गया था।

अन्य सम्बन्धित तथ्य

- पोंगल (अर्थ- **'अच्छी तरह उबलना'**) एक अनुष्ठान है जिसमें महिलाएं **मीठा पायसम** (चावल, गुड़, नारियल और केले से निर्मित एक व्यंजन) तैयार करती हैं तथा देवी को इसका भोग लगाती हैं।
- देवी को प्रेमपूर्वक **'अट्टुकलम्मा'** कहा जाता है
- अट्टुकल मंदिर **महिलाओं का सबरीमाला** के नाम से विख्यात है, जहां केवल महिलाओं को ही अनुष्ठानों में भाग लेने की अनुमति प्राप्त है।
- **एक एकल दिवस पर महिलाओं के विशालतम धार्मिक एकत्रण** के कारण इसे **वर्ष 2009 में गिनीज बुक ऑफ़ वर्ल्ड रेकॉर्ड्स** में सूचीबद्ध किया गया था।

6.9. मकरविलक्कु पर्व

(Makaravilakku Festival)

सुर्ख़ियों में क्यों?

मकर संक्रांति के अवसर पर सबरीमाला में मकरविलक्कु पर्व (मंदिर में दो महीने की लंबी अवधि तक चलने वाला वार्षिक उत्सव) मनाया गया।

सबरीमाला मंदिर के संबंध में

- यह भारत में केरल के पथानमथिट्टा जिले में पेरियार टाइगर रिजर्व के भीतर सबरीमाला में अवस्थित है।
- मंदिर ब्रह्मचारी हिंदू देवता अय्यप्पन के लिए समर्पित है जिसे धर्मषष्ठ के रूप में भी जाना जाता है, एक मान्यता के अनुसार ये शिव एवं विष्णु के नारी अवतार मोहिनी के पुत्र हैं।
- सबरीमाला की रीतियाँ शैववाद, शक्तिवाद, वैष्णववाद और अन्य श्रमण परंपराओं की संगम हैं।
- सितंबर में उच्चतम न्यायालय ने केरल के उस कानून को असंवैधानिक घोषित कर दिया जिसके तहत मंदिर के पवित्र स्थल में मासिक धर्म के दौरान महिलाओं के प्रवेश पर प्रतिबंध लगाया गया था। साथ ही उच्चतम न्यायालय ने सबरीमाला मंदिर प्रशासन को आदेश दिया कि वह सभी उम्र की महिलाओं को प्रवेश की अनुमति दे।

VISION IAS

अन्य धार्मिक स्थान जहां महिलाओं का प्रवेश प्रतिबंधित है:

- भगवान कार्तिकेय मंदिर, पुष्कर
- पटबौसी सत्र, असम
- निजामुद्दीन दरगाह, दिल्ली
- हजरतबल मस्जिद, श्रीनगर
- श्री पद्मनाभस्वामी मंदिर, तिरुवनंतपुरम
- कामाख्या मंदिर, गुवाहाटी (असम)
- शनि शिंगणापुर मंदिर, महाराष्ट्र

VISION IAS

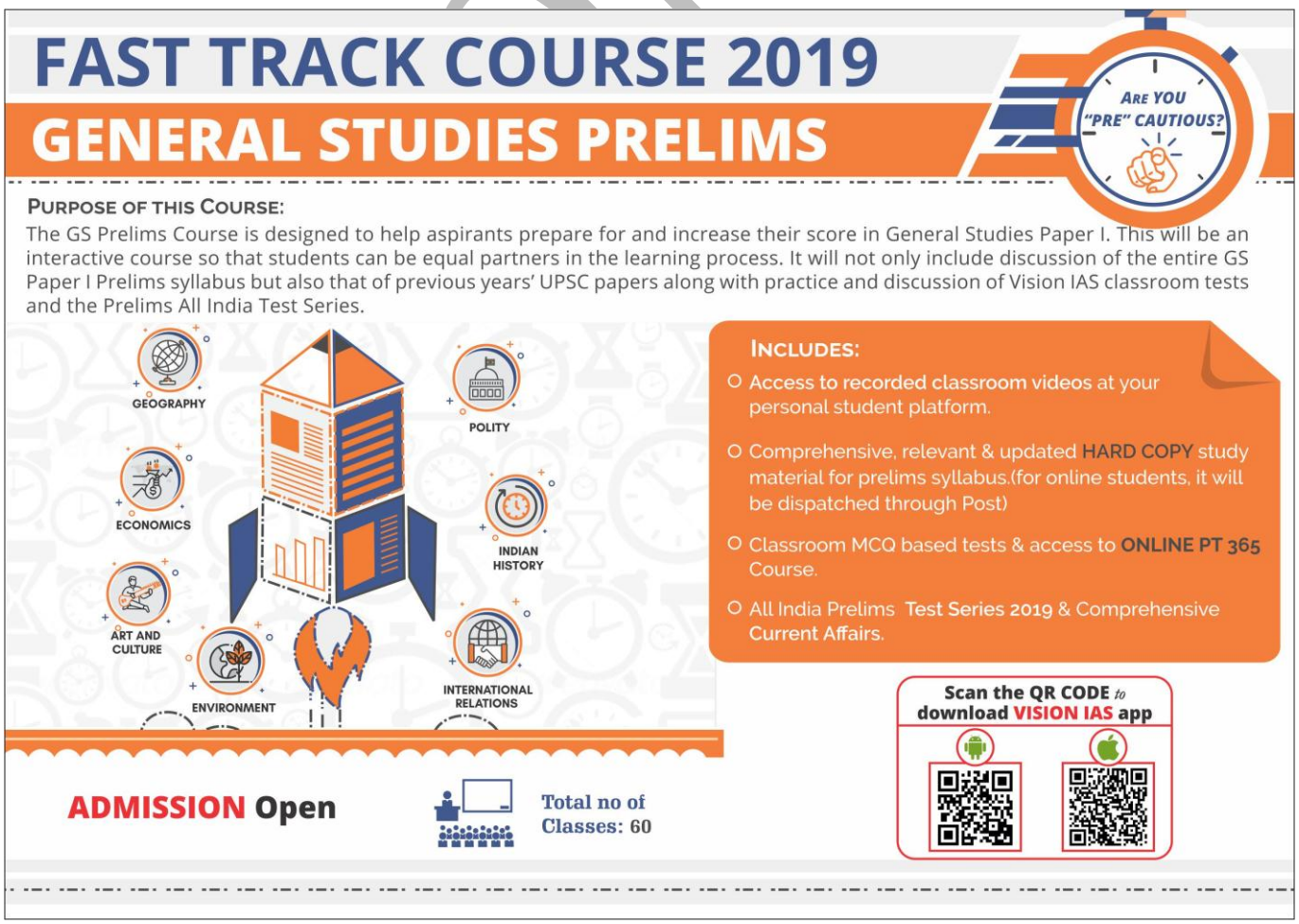

7. ऐतिहासिक घटनाएं (Historical Events)

7.1. पीटरमारित्जबर्ग स्टेशन घटना

(Pietermaritzburg Station Incident)

सुर्ख़ियों में क्यों?

भारत और दक्षिण अफ्रीका ने संयुक्त रूप से "महात्मा गांधी के साथ **पीटरमारित्जबर्ग स्टेशन पर घटित घटना** के 125वें वर्ष" की थीम पर डाक टिकट जारी किए हैं।

पीटरमारित्जबर्ग स्टेशन घटना

- 31 मई 1893 को, प्रिटोरिया जाने के दौरान एक श्वेत व्यक्ति ने गांधीजी के **प्रथम श्रेणी में यात्रा करने** को लेकर अपनी नाराजगी जताई एवं उन्हें गाड़ी के अंतिम डिब्बे में जाने को कहा।
- गांधीजी ने दक्षिण अफ्रीका में रहने और **भारतीयों के प्रति** वहां पर होने वाले **नस्लीय भेदभाव के विरुद्ध संघर्ष करने का** महत्वपूर्ण निर्णय लिया। इसी संघर्ष के दौरान उन्होंने अहिंसात्मक विरोध के अपने विशिष्ट तरीके का प्रयोग किया, जिसे **"सत्याग्रह"** कहा गया।

दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गांधी के प्रयोग

- **भारतीय अप्रवासन का मुद्दा:** जब महात्मा गांधी 1893 में दक्षिण अफ्रीका पहुंचे, तब यह एक ज्वलंत मुद्दा था। क्योंकि वे भारतीय जो शुरुआत में गिरमिटिया श्रमिक के रूप में नटाल क्षेत्र में आए थे वे आर्थिक कारणों से वहीं रुक गए। लेकिन, उनकी बढ़ी हुई आबादी से श्वेत उपनिवेशवादियों को अप्रसन्नता हुई।
- **महात्मा गांधी ने नटाल इंडियन कांग्रेस** की स्थापना की, जिसने 1906 और 1913 के मध्य सत्याग्रह आंदोलनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन प्रयासों के बावजूद, 1896 में ऐसे मतदाताओं को अयोग्य ठहराने के लिए एक कानून पारित किया गया जो यूरोपीय मूल के नहीं थे।
- **दूसरा आंग्ल-बोअर युद्ध (दक्षिण अफ्रीकी युद्ध), 1899:** इन्होंने भारतीय समुदाय को इस आधार पर ब्रिटिश हित का समर्थन करने की सलाह दी, कि चूँकि उन्होंने ब्रिटिश जनता के रूप में अपने अधिकारों का दावा किया था इसलिए खतरा होने पर साम्राज्य की रक्षा करना उनका कर्तव्य है।
- **ट्रांसवाल ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन (BIA), 1903:** महात्मा गांधी द्वारा गठित इस संगठन का उद्देश्य ब्रिटिश नेतृत्व में ट्रांसवाल से भारतीयों के प्रस्तावित निष्कासन को रोकना था।
- **एशियाई पंजीकरण कानून (काला अधिनियम):** इसके तहत सभी भारतीयों (युवा और बूढ़े, पुरुषों और महिलाओं) को फिंगरप्रिंट देना और पंजीकरण दस्तावेज को हमेशा अपने साथ रखना अनिवार्य बनाया गया था। गांधीजी ने आधिकारिक रूप से 1907 में **पहली बार सत्याग्रह** का प्रयोग इस अधिनियम के विरोध में किया।
- **टॉलस्टॉय फार्म:** 1910 में जेल में बंद निष्क्रिय प्रतिरोधकों के परिवारों का समर्थन करने के लिए उन्होंने इसकी इसकी स्थापना की थी।
- **मार्च इनटू ट्रांसवाल:** भारतीयों के लिए बिना परमिट के ट्रांसवाल और नटाल के बीच की सीमा को पार करना गैर-कानूनी था। **1913 में गांधीजी ने इमिग्रेंट्स रेगुलेशन एक्ट** का उद्देश्यपूर्ण तरीके से विरोध करने के लिए नटाल कॉलोनी से ट्रांसवाल तक एक मार्च का नेतृत्व किया और उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।
- लगभग पचास हजार गिरमिटिया मजदूर हड़ताल पर थे और कई हजार अन्य भारतीय जेल में थे। गांधीजी की गिरफ्तारी और पुलिस की बर्बरता से संबंधित रिपोर्ट से भारत में उपद्रव हुआ। 1914 में गांधीजी को रिहा कर दिया गया। ब्रिटिश सरकार को मुख्य **भारतीय मांगों को मानने के लिए मजबूर होना पड़ा।**

VISION IAS

7.2. पाइका विद्रोह

(Paika Rebellion)

1817 के पाइका विद्रोह (जिसे **खुर्दा विप्लव** भी कहा जाता है) को प्रथम स्वतंत्रता संघर्ष घोषित करने की मांग की जा रही थी।

पाइका विद्रोह के सन्दर्भ में

- पाइका पारंपरिक रूप में ओडिशा के खेतिहर किसानों के असंगठित सैन्य दल को कहा जाता है, जो पुलिस की भूमिका का निर्वहन करते थे।
- खुर्दा राज्य को दी जाने वाली अपनी सैन्य सेवाओं के लिए पाइका लोगों को लगान-मुक्त भूमि दी जाती थी।
- समस्या तब प्रारंभ हुई जब ब्रिटिश शासन ने जबरदस्ती उनसे उनकी भूमि छीनकर उन्हें भूमिहीन बना दिया।
- उन्हें ब्रिटिश शासन द्वारा दमनकारी भू-राजस्व नीति के साथ ही अपमान का भी सामना करना पड़ा।
- समय के साथ इनकी समस्याओं में और भी वृद्धि हुई जिसके लिए निम्नलिखित अन्य कारक भी जिम्मेदार थे:
  - इस क्षेत्र में **सिक्का रूपए (चांदी की मुद्रा) की शुरूआत**,
  - नई मुद्रा में राजस्व के भुगतान पर बल,
  - **खाद्य पदार्थों और नमक की कीमतों** में अभूतपूर्व **वृद्धि**,
  - स्थानीय परिसंपत्तियों की कलकत्ता में नीलामी, जिससे ओडिशा में बंगाल के अनुपस्थित जमींदारों का प्रवेश हुआ।
- विद्रोह का नेतृत्व खुर्दा के राजा के सैन्य प्रमुख **जगबंधु बिद्याधर महापात्र भ्रमरवर राय या बक्सी जगबंधु** ने किया था।
- विद्रोह का प्रारम्भ 29 मार्च 1817 को हुआ जब पाइकों ने बानपुर में पुलिस स्टेशन और अन्य सरकारी प्रतिष्ठानों पर हमला कर दिया। शीघ्र ही विद्रोह ओडिशा के विभिन्न भागों में फैल गया।
- **जमींदार और किसान** दोनों पाइकों में सम्मिलित हो गए।
- **'लगान नहीं देने के अभियान (no-rent campaign)'** की भी शुरुआत की गयी।
- **जगन्नाथ मंदिर के पुजारियों** ने भी पाइकों को अपना पूर्ण समर्थन दिया।
- ब्रिटिश शासन ने मार्शल लॉ लागू किया तथा मई 1817 तक अधिकांश विद्रोह को दबा दिया गया। बक्सी जगबंधु ने मई, 1825 में आत्मसमर्पण कर दिया।
- विद्रोह के पश्चात, अंग्रेजों ने खुर्द के लोगों के प्रति 'उदारता, अनुग्रह और सहिष्णुता' की नीति को अपनाया।
  - नमक की कीमत कम कर दी गई तथा पुलिस और न्याय प्रणाली में आवश्यक सुधार किए गए।
  - राजस्व अधिकारियों के भ्रष्ट पाए जाने पर उन्हें सेवा से बर्खास्त कर दिया गया और पूर्व जमींदारों को उनकी भूमि वापस कर दी गयी।
  - खुर्द के राजा के पुत्र को चौबीस हजार रुपये के अनुदान के साथ पुरी जाने और जगन्नाथ मंदिर के मामलों का दायित्व लेने की अनुमति प्रदान की गई।

7.3. साधारण ब्रह्म समाज

(Sadharan Brahmo Samaj)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा **साधारण ब्रह्म समाज (SBS)** के आठ महाविद्यालयों के शासी निकायों को विघटित कर दिया गया है।

अन्य संबंधित तथ्य

- सरकार द्वारा निर्दिष्ट किया गया है कि SBS कोई **"पृथक अल्पसंख्यक धर्म"** नहीं है तथा इसके द्वारा प्रशासित संबंधित कॉलेजों को "गैर-अल्पसंख्यक सरकारी सहायता प्राप्त कॉलेजों" के रूप में माना जाना चाहिए।

साधारण ब्रह्म समाज (SBS)

- इसकी स्थापना **ब्रह्म समाज** से पृथक होने के पश्चात 1878 में **आंनद मोहन बोस (प्रथम अध्यक्ष), द्वारकानाथ गांगुली** तथा अन्य द्वारा **की गई थी**।
- इसके पृथक होने का कारण केशव चन्द्र सेन ('भारतीय ब्रह्म समाज' के संस्थापक) द्वारा ब्रह्म विवाह अधिनियम 1872 का उल्लंघन कर कूच बिहार के महाराजा से अपनी 13 वर्षीय पुत्री का विवाह करना था।
- केशव और उनके अनुयायियों ने **न्यू डिस्पेंसेशन चर्च** के रूप में नव विधान का उद्घाटन किया, केशव चंद्र सेन को इस सार्वभौमिक धर्म के पैगंबर के रूप में स्थापित किया गया।

VISION IAS

ब्रह्म समाज से संबंधित तथ्य

- इसकी **स्थापना** राजा राममोहन राय द्वारा 1829 में **ब्रह्म सभा** के रूप में की गई थी। कालान्तर में यह ब्रह्म समाज के रूप में परिवर्तित हो गयी।
- राजा राम मोहन राय ने द्वारकानाथ टैगोर और विलियम एडम के सहयोग से **'कलकत्ता यूनिटेरियन कमेटी** (इसके अग्रगामी संगठन के रूप में)' की स्थापना भी की थी। इसकी सदस्यता भारतीय और यूरोपीय दोनों को प्राप्त थी।
- सिद्धांत: एकेश्वरवाद में विश्वास
  - कोई भी ईश्वरोक्ति, पैगम्बर या पवित्र पुस्तक अपरिहार्य नहीं है इन्हें सर्वोच्च सत्ता भी नहीं माना जा सकता है।
  - सभी मनुष्य जन्म से समान हैं।
- **सामाजिक और धार्मिक सुधार**: इसने जाति प्रथा, बाल विवाह और सती प्रथा का उन्मूलन, मूर्तिपूजा का विरोध, बहुविवाह और दहेज प्रथा की निंदा की।
- पश्चिम की तरफ समुद्री यात्रा की वर्जना का विरोध करने वाले प्रथम हिंदू ब्रह्मसमाजी ही थे।
- 1843 में, देवेंद्रनाथ टैगोर ब्रह्म सभा में शामिल हुए और इसमें नई चेतना का संचार किया। इन्होंने प्रसिद्ध बंगाली मासिक तत्त्वबोधिनी पत्रिका की शुरुआत, जिसके संपादक अक्षय कुमार दत्ता थे।
- देवेंद्रनाथ टैगोर ने ब्रह्म समाज के पहले गैर-ब्राह्मण आचार्य के रूप में केशवचंद्र सेन को नियुक्त किया।
- उदार युवा ब्रह्मसमाजियों और पुराने रूढ़िवादी ब्रह्मसमाजियों के मध्य वैचारिक मतभेद उत्पन्न होने के कारण वर्ष 1866 में केशव चंद्र सेन ने 'ब्रह्म समाज ऑफ़ इंडिया' का गठन किया। इसके उपरांत मूल (ओरिजनल) ब्रह्म समाज को 'आदि ब्रह्म समाज' के नाम से जाना गया। (1911 में रवींद्रनाथ टैगोर ने इसका नेतृत्व किया)।
- 1870 में केशवचंद्र सेन द्वारा **'इंडियन रिफॉर्म एसोसिएशन** की स्थापना की गयी और 'सुलभ समाचार' प्रारम्भ किया गया।

7.4. हाइफा का युद्ध

(Battle of HAIFA)

सुर्ख़ियों में क्यों?

भारतीय दूतावास द्वारा हाइफा युद्ध के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में हाइफा में एक समारोह का आयोजन किया गया। उल्लेखनीय है कि 23 सितंबर, 1918 को **जोधपुर, मैसूर और हैदराबाद लांसर्स के भारतीय सैनिकों** द्वारा हाइफा शहर को मुक्त कराया गया था।

प्रथम विश्व युद्ध में भारत की भागीदारी

- प्रथम विश्व युद्ध में भारतीय सेना ने (ब्रिटेन के साथ) पूर्वी अफ्रीका, मेसोपोटामिया, मिस्र और गैलीपोली में पश्चिमी मोर्चे पर जर्मन साम्राज्य के विरुद्ध युद्ध लड़ा था।
- भारतीय सेना विश्व की **सबसे बड़ी स्वयंसेवी सेना** थी,
- युद्ध में ब्रिटिश भागीदारी पर राष्ट्रवादी प्रतिक्रिया तीन स्तरों पर हुयी-
  - **नरमपंथियों** ने कर्तव्य की भावना के साथ युद्ध में साम्राज्य का समर्थन किया;
  - तिलक समेत गरमपंथियों ने इस भ्रम के साथ युद्ध के दौरान अंग्रेजों का समर्थन किया कि युद्ध के उपरांत ब्रिटेन कृतज्ञतावश भारत की इस निष्ठा के प्रतिफल में इसे (भारत को) स्व-शासन प्रदान करेगा। महात्मा गांधी और बाल गंगाधर तिलक दोनों ने युद्ध यात्राओं के माध्यम से अंग्रेजों के लिए धन एवं जनबल जुटाने का प्रयत्न किया।
  - **क्रांतिकारियों** ने इस अवसर का उपयोग करके युद्ध आरंभ करने एवं देश को स्वतंत्र कराने का निर्णय किया।
- हालाँकि संघर्ष के अंत में राष्ट्रवादी नेताओं की अपेक्षाएं रॉलेट एक्ट के विस्तार के साथ ही समाप्त हो गईं।
- इस अवधि के पश्चात्, फरवरी 1919 में गांधीजी ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध अपने प्रथम भारत-व्यापी सविनय अवज्ञा अभियान का आरम्भ किया।
- अंग्रेजों को दिया गया भारतीय सहयोग मांटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधारों को पारित करने के प्रमुख कारणों में से एक था,
- प्रथम विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश सेना के लिए लड़ने वाले 70,000 भारतीय सैनिकों को श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु **नई दिल्ली में इंडिया गेट** की स्थापना की गई थी।

हाइफा (HAIFA)

- यह इज़राइल का तीसरा सबसे बड़ा शहर है।
- यह एक बहाई विश्व केंद्र, यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल और बहाई धर्म के अनुयायियों (इज़राइल में धार्मिक समूहों में से एक) के लिए एक तीर्थ स्थल है।

- ब्रिटिश जनरल एडमंड एलेंबी के नेतृत्व में लड़ रहे भारतीय घुड़सवार ब्रिगेडों ने 1918 में हाइफा को तुर्की-जर्मन सेना के नियंत्रण से मुक्त कराने में सहायता की थी।

7.5. मॉन्टेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार

(Montagu-Chelmsford Reforms)

सुर्खियों में क्यों?

- जुलाई 2018 को मॉन्टेग्यू चेम्सफोर्ड रिपोर्ट (MCR) के नाम से जानी जाने वाली **'भारतीय संवैधानिक सुधारों पर रिपोर्ट'** के प्रकाशन के 100 वर्ष पूर्ण हुए।

मॉन्टेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार (MCR सुधार) के बारे में

- मॉन्टेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार, 1919 में ब्रिटिश भारत की औपनिवेशिक सरकार द्वारा **भारत में क्रमिक रूप से स्वशासी संस्थाओं को लाने** हेतु प्रस्तुत किए गए सुधार थे।
- यह रिपोर्ट भारत सरकार अधिनियम, 1935 का और अंततः संविधान का आधार बनी।
- मॉन्टेग्यू घोषणा (1917) के साथ MCR सुधारों को आधुनिक भारत के मैग्नाकार्टा की संज्ञा दी जाती है।
- इसके **प्रमुख प्रावधान** निम्नलिखित थे:
  - केंद्रीय और प्रांतीय विषयों को विभाजित कर प्रांतों पर केंद्रीय नियंत्रण में कमी की गई।
  - प्रांतीय सरकार के स्तर पर द्वैध शासन (गवर्नर के लिए आरक्षित विषय और मंत्रियों के लिए हस्तांतरित विषयों के साथ) प्रणाली का आरम्भ किया गया।
  - देश में पहली बार द्विसदनात्मक व्यवस्था (निचला सदन और उच्च सदन) और प्रत्यक्ष विधायन की व्यवस्था लायी गयी। इसने संपत्ति, कर या शिक्षा के आधार पर सीमित लोगों को मताधिकार प्रदान किया।
  - गवर्नर जनरल को सदनों के सत्र का आह्वान करने, उनका सत्रावसान करने, उन्हें भंग करने और अध्यादेशों को प्रख्यापित करने की शक्तियाँ प्रदान की गई थीं।
  - वायसराय की कार्यकारिणी परिषद में आठ सदस्यों में से तीन भारतीयों की नियुक्ति का प्रावधान किया गया था।
  - इसने सिख, भारतीय ईसाई, आंग्ल-भारतीय और यूरोपीय लोगों के लिए पृथक निर्वाचन प्रदान कर सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व के सिद्धांत को आगे बढ़ाया।
  - इसमें लोक सेवा आयोग की स्थापना हेतु प्रावधान किया गया था। इसलिए 1926 में एक केंद्रीय लोक सेवा आयोग की स्थापना की गई।
  - इसने पहली बार केंद्रीय बजट को प्रांतीय बजट से पृथक किया और बजट बनाने के लिए प्रांतीय विधानमंडल को अधिकृत किया।
  - इसमें एक सांविधिक आयोग (1927 में साइमन कमीशन की स्थापना इसी का परिणाम था) की नियुक्ति का प्रावधान भी किया गया था। इस आयोग का कार्य अधिनियम के लागू होने के दस वर्षों के पश्चात इसके कार्यान्वयन की समीक्षा करना और उस पर एक रिपोर्ट तैयार करना था।

7.6. आज़ाद हिंद सरकार

(Azad Hind Government)

सुर्खियों में क्यों?

सरकार द्वारा हाल ही में आज़ाद हिंद सरकार के गठन की 75वीं वर्षगांठ मनाई गई।

आजाद हिंद सरकार

- **अस्थायी आजाद हिंद सरकार की स्थापना** सुभाष चंद्र बोस द्वारा 21 अक्टूबर, 1943 को **सिंगापुर में** की गई थी। वे आज़ाद हिंद सरकार के नेता थे और इस निर्वासित अस्थायी भारत सरकार के प्रमुख भी थे।
- यह 1940 के दशक में भारत को ब्रिटिश शासन से स्वतंत्र कराने हेतु धुरी शक्तियों के साथ सम्बद्ध होने के उद्देश्य से भारत के बाहर प्रारम्भ किए गए **स्वतंत्रता आंदोलन का एक भाग था।**
- आज़ाद हिंद सरकार के अस्तित्व ने अंग्रेजों के विरुद्ध किए जाने वाले **स्वतंत्रता संघर्ष को अधिक वैधता प्रदान की।**

आजाद हिन्द फौज (INA)

- INA की स्थापना का विचार सर्वप्रथम मलाया में **मोहन सिंह** के मस्तिष्क में आया। मोहन सिंह, ब्रिटिश भारतीय सेना में एक भारतीय सैन्य अधिकारी थे।

- आजाद हिन्द फौज की स्थापना द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान सिंगापुर, मलेशिया और दक्षिण पूर्व एशिया के अन्य देशों में जापानियों द्वारा बंदी बनाए गए ब्रिटिश भारतीय सेना के **युद्धबन्दियों** द्वारा की गई थी।
- INA की **पहली डिवीजन** का गठन 1 सितंबर 1942 को किया गया था।
- इन्हें संगठित करने और INA का गठन करने का मुख्य कार्य **रासबिहारी बोस** द्वारा किया गया था। बाद में इसे सुभाष चंद्र बोस द्वारा एक सेना के रूप में पुनः संगठित किया गया।
- INA **महिलाओं की समानता** से संबन्धित मुद्दों को उठाने में भी सबसे आगे था और इसने ब्रिटिश शासन से संघर्ष करने के साथ-साथ INA को चिकित्सा सेवाएं प्रदान करने के उद्देश्य से एक अखिल-स्वयंसेवी महिला इकाई के रूप में महिला रेजिमेंट (**रानी झांसी रेजिमेंट**) का गठन किया।

INA मुकदमा

- 1945- 46 के दौरान, कर्नल प्रेम सहगल, कर्नल गुरबख्श सिंह ढिल्लों, मेजर जनरल शाह नवाज खान समेत बंदी बनाए गए सैकड़ों INA सैनिकों का एक संयुक्त कोर्ट-मार्शल लाल किले में आयोजित किया गया था।
- मुस्लिम लीग समेत स्वतंत्रता आंदोलन के नेताओं जवाहरलाल नेहरू, सर तेज बहादुर सप्रू, कैलाशनाथ काटजू, भूलाभाई देसाई, आसफ अली ने विचारधारात्मक भिन्नता के बावजूद बोस के साथियों का बचाव किया।
- INA के इस प्रसिद्ध मुकदमे के कारण फरवरी 1946 में मुंबई और कराची बंदरगाह से लेकर मद्रास, विशाखापत्तनम और कलकत्ता बंदरगाह तक भारतीय शाही नौसेना और वायुसेना के अधिकारियों तथा नाविकों की हड़ताल समेत सम्पूर्ण भारत में वृहत रूप से अशांति उत्पन्न हुई। इसके समर्थन में कराची और कालीकुंड (वर्तमान में पश्चिम बंगाल में) समेत विभिन्न स्थानों पर वायु सैनिकों ने भी हड़ताल की।
- इतिहासकारों ने इस अशांति को ब्रिटिश साम्राज्य के **"ताबूत में आखिरी कील"** की संज्ञा दी है।

8. व्यक्तित्व (Personalities)

8.1. गुरु नानक देव जी (Guru Nanak Dev Ji)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में भारत सरकार ने **करतारपुर कॉरिडोर** के निर्माण के द्वारा राष्ट्रीय और साथ ही साथ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर **श्री गुरु नानक देव जी की 550वीं जंयती** का स्मरणोत्सव मनाए जाने का निर्णय लिया है।

करतारपुर कॉरिडोर

- **परियोजना के विषय में:** इस प्रस्तावित परियोजना के माध्यम से पाकिस्तान के पंजाब के नरोवाल जिले में स्थित पवित्र तीर्थ स्थल **गुरुद्वारा दरबार साहिब करतारपुर** को भारत के पंजाब राज्य में स्थित **डेरा बाबा नानक साहिब गुरुद्वारे** से जोड़ा जाएगा। इसका निर्माण कार्य नवंबर 2019 में गुरु नानक देव की 550वीं जयंती के पूर्व ही पूर्ण करना है। यह कॉरिडोर रावी नदी से गुजरेगा।
- **गुरुद्वारे के विषय में:** इसका निर्माण वर्ष 1921-29 के मध्य पटियाला के महाराजा के आदेश पर किया गया था तथा यह माना जाता है कि गुरु नानक जी ने अपने जीवन के अंतिम 18 वर्ष यहीं पर व्यतीत किए थे।

गुरु नानक देव जी के बारे में

- गुरु नानक सिख धर्म के संस्थापक (दस सिख गुरुओं में प्रथम) थे तथा एक प्रमुख भक्ति संत भी थे।
- उनका जन्म पंजाब (पाकिस्तान) के ननकाना साहिब में 1469 ईस्वी में हुआ था और पाकिस्तान के ही करतारपुर में उनकी मृत्यु हुई थी।
- गुरु नानक और सिख धर्म मध्ययुगीन भारत में भक्ति आन्दोलन की निर्गुण (निराकार ईश्वर) परम्परा से प्रभावित थे।
- उन्होंने एक ईश्वर की आराधना के महत्त्व पर बल दिया।
- उनके अनुसार जाति, पंथ या लिंग मोक्ष की प्राप्ति हेतु अप्रासंगिक हैं।
- मोक्ष से संबंधित उनका विचार निष्क्रिय परमानंद की एक स्थिति पर ही नहीं बल्कि सामाजिक प्रतिबद्धता की एक सुदृढ़ भावना के साथ सक्रिय जीवन के अनुसरण पर भी बल देता था।
- उन्होंने स्वयं अपनी शिक्षाओं के सार हेतु नाम, दान और स्नान शब्दों का प्रयोग किया, जिनका वास्तविक अर्थ उचित उपासना, अन्यों का कल्याण और आचार की शुद्धता है।
- वर्तमान में उनकी शिक्षाएं नाम-जपना, किर्त-करना (कीरत करना) और वंद-चखना के रूप में स्मरण की जाती हैं, जो उचित विश्वास और उपासना, ईमानदार जीवन तथा दूसरों की सहायता के महत्त्व को भी रेखांकित करती हैं।
- उन्होंने यह आग्रह किया कि उनके अनुयायी गृहस्थ होने चाहिए और उन्हें उत्पादक एवं उपयोगी व्यवसायों को अपनाना चाहिए। उनसे अनुयायी समुदाय के कल्याणार्थ निधि में योगदान करने की भी अपेक्षा की जाती थी।
- 1539 ईस्वी में अपनी मृत्यु से पूर्व गुरु नानक ने अपने एक अनुयायी लहना (बाद में गुरु अंगद के नाम से प्रसिद्ध) को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया था। गुरु अंगद ने एक नवीन लिपि 'गुरुमुखी' में गुरु नानक की रचनाओं का संकलन किया और उसमें अपनी तरफ से भी कुछ अंश जोड़े।

संबंधित तथ्य

हाल ही में, पाकिस्तान के ननकाना साहिब में एक छठे सिख तख्त की स्थापना का प्रस्ताव किया गया है।

सिख तख्तों के विषय में

- **पंज तख्त:** पंज तख्त सिख धर्म के 5 महत्वपूर्ण गुरुद्वारे हैं, जिन्हें सिख समुदाय में अत्यधिक सम्मान प्राप्त है और ये समुदाय हेतु आवश्यक धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक निर्णय लेते हैं। 'तख्त' एक फारसी शब्द है, जिसका अर्थ है 'शाही सिंहासन'।
- **अवस्थिति**
  - गुरु हरगोबिंद द्वारा 1606 ईस्वी में स्थापित **अकाल तख्त (अमृतसर)** पंज तख्त में सर्वोच्च है।
  - **चार अन्य तख्त हैं:** तख्त केशगढ़ साहिब (आनंदपुर साहिब), तख्त दमदमा साहिब (तलवंडी साबो, भटिंडा), तख्त पटना साहिब (बिहार) और तख्त हुजूर साहिब (नांदेड़, महाराष्ट्र)।

VISION IAS

- ये चारों तख्त **गुरु गोविंद सिंह जी** से संबंधित हैं, जो सिखों के दसवें गुरु थे। गुरु गोविंद सिंह ने 1699 ईस्वी में केशगढ़ साहिब में सिख योद्धाओं के प्रथम संगठन **खालसा** की स्थापना की थी।

- **नियंत्रण:** पंजाब में तीन तख्तों को प्रत्यक्ष रूप से **शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक समिति (SGPC)** द्वारा नियंत्रित किया जाता है तथा इस कार्य हेतु जत्थेदारों (जो तख्त का नेतृत्व करते हैं) की नियुक्ति की जाती है। इसके विपरीत पंजाब के बाहर दो तख्तों के अपने ट्रस्ट और बोर्ड हैं।

संबंधित तथ्य

गुरु ग्रंथ साहिब

- यह सिखों का पवित्र ग्रंथ है। इसमें **दस सिख गुरुओं में से छह गुरुओं** के साथ-साथ हिन्दू एवं मुस्लिम परम्पराओं के प्रमुख संतों जैसे कि **कबीर, रविदास, रामानंद, नामदेव, भगत भीकन, शेख फरीद** आदि के गीतों को शामिल किया गया है।
- इसका संकलन पांचवे सिख गुरु **गुरु अर्जुन देव जी** द्वारा 1604 ईस्वी में किया गया था।

संबंधित तथ्य

- हाल ही में पाकिस्तान ने पकिस्तान स्थित कटास राज की यात्रा हेतु भारतीय तीर्थ यात्रियों को वीज़ा जारी किए हैं। इसे पाकिस्तान में हिन्दू समुदाय के पवित्रतम स्थलों में से एक माना जाता है। कटास राज **पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त के पोटवार पठार क्षेत्र** में अवस्थित है।

8.2. संत कबीर

(Saint Kabir)

सुर्ख़ियों में क्यों?

महान संत और कवि, कबीर की 500वीं पुण्यतिथि के अवसर पर प्रधानमंत्री ने संत कबीर समाधि पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

संत कबीर से संबंधित तथ्य

- कबीरदास, एक रहस्यमय कवि और भारत के महान संत थे, जिनका जन्म 1440 में हुआ था और वर्ष 1518 में उनकी मृत्यु हो गयी थी।
- वह सबसे महत्वपूर्ण **निर्गुण भक्ति संत** हैं।
- कबीर की शिक्षा पूर्णतः, निश्चित ही प्रबल, प्रमुख धार्मिक परंपराओं को अस्वीकार करने और भक्ति के निर्गुण रूप पर आधारित थी।
- उनकी शिक्षाओं द्वारा स्पष्ट रूप से ब्राह्मणवादी, हिंदूधर्म और इस्लाम में प्रचलित लौकिक रूपों की उपासना तथा पुजारी वर्ग की श्रेष्ठता एवं जाति व्यवस्था की आलोचना की गयी।
- ऐसा माना जाता है कि उन्होंने बचपन में अपने गुरु रामानंद से आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त की थी।
- **कबीर पंथ** एक विशाल धार्मिक समुदाय है जो कबीर को संत मत संप्रदायों (Sant Mat sects.) के प्रणेता के रूप में मान्यता प्रदान करता है।
- कबीर दास प्रथम भारतीय संत हैं, जिन्होंने हिंदू धर्म और इस्लाम को सार्वभौमिक मार्ग प्रदान कर समन्वयित किया है जिसका अनुसरण हिंदुओं और मुस्लिम दोनों द्वारा किया जा सकता है।
- उनके अनुसार प्रत्येक जीव का दो आध्यात्मिक तत्वों, जीवात्मा और परमात्मा के साथ संबंध होता है। मोक्ष के संबंध में उनका विचार था कि, यह इन दो दिव्य तत्वों के एक होने की प्रक्रिया है।
- कबीर दास की कुछ महान **रचनाएँ बीजक, कबीर ग्रंथावली, अनुराग सागर, सखी ग्रंथ** इत्यादि हैं।

निर्गुण भक्ति तथा सगुण भक्ति

- निर्गुण भक्त निराकार ईश्वर के उपासक होते थे, हालाँकि वे ईश्वर को राम, गोविंद, हरि या रघुनाथ आदि जैसे विभिन्न नामों से पुकारते थे। संत कबीर और गुरु नानक निर्गुण भक्ति परम्परा के प्रमुख संत हैं।
- सगुण भक्त ईश्वर के गुणों के साथ उनके साकार रूप की या मानवीय रूप की आराधना करते थे। विष्णु एवं उनके अवतार,

VISION IAS

जैसे- राम और कृष्ण, सगुण भक्ति धारा के सर्वाधिक आराध्य देवता हैं।

- इस प्रकार उत्तर भारत का सगुण भक्ति आन्दोलन अपने चरित्र में अनिवार्य रूप में वैष्णव था जबकि दक्षिण भारत में प्रचलित आन्दोलन में वैष्णववाद एवं शैववाद, दोनों ही धाराओं का समावेश था।

8.3. स्वामी विवेकानंद

(Swami Vivekananda)

सुर्ख़ियों में क्यों?

इस वर्ष, 1893 में शिकागो में आयोजित **विश्व धर्म संसद में** स्वामी विवेकानंद के **संबोधन** की **125वीं वर्षगांठ** मनाई जा रही है।

स्वामी विवेकानंद के बारे में

- उनकी शिक्षाओं और दर्शन में **धर्म, युवा, शिक्षा, आस्था, चरित्र निर्माण के साथ-साथ भारत से संबंधित सामाजिक मुद्दों के विभिन्न पहलुओं पर जोर** दिया गया है।
- ये भारत में **हिंदू धर्म के पुनरुत्थान** की एक प्रमुख शक्ति थे और इन्होंने औपनिवेशिक भारत में राष्ट्रवाद की अवधारणा में अपना योगदान दिया।
- ये **रामकृष्ण के शिष्य** थे, जिनसे उन्होंने **स्वयं के दिव्य और आध्यात्मिक पक्ष के साथ-साथ मानव जाति के प्रति दयालुता और सेवा के** महत्व के बारे में भी सीखा।
- स्वामी विवेकानंद की प्रसिद्ध साहित्यिक रचनाओं में राज योग, कर्म योग, भक्ति योग, ज्ञान योग, *माय मास्टर, लेक्चर्स फ्रॉम कोलंबो टू अल्मोड़ा* प्रमुख हैं।

राष्ट्रवाद पर दर्शन (Philosophy on Nationalism)

- स्वामी विवेकानंद का राष्ट्रवाद **भारतीय आध्यात्मिकता और नैतिकता** की गहराई पर आधारित है। इन्होंने भारत के पुनरुत्थान को आध्यात्मिक लक्ष्य की इसकी पुरानी परंपरा से जोड़ा।
- प्रकृति में धर्मनिरपेक्ष पश्चिमी राष्ट्रवाद के विपरीत, स्वामी विवेकानंद का राष्ट्रवाद **धर्म पर आधारित** था, जो भारतीयों के जीवन का आधार है।
- विवेकानंद की तरह, **अरबिंद घोष और महात्मा गांधी** ने भी यह महसूस किया कि धर्म और आध्यात्मिकता भारतीयों की नसों में है और इन्होंने धर्म और आध्यात्मिकता की शक्ति को जागृत करके भारत के एकीकरण के लिए कार्य किया।

धर्म पर दर्शन (Philosophy on Religion)

- स्वामी विवेकानंद वेदान्त दर्शन के महान समर्थक थे और उन्होंने रामकृष्ण मिशन के माध्यम से पश्चिम में अद्वैत वेदांत दर्शन का प्रचार-प्रसार किया।
- अद्वैत वेदांत हिंदू धर्म की एक गैर-द्वैतवादी परंपरा है, जिसकी जड़ें वेदों और उपनिषदों में है, जो एक सत्य और एक ईश्वर को मानता है।
- शंकराचार्य वेदांत दर्शन के संस्थापक थे।
- शंकर के अनुसार, माया की काल्पनिक शक्ति के प्रभाव में आत्मा में अनेकत्व और वैयक्तिकता का मिथ्या भाव उत्पन्न हो जाता है। जगत के मिथ्या होने का ज्ञान प्राप्त होते ही आत्मा जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो जाती है।
- उन्होंने अन्य धर्मों की एकान्तिकता के विपरीत, वेदांत को उदार और सार्वभौमिक धर्म के रूप में प्रस्तुत करने के लिए कर्म, भक्ति, ज्ञान और राज योग को मोक्ष प्राप्ति के समान साधन के रूप में प्रस्तुत किया।
- उन्होंने कहा कि हालांकि विभिन्न धर्मों के पथ अलग-अलग हैं लेकिन सबके लक्ष्य समान हैं।
- उन्होंने सभी धर्मों की एकता और **एक सार्वभौमिक धर्म** में उनके समेकन को बहुत महत्व दिया।
- स्वामी विवेकानंद ने अपने भाषण में कहा कि **न केवल अन्य धर्मों के साथ सहिष्णुता का पालन करो, बल्कि सकारात्मक रूप से उन्हें अपनाओ, क्योंकि सच्चाई सभी धर्मों का मूल आधार है।**

VISION IAS

- उन्होंने **भारतीय आध्यात्मिक परंपराओं की सहिष्णुता और सार्वभौमिकता** के बारे में बात की। उन्होंने संकीर्ण मानसिकता और धार्मिक कट्टरता की निंदा की।
- उन्होंने **सभी मनुष्यों की समानता** के विचार का प्रचार किया।

शिक्षा पर दर्शन (Philosophy on Education)

- स्वामी विवेकानंद ने हमारी मातृभूमि के पुनरुत्थान के लिए शिक्षा पर सबसे अधिक बल दिया और कहा कि कोई राष्ट्र उसी अनुपात में उन्नत है जिस अनुपात में उसकी जनता शिक्षित है।
- उन्होंने एक **मानव निर्माण और चरित्र निर्माण करने वाली शिक्षा** की वकालत की।
- उन्होंने कहा कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो छात्रों को आत्मनिर्भर बनाए और जीवन की चुनौतियों का सामना करने में उनकी मदद करे।

रामकृष्ण मिशन (Ramakrishna Mission)

- 1897 में विवेकानंद द्वारा स्थापित यह मिशन एक **मानवतावादी संगठन है जो चिकित्सा, राहत और शैक्षिक कार्यक्रम संचालित** करता है।
- मिशन के दो मुख्य उद्देश्य हिंदू संत रामकृष्ण (1836-86) के जीवन में अवतीर्ण (अपनायी गयी) वेदांत की शिक्षाओं को फैलाना और लोगों की सामाजिक स्थितियों में सुधार करना है।
- मिशन द्वारा प्रचारित आदर्शों में कर्म ही पूजा, प्रत्येक आत्मा की अंतर्निहित दिव्यता और धर्मों का सद्भाव सम्मिलित है।

8.4. श्री सतगुरु राम सिंहजी

(Sri Satguru Ram Singhji)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में संस्कृति मंत्रालय ने **सिख दार्शनिक श्री सतगुरु राम सिंहजी** (जिन्हें राम सिंह कूका के नाम से भी जाना जाता है) की 200वीं जयंती के उपलक्ष्य में एक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन किया है।

श्री सतगुरु राम सिंहजी के बारे में

- इनका जन्म 1816 में लुधियाना में हुआ था और ये एक महान आध्यात्मिक गुरु, एक विचारक, एक द्रष्टा, दार्शनिक, समाज सुधारक और एक स्वतंत्रता सेनानी थे।
- इन्होंने सिखों के मध्य विद्यमान जाति व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष किया और अंतर-जातीय विवाह को प्रोत्साहित किया।
- इन्होंने बालिकाओं को बाल्यावस्था में ही मारने के विरुद्ध उपदेश दिया, सती प्रथा के विरुद्ध दृढ़ता से डटे रहे और विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया।

नामधारी / कूका आंदोलन:

- इस आंदोलन की **स्थापना 1840** में पश्चिमी पंजाब में **भगत जवाहरमल** ने की थी।
- इसके मूल सिद्धांतों में सिखों के मध्य जाति और इसी प्रकार के अन्य भेदभावों को समाप्त करना, मांस खाने और शराब एवं नशीले पदार्थों के सेवन को हतोत्साहित करना और महिलाओं को पार्थक्य से बाहर निकलने के लिए प्रोत्साहित करना था।
- पंजाब पर अंग्रेजों के अधिकार के बाद, यह आंदोलन धार्मिक शुद्धिकरण अभियान से राजनीतिक अभियान में बदल गया।
- 1857 के विद्रोह के दौरान, सतगुरु राम सिंहजी ने औपचारिक रूप से नामधारी आंदोलन का प्रारंभ किया। इस आन्दोलन के प्रारंभ के समय उन अनुष्ठानों का अनुकरण किया गया जिन्हें गुरु गोविंद सिंह द्वारा खालसा की स्थापना के समय किया गया था।
- इन्होंने **ब्रिटिश शासन का कड़ा विरोध** किया और उनके विरुद्ध एक गहन असहयोग आंदोलन प्रारंभ किया। इनके नेतृत्व में लोगों ने अंग्रेजी शिक्षा, मिल के कपड़े और अन्य आयातित वस्तुओं का बहिष्कार किया। कूका अनुयायियों ने सक्रिय रूप से सविनय अवज्ञा को प्रचारित किया।
- सतगुरु के सभी अनुयायी सफ़ेद पोशाक, सीधी और दबी हुए पगड़ी और अपने ऊनी सेहरे से पहचाने जाते हैं।

- केवल कृपाण (तलवार) के अपवाद के साथ उन्हें सिख धर्म के पांच प्रतीकों को धारण करना आवश्यक था। यद्यपि, उन्हें अपने साथ एक लाठी रखना भी आवश्यक था।

8.5. रामानुजाचार्य की प्रतिमा

(Statue of Ramanujacharya)

सुर्ख़ियों में क्यों?

शीघ्र ही हैदराबाद में वैष्णव संत रामानुजाचार्य की 216 फीट ऊंची प्रतिमा का अनावरण किया जाएगा।

प्रतिमा के बारे में

- यह थाईलैंड की विशाल बुद्ध प्रतिमा (302 फीट) के पश्चात, **विश्व की दूसरी सबसे ऊंची** प्रतिमा बन जाएगी। इसे **"समानता की प्रतिमा (स्टैच्यू ऑफ इक्वेलिटी)"** के रूप में जाना जाएगा।
- यह प्रतिमा **पञ्चलौह** (सोना, चांदी, तांबा, पीतल और टिन से निर्मित मिश्रधातु) से निर्मित है। इस प्रतिमा के आधार वाले भाग पर 36 हाथियों और 27 फीट ऊँची कमल की पंखुड़ियों को चित्रित किया गया है।

रामानुजाचार्य के बारे में

- **रामानुजाचार्य या इलैया पेरुमल** एक दक्षिण भारतीय ब्राह्मण धर्मशास्त्री एवं दार्शनिक थे। ये हिंदूधर्म की **भक्ति परम्परा** के सबसे प्रभावशाली विचारक थे।
- उनके दर्शन को **विशिष्टाद्वैतवाद (विशिष्ट+अद्वैत)** के रूप में जाना जाता है।
- उन्होंने तीन प्रमुख भाष्यों यथा वेदार्थ-संग्रह, श्री-भाष्य और भगवद्गीता-भाष्य में भक्ति के स्वरूप को एक बौद्धिक आधार प्रदान किया था।
- उन्होंने रूढ़िवादी ब्राह्मणवाद और लौकिक भक्ति (जो सभी वर्गों के लिए खुली हुई थी) के मध्य सतर्क संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया।
- हालांकि, उन्होंने "निचली" जातियों की वेदों तक पहुंच के विचार का समर्थन नहीं किया था, लेकिन शूद्रों और यहां तक कि अन्य सभी बहिष्कृत वर्गों के लिए उपासना के एक साधन के रूप में भक्ति का समर्थन किया।
- भक्ति का प्रचार करते हुए, उन्होंने जातिगत विभेद को नहीं माना और अस्पृश्यता को समाप्त करने का प्रयास किया।

विशिष्टाद्वैत (विशिष्ट+अद्वैत) के अनुसार

- रामानुज के दर्शन को विशिष्टाद्वैत या 'विशिष्ट+अद्वैत' कहा जाता है।
- रामानुज के अनुसार ईश्वर (ब्रह्म) सर्वज्ञ एवं सगुण है।
- उसने जगत की रचना की है, लेकिन उसने जगत की रचना अपने से पृथक रूप में की है। इस प्रकार, जगत और ब्रह्मा में पूर्ण एवं अंश का संबंध है, या पूर्ण के साथ 'विशिष्ट प्रभाव' (इसलिए विशिष्ट+अद्वैत) का संबंध है जो उसकी रचना के लिए अनुग्रह और प्रेम से परिपूर्ण है। यह ईश्वर से एकात्म होते हुए भी, उससे पृथक है।
- उनके अनुसार, मोक्ष-प्राप्ति का सर्वाधिक उपयुक्त मार्ग भक्ति है और सबसे बेहतर योग भक्ति-योग है। विष्णु के प्रति उपासक के गहन भक्तिभाव के कारण उसे यह अनुभव होता है कि वह ईश्वर का ही एक अंश है, और पूर्ण रूप से उसी पर निर्भर है। मोक्ष-प्राप्ति का एक अन्य साधन, प्रपत्ति है, अर्थात् आत्मा का त्याग करना और स्वयं को पूर्ण रूप से ईश्वर के प्रति समर्पित कर देना, उसकी इच्छा पर पूर्ण विश्वास करना तथा पूर्ण आत्मविश्वास के साथ उसकी कृपा की प्रतीक्षा करना।

8.6. सरदार वल्लभभाई पटेल

(Sardar Vallabhbhai Patel)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में गुजरात के नर्मदा जिले में **स्टैच्यू ऑफ़ यूनिटी** के नाम से **सरदार वल्लभभाई पटेल की प्रतिमा** का अनावरण किया गया।

VISION IAS

स्टैच्यू ऑफ़ यूनिटी के विषय में

- यह **विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा है** जिसकी ऊंचाई यह लगभग 597 फीट (182 मीटर) है, जो ऊँचाई में चीन के स्प्रिंग टेम्पल बुद्धा से अधिक ऊँची है।
  - इस प्रतिमा की संकल्पना इस रूप में की गई है कि जैसे सरदार पटेल नर्मदा नदी पर चलते हुए सरदार सरोवर बाँध की तरफ जा रहे हों। यहाँ से सरदार सरोवर जलाशय तथा सतपुड़ा एवं विंध्य पर्वत श्रृंखलाओं का एक अदभुत दृश्य दिखता है।
- इसकी बाहरी परत **कांस्य** से निर्मित है और प्रतिमा के मुख्य भाग को सीमेंट कंक्रीट, प्रबलित इस्पात एवं संरचनात्मक इस्पात से निर्मित किया गया है।
- प्रतिमा के निकट एक **"वाल ऑफ़ यूनिटी"** (एकता की दीवार) अवस्थित है, जिसे देश के विभिन्न राज्यों से एकत्रित मिट्टी से निर्मित किया गया है।

सरदार वल्लभभाई पटेल के बारे में

- ये भारत के प्रमुख राजनीतिक और सामाजिक नेता थे, जिन्होंने देश के स्वाधीनता संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् संयुक्त व स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में देश के एकीकरण का मार्ग प्रशस्त किया। इन्हें **"भारत का लौह पुरुष" एवं "भारत का बिस्मार्क" भी** कहा जाता है।
- महात्मा गाँधी के कार्य एवं दर्शन से प्रेरित होने से पहले से ही वह एक सफल एवं अनुभवी अधिवक्ता थे।
- कालान्तर में पटेल ने ब्रिटिश राज द्वारा अधिरोपित दमनकारी नीतियों के विरुद्ध **गुजरात के खेड़ा, बोरसद और बारदोली के किसानों** को एक **अहिंसक सविनय अवज्ञा आन्दोलन** के लिए संगठित किया। अपनी इस भूमिका में वे गुजरात के सर्वाधिक प्रभावशाली नेताओं में से एक बन गए थे।
- उन्हें आधुनिक अखिल भारतीय सेवाओं की स्थापना हेतु **भारत के सिविल सेवकों के "संरक्षक संत" (Patron Saint)** के रूप में भी याद किया जाता है।
- उन्होंने दांडी मार्च हेतु **लोगों को एकजुट करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका** निभाई थी।
- वे **वर्ष 1931 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कराची अधिवेशन के अध्यक्ष** भी निर्वाचित हुए थे।
- उन्होंने **565 अर्द्ध-स्वायत्त देशी रियासतों और ब्रिटिश काल के औपनिवेशिक प्रान्तों को मिलाकर एक संयुक्त भारत के निर्माण** का उत्तरदायित्व लिया।

खेड़ा सत्याग्रह (1918)- प्रथम असहयोग

- यह गुजरात के खेड़ा जिले में महात्मा गांधी द्वारा आयोजित एक सत्याग्रह आन्दोलन था।
- यह चंपारण सत्याग्रह और अहमदाबाद मिल हड़ताल के पश्चात् तीसरा सत्याग्रह आन्दोलन था।
- गांधी जी ने यह आन्दोलन खेड़ा जिले के किसानों को समर्थन प्रदान करने हेतु किया था।
- खेड़ा के किसान फसल नष्ट होने और प्लेग महामारी के प्रसार के कारण ब्रिटिश शासन द्वारा आरोपित उच्च करों का भुगतान करने में असमर्थ थे।

बारदोली सत्याग्रह (1928)

- बारदोली सत्याग्रह आन्दोलन जनवरी 1928 में आरम्भ हुआ था। इस आन्दोलन को बारदोली तालुका में भू-राजस्व में 30% की वृद्धि के विरोध में किया गया था।
- फरवरी 1928 में सरदार वल्लभभाई पटेल को आन्दोलन का नेतृत्व करने हेतु आमंत्रित किया गया।
- बारदोली सत्याग्रह में ही महिलाओं द्वारा वल्लभभाई पटेल को "सरदार" की उपाधि प्रदान की गई।

8.7. सर छोटू राम

(Sir Chhotu Ram)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, प्रधानमंत्री द्वारा हरियाणा के रोहतक जिले में सर छोटू राम (1881-1945) की मूर्ति का अनावरण किया गया।

सर छोटू राम की राजनीतिक गतिविधियां

- उन्होंने 1915 में **जाट गजेट** की शुरुआत की और तत्पश्चात **जाट सभा** की स्थापना की।
- 1916 में वे **कांग्रेस** में शामिल हो गए। 1920 में, उन्होंने **जमींदार पार्टी** की शुरुआत की, जो बाद में फजल-ए-हुसैन और सर सिकंदर हयात खान के साथ गठबंधन करके 1923 में यूनियनिस्ट पार्टी बन गई।
- उनकी पार्टी ने 1936 के **आम चुनावों** में जीत प्राप्त की और कांग्रेस एवं सिख अकाली दल के साथ गठबंधन सरकार बनाई गई। वे सरकार में राजस्व मंत्री बने।

सर छोटू राम द्वारा आरंभ किए गए सुधार

- इनके द्वारा 1923 में **भाखड़ा बांध परियोजना** की कल्पना की गई थी। बिलासपुर के राजा के साथ मिलकर उन्होंने भाखड़ा बांध परियोजना पर हस्ताक्षर किए।
- उन्हें **कृषि सुधारक** के रूप में जाना जाता था। उनके प्रयासों से, **विभिन्न अधिनियम** पारित किए गए जैसे पंजाब भू-राजस्व (संशोधन) अधिनियम, 1929, पंजाब कृषि उत्पाद बाजार अधिनियम 1939 (मंडी अधिनियम), पंजाब ऋण राहत अधिनियम, 1943।
- उनके द्वारा किए गए कार्यों हेतु, किसानों द्वारा उन्हें **दीन-बंधु** और **रहबर-ए-आज़म** की उपाधि से नवाजा गया था। इसके अतिरिक्त, अंग्रेजों ने उन्हें 1937 में **नाइट हुड** की उपाधि से सम्मानित किया।

8.8. आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी

(Tribal Freedom Fighters)

सुर्ख़ियों में क्यों?

केंद्र सरकार द्वारा गुजरात, झारखंड, छत्तीसगढ़, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश और केरल में आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों को समर्पित छह संग्रहालयों की स्थापना की जाएगी।

आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों का विवरण

- **बिरसा मुंडा:** इसने छोटा नागपुर क्षेत्र में अंग्रेजों के विरुद्ध **"उलगुलान" (विद्रोह) या मुंडा विद्रोह** का नेतृत्व किया।
  - 1894 में बिरसा ने स्वयं को ईश्वर घोषित कर दिया और जनता को जागरूक कर उन्हें जमींदारों एवं ब्रिटिश सरकार दोनों के विरुद्ध भड़काना आरंभ कर दिया।
    - मुंडा आदिवासियों में **खूंटकट्टी प्रणाली** (भूमि पर आदिवासियों के संयुक्त स्वामित्व की व्यवस्था) प्रचलित थी।
    - किन्तु समृद्ध किसान, व्यापारी, साहूकार, **दिकू** (वे बाहरी लोग जिन्होंने आदिवासी लोगों को अपने ऊपर निर्भर बना लिया था) तथा उत्तरी भारत से आए ठेकेदारों द्वारा इस प्रणाली को विशिष्ट **जमींदारी-काश्तकारी प्रणाली** से परिवर्तित करने का प्रयास किया गया।
    - इन नए जमींदारों के कारण आदिवासियों के समक्ष ऋणग्रस्तता और बैठ-बेगार (बलात श्रम) जैसी समस्याएं उत्पन्न हुईं।
  - इसने विक्टोरिया शासन (ब्रिटिश शासन) की समाप्ति की और **मुंडा शासन की स्थापना** की घोषणा की।
  - इसने **अंग्रेजों को कर और साहूकारों को ऋण/ब्याज का भुगतान न करने के लिए** लोगों को संगठित किया।
  - इसने **दो सैन्य इकाइयों का गठन किया -** एक सैन्य प्रशिक्षण और सशस्त्र संघर्ष हेतु तथा दूसरी प्रचार हेतु। इसने 24 दिसंबर,1899 की तिथि को **सशस्त्र संघर्ष** की शुरुआत के दिन के रूप में घोषित किया।
  - अंततः, 3 फरवरी, 1900 को बिरसा को गिरफ्तार कर लिया गया।
  - मुंडा उलगुलान के परिणामस्वरूप सरकार द्वारा छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम, 1908 लागू किया गया, खूंटकट्टी संबंधी अधिकारों को मान्यता प्रदान की गई और बैठ-बेगार (बलात श्रम) पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

- **वीर नारायण सिंह**
  - वीर नारायण सिंह द्वारा छत्तीसगढ़ में 1857 के विद्रोह का नेतृत्व किया गया था। ये सोनाखान के एक उदार जमींदार थे।
- **अल्लूरी सीता राम राजू**
  - इन्होंने 1922 में **रम्पा विद्रोह** का नेतृत्व किया था। उल्लेखनीय है कि यह विद्रोह ब्रिटिश भारत के मद्रास प्रेसीडेंसी की गोदावरी एजेंसी में हुआ एक आदिवासी विद्रोह था। इस विद्रोह के दौरान आदिवासी समुदाय और अन्य समर्थकों के एक समूह द्वारा ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष किया गया। यह विद्रोह मुख्य रूप से अंग्रजों द्वारा पारित किए गए दमनकारी **मद्रास वन अधिनियम, 1882** के विरोध में किया गया था।
  - इस अधिनियम द्वारा वनों में आदिवासियों के मुक्त आवागमन पर प्रतिबंध लगा दिया गया था और उन्हें उनके द्वारा की जाने वाली पारंपरिक **पोडू कृषि** (एक प्रकार की **स्थानान्तरी कृषि**) से रोक दिया गया था।
- **थलक्कल चंदू**
  - ये **पझासी राजा** के कुरिच्या सैनिकों के सेनापति और एक धनुर्धर थे। पझासी राजा ने 19वीं शताब्दी के पहले दशक में केरल के **वायनाड वनों** में ब्रिटिश सेनाओं से संघर्ष किया था।

9. प्राचीन भारत (Ancient History)

9.1. वाकाटक राजवंश

(Vakataka Dynasty)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- पुरातत्वविदों की एक टीम ने पुष्टि की है कि वाकाटक राजवंश ने अपनी राजधानी नंदीवर्द्धन (या वर्तमान समय में नगरधन) से शासन किया था।यह नागपुर जिले के रामटेक तालुका के पास खोजा गया एक बड़ा गांव है।

वाकाटक राजवंश से संबंधित तथ्य:

- **वाकाटक राजवंश** का उद्भव तीसरी शताब्दी के मध्य दक्कन में हुआ था।
- यह दक्कन में **सातवाहनों के अति महत्वपूर्ण उत्तराधिकारी** और उत्तरी भारत में **गुप्तों के समकालीन** था।
- वाकाटक राजवंश एक **ब्राह्मण राजवंश** था। इस राजवंश के संस्थापक **विंध्यशक्ति** के संबंध में अधिक जानकारी प्राप्त नहीं है।
- इसके पुत्र **प्रवरसेन-प्रथम** के शासनकाल में इस राजवंश का क्षेत्रीय विस्तार आरंभ हुआ।
- गुप्त सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय ने अपनी पुत्री का विवाह वाकाटक शाही परिवार में किया था।
- वाकाटक राजवंश कला, वास्तुकला और साहित्य को संरक्षण प्रदान करने हेतु प्रसिद्ध है। शैलोत्कीर्ण बौद्ध विहार और अजंता गुफाओं के चैत्य (यूनेस्को द्वारा घोषित विश्व विरासत स्थल) का निर्माण वाकाटक सम्राट, हरिषेण के संरक्षण में किया गया था।

9.2. हड़प्पा सभ्यता से संबंधित 'युगल की कब्र' की प्राप्ति

(Couple's Grave in Harappan Settlement)

सुर्ख़ियों में क्यों?

पुरातत्वविदों द्वारा हरियाणा के राखीगढ़ी (सबसे बड़ा हड़प्पाई स्थल) के एक कब्रिस्तान में पहली बार एक 'युगल की कब्र' की खोज की गई है।

सिन्धु घाटी सभ्यता में शवाधान प्रक्रिया

- हड़प्पाई स्थलों से प्राप्त समाधियों में मृतक प्रायः गड्ढों में दफ़न थे।
- कभी-कभी, दफनाने के लिए गड्ढे का निर्माण भिन्न-भिन्न तरीकों से किया जाता था - कुछ स्थानों पर, कुछ गड्ढों में ईंटों का पंक्तिबद्ध रूप में उपयोग किया गया है। यह सामाजिक भेदभाव को इंगित करता है।
- कुछ कब्रों में मिट्टी के बर्तन और आभूषण पाए गए हैं, यह उस विश्वास की ओर संकेत करता है कि इनका उपयोग मरणोपरांत किया जा सकेगा। आभूषण पुरुषों और महिलाओं दोनों की ही कब्रों में पाए गए हैं।
- कुछ उदाहरणों में मृतकों को तांबे के दर्पणों के साथ दफनाया गया था। लेकिन कुल मिलाकर, यह प्रतीत होता है कि हड़प्पावासी शवाधान के दौरान मृतकों के साथ कीमती वस्तुओं को रखने में विश्वास नहीं करते थे।

विभिन्न हड़प्पा स्थलों से प्राप्त प्रमुख वस्तुएं

- **हड़प्पा -** विशाल चबूतरों वाले छह अन्नागारों की 2 कतार, पाषाण निर्मित लिंग और योनि के प्रतीक, मातृ देवी की मूर्ति, काष्ठ निर्मित ओखली में गेहूँ और जौ, पासा, ताँबे का तुला और दर्पण, हिरण का पीछा करते हुए कांस्य से बने कुत्ते की एक मूर्ति, पाषाण निर्मित नग्न नर्तकी की मूर्ति और लाल बलुआ पत्थर निर्मित पुरुष के धड़ की मूर्ति।
- **मोहनजोदड़ो -** विशाल स्नानागार, विशाल अन्नागार, दाह संस्कार पश्चात् शवाधान, दाढ़ी वाले पुजारी की मूर्ति।
- **धौलावीरा -** विशाल जलाशय, क्रीड़ांगन, बांध और तटबंध, विज्ञापन पट्टिका की भांति 10 बड़े आकार के संकेतों वाला अभिलेख।
- **लोथल -** गोदी, दोहरा शवाधान, धान की भूसी, अग्नि वेदिकाएं, चित्रित भांड, आधुनिक शतरंज, अश्व और जहाज की टेराकोटा आकृतियां, 45, 90 और 180 डिग्री के कोणों को मापने के उपकरण।
- **रोपड़ -** अंडाकार गड्ढे में मानव शवाधान के साथ दफन कुत्ता।

VISION IAS

- **बालाथल और कालीबंगा -** चूड़ी का कारखाना, खिलौना गाड़ियाँ, ऊँट की हड्डियाँ, अलंकृत ईंटें, गढ़ी, निचला शहर।
- **सुरकोटदा -** अश्व की हड्डियों के प्रथम वास्तविक अवशेष।
- **बनवाली -** खिलौना हल, जौ के दाने, अरीय (रेडियल) गलियों वाला एकमात्र शहर, अंडाकार आकार की बस्ती।
- **आलमगीरपुर -** नांद (trough) पर कपड़े की छाप।

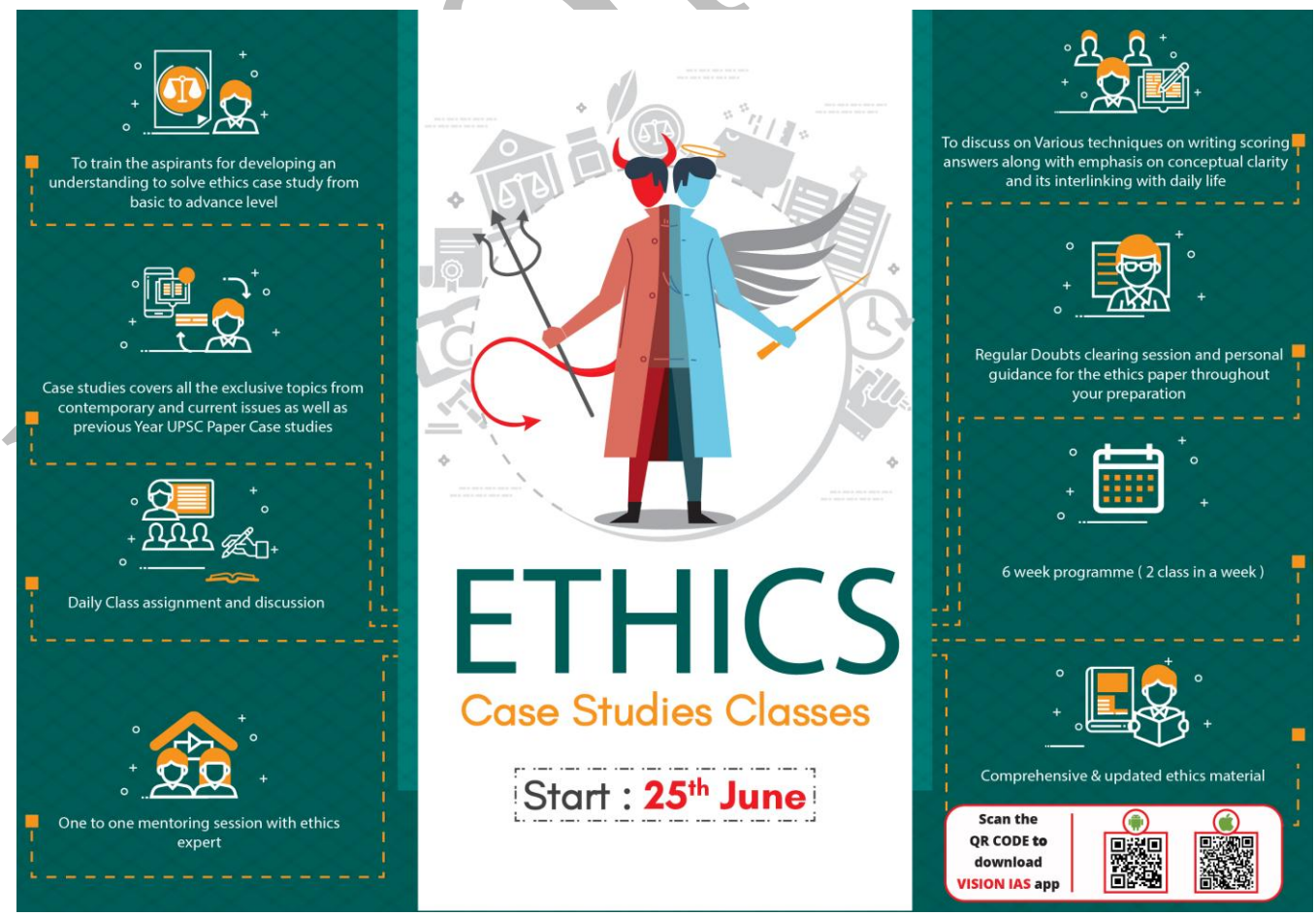

10. सरकारी पहलें / योजनाएं एवं संस्थाएं (Government Initiatives / Schemes & Institutions)

10.1. एक विरासत अपनाएं

(Adopt a Heritage)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, डालमिया समूह को लाल किला पट्टे (lease) पर दिया गया है।

विरासत को अपनाने की परियोजना: अपनी धरोहर अपनी पहचान

- यह पर्यटन मंत्रालय, संस्कृति मंत्रालय, ASI और राज्य/केंद्र शासित प्रदेशों की एक **संयुक्त पहल** है।
- इसका उद्देश्य भारतीय विरासत स्थलों पर विश्व स्तरीय पर्यटक अवसंरचना और सुविधाओं के विकास, संचालन और रखरखाव के माध्यम से विरासत एवं पर्यटन स्थलों को और अधिक संधारणीय बनाना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु **सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों, निजी क्षेत्र की कंपनियों और कॉर्पोरेट नागरिकों/व्यक्तियों को शामिल करने का प्रावधान किया गया है।**
- **कंपनी अपने CSR का उपयोग स्मारक के विकास और रखरखाव हेतु करती है।**
- यह कार्यक्रम निजी कंपनियों के लिए **पूर्ण उत्तरदायित्व को संरेखित करता है**, जैसे- नई अवसंरचना, नई सुविधाएं और स्वच्छता के नए स्तर, मौजूदा परिचालन को बनाए रखना, स्मारक को और अधिक लोकप्रिय बनाना और पर्यटकों की बेहतर तरीके से देखभाल करना।
- कंपनी (अन्य के साथ) का उत्तरदायित्व स्थलों का बेहतर विज्ञापन करने का होगा, परन्तु स्थलों के माध्यम से वे स्वयं का भी विज्ञापन करने में सक्षम होगी।
- कंपनियों का चयन **विजन बिडिंग (Vision Bidding)** प्रक्रिया के माध्यम से किया जाता है (अर्थात विरासत स्थल के लिए सर्वोत्तम दृष्टिकोण रखने वाली कंपनी को अवसर प्राप्त होता है) और इन्हें **स्मारक मित्र** कहा जाता है।
- इस परियोजना में नॉन-कोर एरिया तक **सीमित 'पहुंच'** और **'नो हेन्डिंग ओवर ऑफ़ मोनुमेंट्स"** को शामिल करने की परिकल्पना की गई है।
- जब तक सरकार द्वारा अनुमति प्राप्त नहीं हो जाती है, तब तक कंपनी लोगों से कोई धन एकत्र नहीं करती, और, यदि ऐसा कोई लाभ प्राप्त होता है, तो उसका उपयोग पर्यटन सुविधाओं को बनाए रखने और उन्हें उन्नत बनाने हेतु किया जाएगा।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)

- इसे अलेक्जेंडर कनिंघम द्वारा 1861 में स्थापित किया गया था। यह पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत संस्कृति विभाग के एक संबद्ध कार्यालय के रूप में कार्य करता है।
- यह पुरातात्विक अनुसंधान, वैज्ञानिक विश्लेषण, पुरातात्विक स्थलों की खुदाई आदि के लिए प्रमुख संगठन है।
- प्राचीन स्मारक एवं पुरातात्विक स्थल व अवशेष अधिनियम, 1958 के अंतर्गत भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण देश में 3650 पुरातात्विक स्मारकों/स्थलों और राष्ट्रीय महत्व के अवशेषों का प्रबंधन करता है।

गोद लिए गए 10 स्मारक हैं	
लाल किला	दिल्ली
गंदिकोटा किला	आंध्र प्रदेश

VISION IAS

जंतर मंतर	दिल्ली
हम्पी (हजारा राम मंदिर)	कर्नाटक
लेह पैलेस, लेह	जम्मू कश्मीर
अजंता की गुफाएं	महाराष्ट्र
कुतुब मीनार	दिल्ली
सूरजकुंड	हरियाणा
स्टोक कांगड़ी पर्वत, लद्दाख	जम्मू कश्मीर
गंगोत्री मंदिर और गोमुख तक के क्षेत्र	उत्तराखंड

10.2. सेवा भोज योजना

(Seva Bhoj Scheme)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, संस्कृति मंत्रालय द्वारा एक नई योजना "सेवा भोज योजना" आरंभ की गयी हैं।

इस योजना से संबंधित तथ्य

- यह परोपकारी धार्मिक संस्थानों के वित्तीय बोझ को कम करने हेतु एक केंद्रीय क्षेत्र की योजना है।
- इस योजना के तहत परोपकारी धार्मिक संस्थानों पर लगने वाले **केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर (CGST) तथा एकीकृत वस्तु और सेवा कर (IGST) को केन्द्र सरकार** का हिस्सा लौटा दिया जाएगा, जो संस्थान लोगों/श्रद्धालुओं को बगैर किसी भेदभाव के निःशुल्क भोजन/प्रसाद/लंगर (सामुदायिक रसोई)/भंडारा प्रदान करते हैं।
- यह सभी परोपकारी धार्मिक संस्थानों जैसे मंदिर, गुरुद्वारा, मस्जिद, चर्च, धर्मिक आश्रम, दरगाह, मठ, बौद्धमठ आदि पर लागू होता है, जो निम्नलिखित मानदंडों का पालन करते हैं:
  - जो वित्तीय सहायता/अनुदान के लिए आवेदन करने से पूर्व कम से कम पांच वर्षों तक कार्यरत हों।
  - जो आवेदन के दिन से कम से कम विगत तीन वर्षों से जन सामान्य को निःशुल्क भोजन, लंगर और प्रसाद सार्वजनिक रूप से वितरित कर रहा हो।
  - जो एक महीने में कम से कम 5000 लोगों को निःशुल्क भोजन प्रदान करता हो।
  - उसे FCRA या केंद्रीय/राज्य सरकार के किसी अन्य अधिनियम/नियम के प्रावधानों के तहत ब्लैकलिस्ट नहीं होना चाहिए।

10.3. प्रसाद योजना

(Prasad Scheme)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में गंगोत्री, यमुनोत्री, पारसनाथ को प्रसाद योजना के तहत स्थलों की सूची में शामिल किया गया है। इससे इस योजना के अंतर्गत सम्मिलित स्थलों की कुल संख्या **41** हो गई है। ये स्थल **25 राज्यों में** हैं।

VISION IAS

स्थलों के बारे में

- **गंगोत्री और यमुनोत्री, उत्तराखंड**: गंगोत्री भागीरथी नदी के तट पर स्थित एक **हिंदू तीर्थ स्थल** है और गंगा नदी का उद्गम स्थल भी है जबकि यमुनोत्री यमुना नदी का उद्गम है।
- **अमरकंटक, मध्य प्रदेश:** यह एक अद्वितीय प्राकृतिक विरासत स्थल है तथा विंध्यन और सतपुड़ा पहाड़ियों का मिलन बिंदु भी है, जहां मैकाल पहाड़ियां स्थित हैं। यह एक **हिंदू तीर्थ स्थल** है जहां से नर्मदा नदी, सोन नदी और जोहिला नदी का उद्गम होता है।
- **पारसनाथ, झारखंड:** यह राज्य का सबसे ऊँचा पर्वत शिखर है। यहां स्थित शिखरजी मंदिर, एक महत्वपूर्ण **जैन तीर्थ स्थल** है।

तीर्थयात्रा कायाकल्प एवं आध्यात्मिक संवर्द्धन अभियान (PRASAD) योजना

- इसका उद्देश्य उत्कृष्ट धार्मिक पर्यटन का अनुभव प्रदान करने के लिए प्राथमिकता के आधार पर, योजनाबद्ध और संधारणीय तरीके से तीर्थ स्थलों का **एकीकृत विकास** करना है। यह चिन्हित तीर्थ स्थलों के विकास और सौंदर्यीकरण पर केंद्रित है। इसके उद्देश्यों में निम्नलिखित शामिल हैं:
  - रोजगार सृजन और आर्थिक विकास पर इसके प्रत्यक्ष और गुणक प्रभाव के लिए तीर्थयात्रा पर्यटन का उपयोग।
  - धार्मिक गंतव्यों पर विश्व स्तरीय अवसंरचना के सतत विकास को सुनिश्चित करते हुए पर्यटकों के आकर्षण में वृद्धि करना।
  - स्थानीय संस्कृति, कला, हस्तशिल्प, भोजन इत्यादि को बढ़ावा देना।

10.4. गांधी सर्किट

(Gandhi Circuit)

सुर्खियों में क्यों?

बिहार में **"गांधी सर्किट: भितिहरवा-चंद्रहिया-तुरकौलिया"** के विकास संबंधी परियोजना को स्वीकृति प्रदान की गई है।

स्वदेश दर्शन (एक केन्द्रीय क्षेत्रक योजना)

- **पर्यटन मंत्रालय** ने 2014-15 में देश में थीम आधारित पर्यटक सर्किट के एकीकृत विकास के लिए इस योजना की शुरुआत की थी।
- **इस योजना का उद्देश्य भारत सरकार की अन्य योजनाओं/कार्यक्रमों,** जैसे- स्वच्छ भारत अभियान, कौशल भारत, मेक इन इंडिया आदि के साथ सामंजस्य स्थापित करना है। पर्यटन क्षेत्र का स्थापन इस प्रकार करना है ताकि यह रोजगार सृजन का एक बड़ा वाहक बन सके और आर्थिक विकास को प्रोत्साहित कर सके तथा साथ ही पर्यटन क्षेत्र की पूर्ण क्षमता का दोहन करने हेतु विभिन्न क्षेत्रों के साथ सामंजस्य स्थापित किया जा सके।
- स्वदेश दर्शन योजना के तहत विकास के लिए थीम आधारित **15 सर्किटों** की पहचान की गई है, जिनके नाम हैं: पूर्वोत्तर सर्किट, बौद्ध सर्किट, हिमालय सर्किट, तटीय सर्किट, कृष्णा सर्किट, रेगिस्तान सर्किट, जनजातीय सर्किट, इको सर्किट, वन्यजीव सर्किट, **ग्रामीण सर्किट**, आध्यात्मिक सर्किट, रामायण सर्किट एवं धरोहर सर्किट सूफी सर्किट और तीर्थंकर सर्किट।

अन्य संबंधित तथ्य

- सरकार द्वारा अप्रैल-2017 से अप्रैल-2018 के दौरान **चंपारण सत्याग्रह का शताब्दी वर्ष** मनाने का निर्णय लिया गया था। गांधी सर्किट का विकास इस महोत्सव का हिस्सा है।
- केंद्रीय वित्तीय सहायता के साथ इस परियोजना को **"स्वदेश दर्शन योजना के ग्रामीण सर्किट थीम"** के तहत मंजूरी प्रदान की गई है।
- यह 2015 में **बिहार के लिए घोषित विशेष पैकेज** के तहत विकास के लिए पहचानी गई परियोजनाओं में से एक है।

इन स्थानों का महत्व

- **चंद्रहिया:** यह बिहार के पूर्वी चंपारण जिले में स्थित एक गांव है, जिसका चंपारण सत्याग्रह में एक विशेष स्थान रहा था, क्योंकि 1916 में गांधीजी को **इस गाँव में तब रोका गया था** जब वे किसानों की समस्याओं को सुनने के लिए जसौली पट्टी जा रहे थे जहाँ किसानों को खाद्य फसलों के स्थान पर नील की खेती करने हेतु बाध्य किया जा रहा था।
- **भितिहरवा:** 1917 में जब गांधीजी चंपारण में थे तो इस स्थान को उनके द्वारा **सामाजिक कार्यों के केंद्र के रूप में चुना गया था**। यहाँ एक गांधी आश्रम है, जहां **गांधीजी** भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान ठहरे थे।
- **तुरकौलिया: यह नील आंदोलन का एक प्रमुख केंद्र था।** इसे व्यापक रूप से नील कृषकों की दुर्दशा को संदर्भित करने हेतु चंपारण सत्याग्रह के संदर्भ में **"तुरकौलिया प्रसंग (Turkaulia Concern)"** के रूप में जाना जाता है।

VISION IAS

चंपारण सत्याग्रह (1917)

- यह **भारत में गांधीजी द्वारा प्रारंभ प्रथम सत्याग्रह** था और साथ ही **भारत का पहला सविनय अवज्ञा आंदोलन भी था।**
- चंपारण में यूरोपीय बागान मालिकों द्वारा किसानों को उनकी भूमि के 3/20वें भाग पर नील की खेती करने के लिए बाध्य किया गया था। इसे **तिनकठिया प्रणाली** के नाम से जाना जाता था।
- **राजकुमार शुक्ल के आमंत्रण** पर गांधीजी चंपारण गए थे।
- गांधीजी ने सरकार को एक **जांच समिति के गठन** करने हेतु बाध्य किया, जिसने अवैध वसूली का 25% किसानों को वापस लौटने का आदेश दिया था। इसके एक दशक के भीतर बागान मालिकों ने चंपारण छोड़ दिया।

10.5. भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद

(Indian Council of Historical Research)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- हाल ही में सरकार ने भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद (ICHR) का पुनर्गठन किया है। यह **सोसाइटीज पंजीकरण अधिनियम,1860** के तहत पंजीकृत तथा **मानव संसाधन विकास मंत्रालय** के अधीन एक **स्वायत्त संगठन है।**

ICHR के बारे में

- इसका उद्देश्य ऐतिहासिक अनुसंधान को प्रोत्साहित करना एवं उसे दिशा-निर्देशन प्रदान करना तथा इतिहास के वस्तुनिष्ठ और वैज्ञानिक लेखन को बढ़ावा देना है।
- यह महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में युवा अध्यापकों को **फेलोशिप और वित्तीय सहायता** भी प्रदान करती है तथा भारत और विदेश में इतिहास के वैज्ञानिक अनुसंधान के प्रोत्साहन हेतु भी सहायता करती है।
- **परिषद की संरचना:**
  - अध्यक्ष - सरकार द्वारा मनोनीत एक प्रतिष्ठित इतिहासकार।
  - सरकार द्वारा नामनिर्दिष्ट 18 इतिहासकार।
  - विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से एक प्रतिनिधि।
  - पुरातत्व महानिदेशक।
  - अभिलेख महानिदेशक।
  - भारत सरकार द्वारा मनोनीत चार व्यक्ति, जिनमें से शिक्षा मंत्रालय, संस्कृति विभाग और वित्त मंत्रालय में से प्रत्येक से एक-एक प्रतिनिधि और सदस्य सचिव।

10.6. पर्यटन पर्व, 2018

(Paryatan Parv 2018)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय द्वारा **पर्यटन के देश-व्यापी उत्सव - "पर्यटन पर्व"** के द्वितीय संस्करण का आयोजन किया गया।

पर्यटन पर्व के बारे में

- **पर्यटन पर्व** का आयोजन, पर्यटन के लाभों पर ध्यान केंद्रित करने, देश की सांस्कृतिक विविधता को प्रदर्शित करने और **"सभी के लिए पर्यटन"** के सिद्धांत को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से किया जाता है।

पर्यटन पर्व के घटक

- **देखो अपना देश:** यह भारतीयों को अपने देश में भ्रमण करने हेतु प्रोत्साहित करेगा। इसके अंतर्गत वीडियो, फोटोग्राफ और इस अवसर पर उपस्थित लोगों के मध्य ब्लॉग प्रतियोगिताएं, पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु पर्यटकों के अनुभव से प्राप्त भारत के वृत्तांत चित्रण आदि शामिल होंगे।
- **सभी के लिए पर्यटन:** देश के सभी राज्यों में पर्यटन समारोहों का आयोजन किया जा रहा है। ये मुख्य रूप से व्यापक स्तर पर सार्वजनिक सहभागिता के साथ लोगों के कार्यक्रम होंगे। इन कार्यकलापों में नृत्य, संगीत, थिएटर, पर्यटन प्रदर्शनियां, पाक शैली, हस्तशिल्प, हथकरघा आदि का प्रदर्शन शामिल है।
- **पर्यटन और शासन:** देश भर में विभिन्न विषय वस्तुओं (पर्यटन क्षेत्र में कौशल विकास, पर्यटन में नवाचार और प्रतिष्ठित स्थलों के निकट स्थित स्थानों पर ग्रामीण पर्यटन का विकास आदि) पर हितधारकों के साथ मिल कर संवादमूलक सत्रों एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया जाएगा।

VISION IAS

- **इंडिया टूरिज्म मार्ट 2018 (IMT-2018):** पर्यटन मंत्रालय द्वारा भारतीय पर्यटन व अतिथि सत्कार परिसंघ (Federation of Associations in Indian Tourism and Hospitality: FAITH) की भागीदारी के साथ पर्यटन पर्व के दौरान पहली बार IMT-2018 का आयोजन किया जाएगा।**FAITH,** देश के सभी महत्वपूर्ण व्यापार और अतिथि सत्कार संगठनों का सर्वोच्च संगठन है।

10.7. सांस्कृतिक विरासत युवा नेतृत्व कार्यक्रम

(Cultural Heritage Youth Leadership Programme: CHYLP)

- इसका उद्देश्य युवाओं में उपयुक्त नेतृत्व के गुणों के विकास के दृष्टिकोण से **युवाओं के मध्य भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के प्रति अनुराग को प्रोत्साहित करना, समझना तथा उसका विकास करना है।**
- यह पिछड़े क्षेत्रों में निवास करने वाले अल्प विशेषाधिकार प्राप्त बच्चों की बेहतर समझ विकसित करने हेतु उनकी स्थानीय भाषा में उनसे अंतर-सम्पर्क स्थापित करते हुए उन पर ध्यान केन्द्रित करता है।
- **संस्कृति मंत्रालय** के अधीन एक स्वायत्त संगठन **सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र (CCRT)** इस कार्यक्रम की क्रियान्वयन एजेंसी है।

11. विविध (Miscellaneous)

11.1 हाल ही में प्रदान किए गए भौगोलिक संकेतक

(Geographical Indicators: GI tag)

हाल ही में, निम्नलिखित वस्तुओं को GI टैग प्रदान किया गया है।

विवरण

- **इरोड हल्दी :** तमिलनाडु
- **सिरसी सुपारी :** कर्नाटक (**पहली बार सुपारी वर्ग के लिए GI टैग** प्रदान किया गया है)
- **चिकमगलूर अरेबिका कॉफी और बाबा बूदन गिरि अरेबिका कॉफी :** कर्नाटक
- **कूर्ग अरेबिका कॉफी :** कर्नाटक
- **वायनाड रोबस्टा कॉफी :** केरल
- **मरयूर गुड़:** केरल
- **अराकु घाटी अरेबिका कॉफी :** आंध्र प्रदेश और ओडिशा
- **कंधमाल हल्दी :** ओडिशा

वस्तुओं का भौगोलिक संकेत (पंजीकरण तथा संरक्षण) अधिनियम, 1999

- विश्व व्यापार संगठन (WTO) का एक सदस्य होने के कारण भारत द्वारा **बौद्धिक संपदा अधिकार के व्यापार संबंधी पक्षों पर समझौता (TRIPS)** का अनुपालन करने हेतु इस अधिनियम को अधिनियमित किया गया है।
- **पेरिस कन्वेंशन फॉर प्रोटेक्शन ऑफ़ इंडस्ट्रियल प्रॉपर्टी** के तहत बौद्धिक संपदा अधिकार (IPR) के घटक के रूप में GI को कवर किया गया है।
- अधिनियम को "**महानिदेशक, पेटेंट, डिज़ाइन और ट्रेडमार्क**" द्वारा प्रशासित किया जाता है, जो भौगोलिक संकेत के रजिस्ट्रार भी होते हैं।

GI को किस प्रकार संरक्षण प्राप्त है?

- सुई जेनेरिस सिस्टम (यानी संरक्षण से संबंधित विशेष व्यवस्था)
- कलेक्टिव (Collective) या सर्टिफिकेशन (Certification) के प्रयोग के माध्यम से; तथा
- प्रशासकीय उत्पाद अनुमोदन योजनाओं सहित व्यवसाय प्रथाओं पर ध्यान केंद्रित करने के साधनों के माध्यम से।

GI टैग क्या है?

- यह एक संकेतक है, जिसे किसी विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र को प्रदान किया जाता है। इसका उपयोग विशिष्ट गुणवत्ता और सुस्थापित प्रसिद्धि वाली **कृषि**, **प्राकृतिक** और **विनिर्मित वस्तुओं** के लिए किया जाता है।
- किसी उत्पाद को टैग प्राप्त करने के लिए, इसे उसी क्षेत्र में उत्पादित या प्रसंस्कृत या तैयार किया होना चाहिए।
- GI का पंजीकरण **10 वर्षों** के लिए वैध होता है, इसके पश्चात् इसे नवीनीकृत करने की आवश्यकता होती है।
- GI स्थानीय उत्पादन का समर्थन करता है और यह ग्रामीण एवं जनजातीय समुदायों के उत्थान के लिए एक महत्वपूर्ण आर्थिक साधन होता है।
- GI एक सामूहिक अधिकार है। निर्माताओं द्वारा उत्पादों का व्यावसायिक रूप से दोहन करने हेतु सामूहिक GI मार्क का उपयोग किया जा सकता है।
- भारत में भौगोलिक संकेतक "वस्तुओं का भौगोलिक संकेत (पंजीकरण तथा संरक्षण)अधिनियम, 1999" द्वारा शासित हैं।

VISION IAS

11.2. भारत रत्न

(Bharat Ratna)

सुर्खियों में क्यों?

प्रणब मुखर्जी, नानाजी देशमुख (मरणोपरांत) और भूपेन हजारिका (मरणोपरांत) को भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

पद्म पुरस्कार

- ये देश के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कारों में से एक हैं।
- ये पुरस्कार तीन श्रेणियों में प्रदान किए जाते हैं: **पद्म विभूषण** (असाधारण और विशिष्ट सेवा के लिए), **पद्म भूषण** (उत्कृष्ट कोटि की विशिष्ट सेवा) और **पद्म श्री** (विशिष्ट सेवा)।
- PSUs में काम करने वाले कर्मचारियों सहित सरकारी कर्मचारी (डॉक्टरों और वैज्ञानिकों को छोड़कर) इन पुरस्कारों के लिए पात्र नहीं होते हैं।
- पुरस्कारों की घोषणा प्रत्येक वर्ष गणतंत्र दिवस के अवसर पर की जाती है।
- पद्म पुरस्कारों के लिए प्राप्त सभी नामांकन **पद्म पुरस्कार समिति** (कैबिनेट सचिव की अध्यक्षता में) के समक्ष रखे जाते हैं, जिसका गठन प्रत्येक वर्ष प्रधानमंत्री द्वारा किया जाता है।

उपरोक्त सम्मानित व्यक्तियों के बारे में

- **प्रणब मुखर्जी:** वे एक भारतीय राजनीतिज्ञ हैं तथा 2012 से 2017 तक भारत के 13वें राष्ट्रपति के रूप में कार्य कर चुके हैं।
- **नानाजी देशमुख:** वे भारत के एक राजनीतिज्ञ और सामाजिक कार्यकर्ता थे। इन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य और ग्रामीण आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में काम किया था।
  - इन्होंने चित्रकूट में चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय (**भारत का प्रथम ग्रामीण विश्वविद्यालय**) की स्थापना की और इसके प्रथम कुलाधिपति भी थे।
  - इन्होंने 1950 में गोरखपुर में **भारत का पहला सरस्वती शिशु मंदिर** स्थापित किया था।
  - इन्होंने विनोबा भावे द्वारा प्रारम्भ किए गए **भूदान आंदोलन** में सक्रिय रूप से भाग लिया और उस समय जय प्रकाश नारायण से भी जुड़े जब उन्होंने **"संपूर्ण क्रांति"** का आह्वान किया था।
- **भूपेन हजारिका:** वे असम के एक भारतीय गायक, कवि, संगीतकार और फिल्म निर्माता थे। लोकप्रिय रूप से इन्हें **'ब्रह्मपुत्र के कवि'** के रूप में भी जाना जाता है।
  - ये **संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार (1987)** के साथ ही प्रतिष्ठित **दादा साहेब फाल्के पुरस्कार** (1992) के प्राप्तकर्ता भी थे।
  - भारत का सबसे लंबे पुल (ढोला-सदिया पुल), जो असम में लोहित नदी पर बना है, का नाम इनके नाम पर रखा गया है।

भारत रत्न के बारे में

- 'भारत रत्न' देश का **सर्वोच्च नागरिक सम्मान** है और इसकी स्थापना वर्ष 1954 में की गई थी।
- यह **मानव सेवा के किसी भी क्षेत्र में** असाधारण सेवा / उच्चतम श्रेणी के प्रदर्शन के लिए प्रदान किया जाता है। जाति, व्यवसाय, पद या लिंग के भेद के बिना कोई भी व्यक्ति इस पुरस्कार के लिए पात्र है।
- **भारत रत्न की सिफारिशें स्वयं प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रपति को की जाती है।** इसके लिए कोई औपचारिक सिफारिश आवश्यक नहीं है।
- **वार्षिक पुरस्कारों की संख्या एक विशेष वर्ष में अधिकतम तीन तक सीमित है।** प्रत्येक वर्ष पुरस्कार की घोषणा करना सरकार के लिए अनिवार्य नहीं है।
- पुरस्कार प्रदान करने पर, **प्राप्तकर्ता को राष्ट्रपति द्वारा हस्ताक्षरित एक सनद (प्रमाण पत्र) और एक पीपल की पत्ती के आकार का पदक** प्राप्त होता है।
- पुरस्कार में कोई मौद्रिक अनुदान प्राप्त नहीं होता है।
- संविधान के अनुच्छेद 18 (1) की शर्तों के तहत पुरस्कार का प्रयोग **प्राप्तकर्ता के नाम के आगे उपसर्ग या प्रत्यय के रूप में नहीं किया जा सकता।**

VISION IAS

- इस पुरस्कार के धारकों को **वरीयता तालिका में 7A स्थान** पर रखा गया है।
- दो गैर-भारतीय **खान अब्दुल गफ्फार** (पाकिस्तान के) और **नेल्सन मंडेला** (दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति) को भारत रत्न से सम्मानित किया गया है।

वरीयता सूची

1. राष्ट्रपति
2. उप-राष्ट्रपति
3. प्रधानमंत्री
4. अपने राज्यों में सम्बंधित राज्यों के राज्यपाल
5. भूतपूर्व राष्ट्रपति

5A. उप-प्रधानमंत्री

6. भारत के मुख्य न्यायाधीश, लोकसभा अध्यक्ष
7. संघ के कैबिनेट मंत्री, अपने राज्य में सम्बन्धित राज्यों के मुख्यमंत्री, योजना आयोग के उपाध्यक्ष, पूर्व प्रधानमंत्री, राज्यसभा और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष

7A. भारत रत्न से सम्मानित व्यक्ति

11.3. शांति का नोबेल पुरस्कार 2018

(Nobel Peace Prize 2018)

- यौन हिंसा को युद्ध और सशस्त्र संघर्ष के हथियार के रूप में के प्रयोग किए जाने को समाप्त करने संबंधी प्रयासों के लिए **डेनिस मुकवेज** और **नादिया मुराद** को शांति के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

डेनिस मुकवेज

- ये कांगो के एक डॉक्टर हैं, जो "डाक्टर मिरेकल" के रूप में भी जाने जाते हैं , इन्होंने अपने कर्मचारियों के साथ मिलकर यौन हिंसा से पीड़ित हजारों लोगों का उपचार किया है।
- ये युद्ध में महिलाओं के साथ होने वाले उत्पीड़न के कट्टर आलोचक रहे हैं। साथ ही इन्होंने बलात्कार को "व्यापक विनाश का हथियार" बताया है। उनके कार्यों की सराहना 2015 की एक फिल्म "द मैन हू मेंड्स वीमेन" में भी की गई थी।

नादिया मुराद

- ये एक मानवाधिकार प्रचारक हैं, वह उन लगभग 3,000 यजीदी लड़कियों और महिलाओं में से एक हैं, जो IS आतंकी द्वारा बलात्कार और अन्य दुर्व्यवहार की शिकार हुई हैं। ये वर्तमान में IS को अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय के समक्ष लाने का कार्य कर रही हैं।
- 2016 में, उन्हें मानव तस्करी से पीड़ित लोगों के सम्मान के लिए संयुक्त राष्ट्र का पहला गुडविल एंबेसडर बनाया गया था। उन्होंने 'अवर पीपुल्स फाइट' नामक एक पहल की शुरुआत की और अपने जीवन को इसके लिए समर्पित कर दिया।
- उनके द्वारा लिखित साहसिक पुस्तक 'द लास्ट गर्ल' में ग्रामीण इराकी क्षेत्र में उनके शांतिपूर्ण तरीके से व्यतीत किए गए बचपन, IS के नेतृत्व में होने वाले नरसंहार, उनके समुदाय के विनाश और उनके बचकर जर्मनी भाग निकलने के संबंध में विवरण प्रस्तुत किया गया है।

VISION IAS

11.4. अंतर्राष्ट्रीय गांधी शांति पुरस्कार

(International Gandhi Peace Prize)

सुर्खियों में क्यों?

हाल ही में, सरकार द्वारा चार वर्षों (2015 से 2018 तक) के लिए गांधी शांति पुरस्कार के विजेताओं की घोषणा की गई है, जिसकी अंतिम बार घोषणा 2014 में की गई थी।

पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं की सूची

- **2018: योही सासाकावा,** ये कुष्ठ रोग उन्मूलन के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के सद्भावना दूत हैं।
- **2017:** भारत के सुदूर क्षेत्रों में जनजातीय और ग्रामीण बच्चों को शिक्षा प्रदान करने, ग्रामीण सशक्तिकरण, लैंगिक और सामाजिक समानता को बढ़ावा देने वाले **एकल अभियान न्यास** को।
- **2016:** देशभर के लाखों बच्चों को मध्याह्न भोजन की व्यवस्था करने के लिए **अक्षय पात्र फाउंडेशन** तथा भारत में स्वच्छता में सुधार और हाथ से मैला ढोने वालों (मैनुअल स्केवेंजर्स) की मुक्ति में योगदान करने हेतु **सुलभ इंटरनेशनल** दोनों को संयुक्त रूप से प्रदान किया गया है।
- **2015:** ग्रामीण विकास, शिक्षा और प्राकृतिक संसाधनों के विकास में योगदान देने हेतु कन्याकुमारी स्थित **विवेकानंद केन्द्र** को।

गांधी शांति पुरस्कार सम्मान के बारे में

- यह वार्षिक पुरस्कार है जिसे **1995** में **महात्मा गांधी की 125वीं जयंती** पर स्थापित किया गया था।
- यह **वार्षिक** पुरस्कार उन व्यक्तियों या संस्थाओं को प्रदान किया जाता है, **जिन्होंने अहिंसा एवं अन्य गांधीवादी तरीकों के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिवर्तनों को प्राप्त करने में योगदान दिया है।**
- जूरी में **भारत के प्रधानमंत्री** (अध्यक्ष के रूप में), **भारत के मुख्य न्यायाधीश, लोकसभा में विपक्ष के नेता और दो अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति शामिल होते हैं।**
- यह पुरस्कार **मरणोपरांत नहीं प्रदान किया जा सकता, केवल उस स्थिति के अतिरिक्त जब** उस व्यक्ति की मृत्यु जूरी को प्रस्तुत किए गए प्रस्ताव के बाद हुई हो।
- पुरस्कारों के लिए केवल नामांकन के ठीक पूर्व **10 वर्षों के भीतर की उपलब्धियों** पर ही विचार किया जाता है।

11.5. इंदिरा गाँधी शांति पुरस्कार

(Indira Gandhi Peace Prize)

- सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट (CSE) को वर्ष 2018 के शांति, निरस्त्रीकरण और विकास के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार प्रदान किया गया है।
- वैज्ञानिक आविष्कारों का प्रयोग कर **अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शांति, विकास एवं मानवता के व्यापक कल्याण की दिशा में किये गए रचनात्मक प्रयासों** की स्वीकृति प्रदान करते हुए यह पुरस्कार **वार्षिक तौर** पर संगठनों एवं व्यक्तियों को प्रदान किया जाता है।
- इस पुरस्कार के कुछ प्रसिद्ध प्राप्तकर्ता हैं: डॉ. मनमोहन सिंह (2017), UN हाई कमीशन फॉर रिफ्युज़ीज़ (UNHCR) (2015), भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (2014), एंजेला मर्केल (2013), संयुक्त राष्ट्र एवं उसके महासचिव कोफी अन्नान (2003) तथा एम. एस. स्वामीनाथन (1999)।

11.6. सियोल शांति पुरस्कार 2018

(Seoul Peace Prize 2018)

- हाल ही में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सियोल शांति पुरस्कार, 2018 से सम्मानित किया गया है।
- **सियोल शांति पुरस्कार के बारे में-** इसकी स्थापना 1990 में सियोल में 24वें ओलंपिक खेलों की सफलता उपलक्ष्य में की गई थी। यह पुरस्कार द्विवार्षिक आधार पर किसी व्यक्तित्व को मानवजाति के कल्याण, राष्ट्रों के मध्य समन्वय एवं विश्व शांति बनाए रखने में योगदान हेतु प्रदान किया जाता है।

VISION IAS

11.7. मैग्सेसे पुरस्कार

(Magsaysay Awards)

हाल ही में, दो भारतीय नागरिकों, **भारत वाटवानी और सोनम वांगचुक** को रेमन मैग्सेसे पुरस्कार प्रदान किया गया है।

इससे संबंधित अन्य तथ्य:

- **मनोचिकित्सक वाटवानी** ने भारत की सड़कों एवं गलियों में जीवन यापन करने वाले **मानसिक रूप से बीमार लोगों के उद्धार** के लिए अपना जीवन समर्पित किया है। ऐसे लोगों की संख्या लगभग 400,000 है। इन्होंने ऐसे लोगों को 'श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन' के माध्यम से उपचार और आश्रय प्रदान किया है।
- **सोनम वांगचुक** को सुदूर उत्तरी भारत के लद्दाख क्षेत्र में 'लर्निंग सिस्टम' में उनके विशिष्ट व्यवस्थित, सहयोग आधारित और समुदाय संचालित सुधारों के लिए पहचान प्राप्त हुई है। उन्होंने इसकी सहायता से **लद्दाख क्षेत्र के युवाओं के जीवन के अवसरों में सुधार किया है** तथा आर्थिक प्रगति के लिए रचनात्मक रूप से विज्ञान और संस्कृति के द्वारा स्थानीय समाज के सभी क्षेत्रों में रचनात्मक भागीदारी की है। इस प्रकार उन्होंने विश्व में अल्पसंख्यक लोगों के समक्ष एक उदाहरण प्रस्तुत किया है।

मैग्सेसे पुरस्कार:

- मैग्सेसे पुरस्कार को **एशिया के नोबल पुरस्कार** के रूप में भी जाना जाता है।
- 1957 में स्थापित, रेमन मैग्सेसे पुरस्कार एशिया का सर्वोच्च सम्मान है।
- यह फिलीपीन्स के तीसरे राष्ट्रपति, रेमन मैग्सेसे की स्मृति में प्रदान किया जाता है। उन्हीं के नाम पर इस पुरस्कार का नाम रखा गया है।

11.8. फिलिप कोटलर प्रेसिडेंशियल अवार्ड

(Philip Kotler Presidential Award)

- हाल ही में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने प्रथम **फिलिप कोटलर प्रेसिडेंशियल अवार्ड** प्राप्त किया।
- **आधुनिक विपणन के जनक फिलिप कोटलर,** नॉर्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी के केलॉग स्कूल ऑफ मैनेजमेंट में मार्केटिंग के प्रोफेसर हैं। इस अवार्ड का उद्देश्य मार्केटिंग और प्रबंधन के क्षेत्र में महारत प्राप्त करने वाले को सम्मानित करना है। यह पुरस्कार तीन आधार रेखा **पीपुल, प्रॉफिट और प्लेनेट** पर केन्द्रित है। यह पुरस्कार प्रत्येक वर्ष किसी देश के नेता को प्रदान किया जाएगा।

11.9. आंध्र प्रदेश और तेलंगाना के राजकीय चिन्ह

(State Symbols Of Andhra Pradesh And Telangana)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना ने अपने राजकीय पशु, वृक्ष, पुष्प और पक्षी की घोषणा की है।

अन्य संबंधित तथ्य

- **आंध्र प्रदेश सरकार के आदेश द्वारा अधिसूचित**
  - **राजकीय पशु- ब्लैक बक** जिसे कृष्ण जिंका के नाम से भी जाना जाता है।
  - **राजकीय पक्षी- रोज रिंग पैराकीट** जिसे राम चिलुका के नाम से भी जाना जाता है।
  - **राजकीय वृक्ष- नीम (वेपा चेट्टू)**
  - **राजकीय पुष्प- चमेली (माले पुवु)**
- तेलंगाना सरकार द्वारा अधिसूचित-
  - राजकीय पक्षी- **पलापित्ता (ब्लू जे)** को ही राजकीय पक्षी बनाए रखा गया है।
  - **राजकीय पशु- जिंका (हिरण)**
  - **राजकीय वृक्ष- जम्मी चेट्टू**
  - **राजकीय पुष्प- तांगिडी पुवु**।

सम्बन्धित सुर्खियां

- हाल ही में **रानी अनानास** को **त्रिपुरा का राजकीय फल** घोषित किया गया है.
- इसे 2015 में भौगोलिक संकेतक (GI) टैग प्राप्त हुआ था।

VISION IAS

11.10. बाबाबूदन स्वामी

(Bababudan Swami)

कर्नाटक सरकार ने चिकमगलूर के निकट **श्री गुरु दत्तात्रेय बाबाबूदन स्वामी दरगाह** को पूरी तरह से एक हिंदू पूजा स्थल घोषित करने की मांग का विरोध किया है।

अन्य सम्बंधित तथ्य

- **बाबा बूदनगिरि तीर्थस्थान** - इस तीर्थस्थान का नाम सूफी संत **बाबा बूदन** के नाम पर रखा गया है जो मुसलमानों और हिंदुओं दोनों के लिए श्रद्धेय हैं।
- ऐसा प्रतीत होता है कि इसका उद्भव 11वीं शताब्दी के सूफी संत, दादा हयात (अब्दुल अजीज मक्की); 17वीं शताब्दी के सूफी संत, बाबा बूदन (इन्हें भारत में कॉफी लाने का श्रेय दिया जाता है); तथा **दत्तात्रेय,** शिव (या ब्रह्मा, शिव और विष्णु) के एक अवतार के प्रति लोगों के श्रद्धाभाव के सम्मिलन के कारण हुआ था।

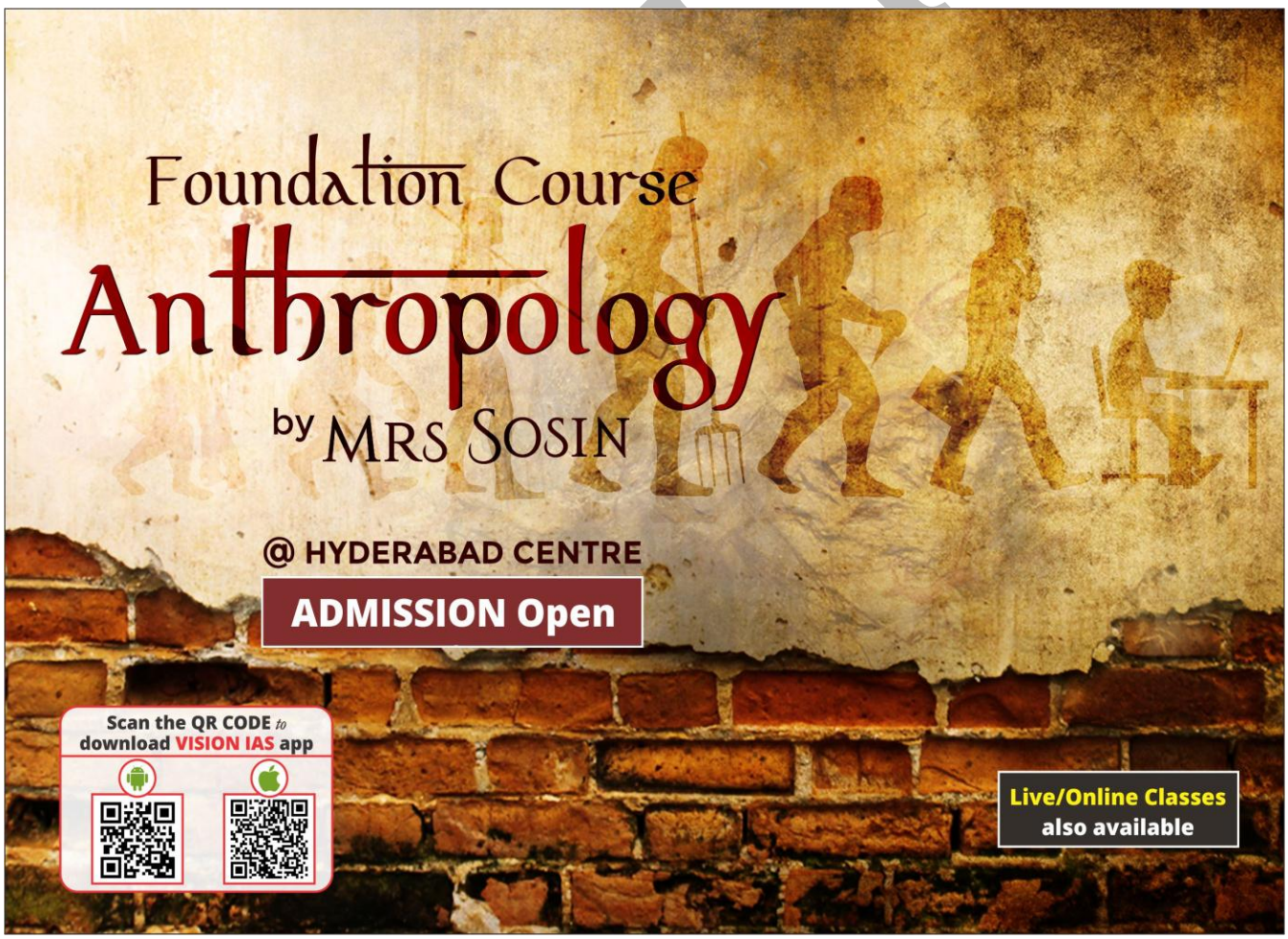

Copyright © by Vision IAS

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS.